Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंत और कालाकांकर

डॉ. ऋचा द्विवेदी

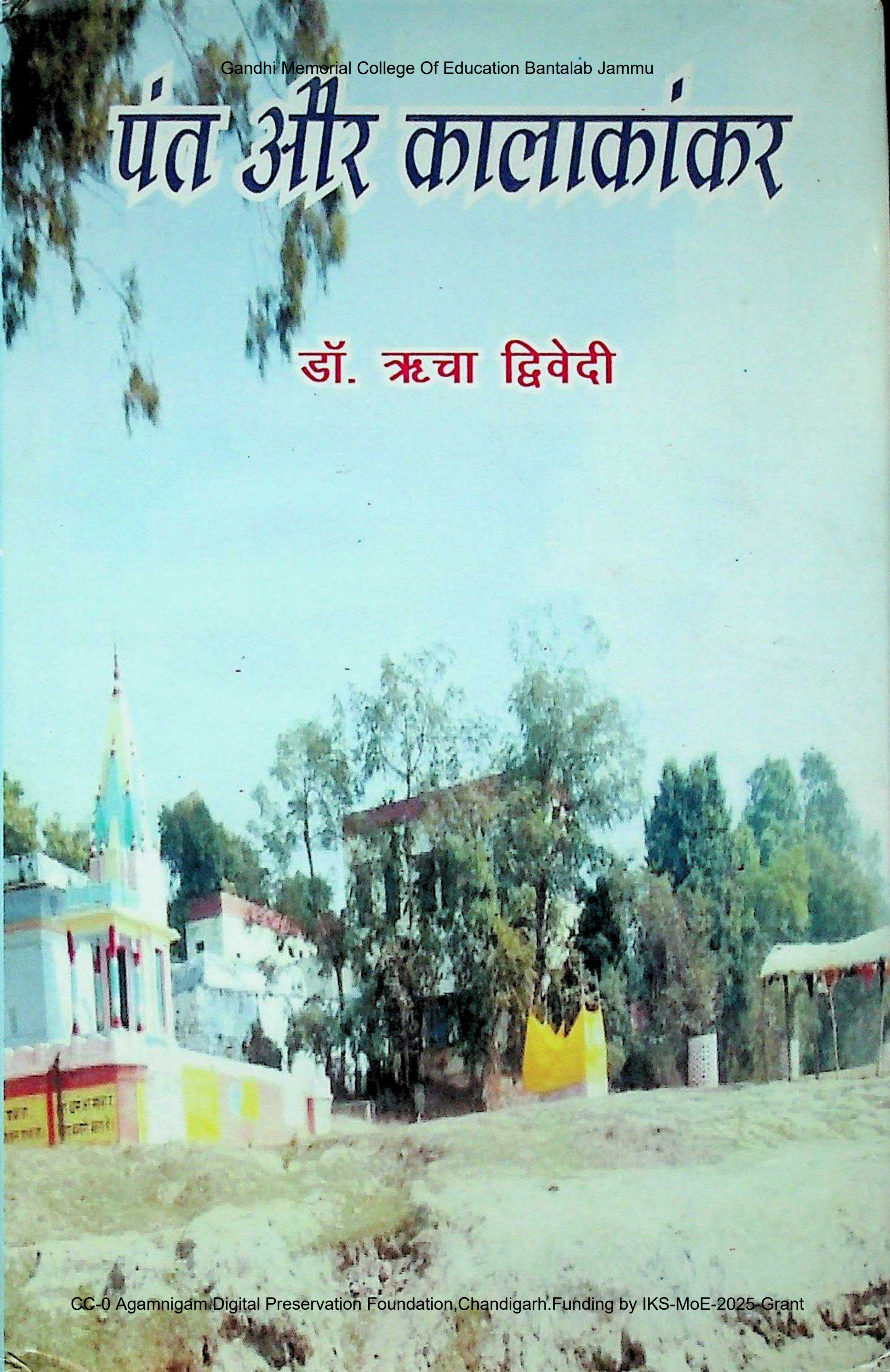

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. ऋषा द्विवेदी की यह डूबकर लिखी गई कृति है। एक तरह से पंत जी के काव्य संसार और रचना भूमि से लेखिका के मन में जो रस-बोध उदित हुआ या अनुभूति की जो वल्लरी फैली वह वल्लरी ही तोरणद्वार पर लटके वंदनवार की तरह पाठकों के मन में पंत जी के काव्य जगत् में प्रवेश करने का आमंत्रण देती है। विशेषता यह है कि रम्य अध्ययन होने के बाद भी लेखिका की दृष्टि ने मूल कथ्य को कहीं भी ओझल नहीं होने दिया है।

जो पाठक पंत जी की रचनाभूमि को नापना नहीं चाहते उन्हें इस पुस्तक में अमूल्य धरोहर प्राप्त हो सकती है। इस पुस्तक में पंत जी की रचनाभूमि के अमित विस्तार को अंजलि-पुट के मित्त-विस्तार में समेटने का प्रयास किया गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदरणीय अग्निशेखर

जी को सादर भेंट,

[signature]

29/04/2022

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc No. 4662
Dated ...

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंत और कालाकांकर

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंत और कालाकांकर

डॉ. ऋचा द्विवेदी

साहित्य सहकार प्रकाशन
दिल्ली-110032

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISBN : 978-81-950683-7-1

© : डॉ. ऋचा द्विवेदी

मूल्य : 395 रुपये

प्रथम संस्करण : 2021

प्रकाशक : साहित्य सहकार प्रकाशन
29/62, लेन नं. 11, विश्वास नगर,
दिल्ली-110032
मो. : 09873072324
Email : sahityasahakarprakashan@gmail.com

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर्स एंड प्रिंटर्स, ट्रोनिका सिटी, गाजियाबाद

PANT AUR KALAKANKER
by Dr. Richa Dwivedi
Price : Rs. 395.00

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूमिका

बांसों का झुरमुट
संध्या का झुटपुट
हैं चहक रहीं चिड़ियाँ
टी-वी-टी-टुट्-टुट्!!

पता नहीं क्या था, जो मेरे मन को खींच रहा था। जब से संतोष तिवारी भैया की फेसबुक पर कालाकांकर राजभवन की तस्वीर देखी। मन वहीं अटक रहा था बार-बार।

ओह! ये तो प्रकृति के चितेरे की रचना-भूमि है। बस तुरंत फोन किया, "भैया मुझे भी जाना है कालाकांकर, व्यवस्था कीजिए।"

इसके बाद संतोष भैया ने मनीष जी (जो कि राजकुमारी जी के पारिवारिक सहयोगी हैं) से बात करके मेरे कालाकांकर रियासत की राजकुमारी रत्ना जी से मुलाकात की व्यवस्था कराई। मैंने 27 दिसम्बर, 2020 की सुबह 7 बजे कालाकांकर के लिए अपने निवास स्थान प्रयागराज से प्रस्थान किया और सुबह 9.30 बजे राजभवन पहुँच गई। सबसे पहले मनीष जी के घर गए। जहाँ उनकी पत्नी से आत्मीयता से भेंट हुई। वह औरैया की हैं और मैं जिला जालौन की यह जानकर थोड़ा अपनापा लगना स्वाभाविक है। उनके द्वारा आदर-सत्कार के साथ नाश्ता करके, मनीष जी के साथ 'नक्षत्र' की ओर चल पड़े।

नक्षत्र को भी जैसे पता था कि मैं आ रही हूँ। उन रास्तों पर चलकर महसूस हुआ पंत जी भी कभी इन्हीं रास्तों पर चलकर नक्षत्र तक पहुँचते होंगे। इन्हीं सीढ़ियों पर चढ़कर वह उस स्थल पर पहुँचते होंगे। मैं जैसे एक-एक पल को आत्मसात् कर लेना चाहती थी।

मन में बहुत कुछ चल रहा था कि कैसा होगा वह स्थान जो सुकुमार कवि से 'चिदम्बरा, लोकायतन' जैसी कृतियाँ लिखने का प्रेरक बना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कैसी होगी उसकी छटा, गंगा का अविरल प्रवाह आज भी साक्षी है उस कवि समय का, उसके हृदय में आज भी कवि का स्मरण है। गंगा की लोललहरियाँ उसे आज भी याद करके सिहर उठती होंगी। यादों का एक वितान तन जाता होगा।

प्रकृति धाम यह तृण-तृण, कण-कण यहाँ प्रफुल्लित जीवित,
यहाँ अकेला मानव हीरे, चिर विषण्ण, जीवन-मृत।।

मानव तुम सबसे सुंदरतम्, क्या ही कवि कल्पना रही होगी। कवि की भाव भूमि, सृजन भूमि कालाकांकर, उसका प्राकृतिक परिवेश, 'नक्षत्र' जो कि एक टीले पर स्थित है, वह पावन स्थान जहाँ कवि ने अपने जीवन का सबसे बहुमूल्य समय व्यतीत किया है, जहाँ उसका यौवन प्रौढ़ हुआ। 'नक्षत्र' उस कवि के जीवन का पल प्रति पल का गवाह है, आज भी खामोशी से उसकी कहानी कह रहा है। कुँवर सुरेश सिंह का हिंदी प्रेम पंत जी को कालाकांकर ले आया, और उनके ही संयोग से पंत जी ने 'रूपाभ' पत्र का संपादन श्री नरेन्द्र शर्मा के साथ किया। शान्ति जोशी, बच्चन, नरेन्द्र शर्मा, महादेवी वर्मा, निराला जी, सोहनलाल द्विवेदी, रामचंद्र टण्डन, सियाराम शरण गुप्त, मैथिली शरण गुप्त, जैनेन्द्र कुमार, डॉ. नगेंद्र आदि विभिन्न विभूतियाँ वहाँ प्राय: आया-जाया करती थीं।

गुंजन, ग्राम्या, ज्योत्स्ना, युगांत और युगवाणी जैसी अमर कृतियाँ कालाकांकर के आसपास फैली वनश्री और प्राकृतिक परिवेश की ही देन हैं। उनका 'लोकायतन' काव्य भी अपनी लोक सम्पृक्त पृष्ठभूमि के लिए कालाकांकर का उपकृत है।

नक्षत्र दर्शन के बाद हम राजभवन पहुँचे। वहाँ आदरणीय राजकुमारी रत्ना जी ने हमसे बहुत ही आत्मीयतापूर्ण भेंट की। आज आप हमारी मेहमान हैं, कहकर मेहमान नवाजी में उन्होंने कोई कृपणता नहीं दिखाई। मनीष जी ने जब उन्हें बताया कि 'मैं' लेखिका भी हूँ और पंत जी पर एक शोध हेतु यहाँ आई हूँ। तो वह बहुत प्रसन्न हुईं और साथ ही आमंत्रण भी दिया कि जब भी आपका मन करे आप आइए और यहाँ रहकर अपना लेखन कार्य कीजिए। एक लेखिका के लिए इससे सुखद अनुभूति और क्या हो सकती है भला।

पश्चात्, उन्होंने हमसे नौका विहार का आग्रह किया और मुझे फिर अपना मेहमान कहकर नाविक को मुझे मुद्रा नहीं देने दी। कहानी में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पढ़ी हुई राजकुमारी से अलग जैसे मेरे सामने कोई मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत जीती-जागती मिसाल के तौर पर खड़ी हैं। इतने स्नेहिल भाव की मैंने कामना नहीं की थी, यह तो उससे भी बढ़कर मेरे लिए प्रीतिकर हो गई। मेरे हृदय में उनका सम्मान बढ़ता ही गया।

नौका विहार को चलते हुए, मेरे अंतस में फिर पंत जी साकार हो उठे। और नक्षत्र फिर मुझसे बात करने लगा। गंगा में प्रासाद और नक्षत्र की परछाईं निरंतर पड़ रही थी। गंगा की लहरें जैसे उसके प्रेम में पगी उसके गीत गा रही हों।

नक्षत्र जैसे साकार हो कवि से मेरा परिचय कराते हुए कहता, जब कभी उसका मन करता तो आधी रात में भी जाह्नवी की ओर चल देता, और नौका विहार का आनंद लेता हुआ छंद रचता जाता। जैसे वह जाह्नवी को साक्षात् जी रहा हो उस नीरवता में-

सैकत शैय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म विरल,
लेटी है श्रान्त, क्लान्त, निश्चल!
तापस बाला गंगा निर्मल, शशि-मुख से दीपित मृदु करतल,
लहरें उर पर कोमल कुन्तल!
गोरे अंगों पर सिहर सिहर, लहराता तार तरल सुन्दर,
चंचल अंचल सा नीलाम्बर!
साड़ी की सिकुड़न सी जिस पर, शशि की रेशमी विभा से भर,
सिमटी हैं वर्तुल, मृदुल, लहर!

जैसे कह रहा हो, मैं 'नक्षत्र' हूँ, हाँ, वही नक्षत्र जहाँ वह सुकुमार कवि रहता था। मैं गवाह हूँ, उसके जिए हुए एक-एक पल का, उसके अकेलेपन का साथी भी 'मैं' ही हूँ। उसके असह्य अभावों, रिक्तता और संघर्ष के जीवन को भी मैंने जिया है। उसके प्रेम से आप्लावित हृदय को भी मैंने जिया है। क्या-क्या बताऊँ उसके बारे में...याद तो मुझे सब है, मेरी आत्मा में समाया हुआ है वह, या कहूँ मुझमें रूह बनकर समा गया है बस गया है वो।

मुझे वह दिन भी याद है, जब पहली बार अपने मित्र सुरेश जी के साथ वह यहाँ रहने आया और फिर उसने यहाँ से जाने का निर्णय भी ले लिया अचानक! बिना कुछ कहे, अनबोले बोल मुझे परेशान कर रहे थे, मेरी छाती फटी पड़ रही थी, जब वह हमेशा के लिए यहाँ से जा रहा था। उसकी उस रात की पीड़ा का मैं प्रत्यक्ष गवाह हूँ। पूरी रात,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाँ, पूरी रात वह सोया कहाँ था। उसकी बेचैनी मुझे भी बेचैन कर रही थी। मैं भी हैरान था, परेशान था। उसका साथ देने के लिए मैं भी जागता रहा था 'उस रात', बड़ी लम्बी हो गई थी वह रात उसके लिए, और मेरे लिए बहुत छोटी। फिर कभी भी वो नहीं आया यहाँ। और...मैं...आज भी उसकी प्रतीक्षा में खड़ा हुआ हूँ। सीढ़ियाँ जो उसे मुझ तक लाती थीं....!!!

आज अनायास ही यह पंक्तियाँ मेरे मानस में कौंध रही हैं–

आता मौन प्रभात अकेला, संध्या भरी उदासी,
यहाँ घूमती दोपहरी में स्वप्नों की छाया सी।।

इसके बाद राजकुमारी रत्ना जी के साथ दोपहर का भोजन किया और राजभवन परिसर को देखकर निहाल होती रही। फिर शाम की चाय के बाद मैंने वापसी की इच्छा व्यक्त की। अगली बार आने का वादा करके, उनसे राम दरबार की स्मृति चिह्न भेंट स्वरूप लेकर, हृदय में बहुत-सी अनमोल स्मृतियों को सहेजकर, मैंने यहाँ से शाम 5 बजे प्रस्थान किया।

आदरणीया राजकुमारी जी, संतोष भैया और मनीष जी का विशेष आभार, जिनके बिना यह सब असंभव था।

–ऋचा द्विवेदी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषय-सूची

पंत और कालाकांकर	11
पत्रों में व्यक्त पंत का व्यक्तित्व तथा अन्य संदर्भ	21
पंत : पत्रकारिता तथा अन्य संदर्भ	52
पंत के पत्रों की भाषा	77
पंत की रचनाएँ और उनकी रचना-भूमि कालाकांकर	86
उपसंहार	108
संदर्भ-ग्रंथ सूची	112

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंत और कालाकांकर

महाकवि पंत के काव्य और व्यक्तित्व के विकास में दो परिवेशों का बहुत महत्त्व रहा है। एक उनकी जन्मभूमि कौशानी के आस-पास फैली पहाड़ी प्रकृति और परिवेश का दूसरा मैदानी प्रकृति कालाकांकर का। पहाड़ी परिवेश का उन पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था किंतु एक पहाड़ी परिवेश में जन्मे बढ़े कवि पर मैदानी इलाके का क्या प्रभाव पड़ा यह विशेष छानबीन का विषय है। आश्चर्य तो इसलिए नहीं है कि व्यक्ति का मन परिवेश और प्रकृति से प्रभावित हुए बिना रह नहीं सकता। डॉ. रामविलास शर्मा ने इसी बात को ध्यान में रखकर ठीक लिखा है–"पंत जी के संदर्भ में हिमालय की उपत्यकाओं का उल्लेख बहुत हुआ है, पर पंत जी मैदानी कवि हैं और कालाकांकर से उनके यथेष्ठ कृतित्व का गहरा संबंध है। यह सिद्ध करना अनावश्यक है।"[1]

पंत और कालाकांकर का संबंध प्रत्यक्ष रूप से एक दशक तक रहा। वे 1931 में वहां पहुंचे और 1940 तक वहां रहे। उसके बाद वे स्थाई रूप से प्रयाग में रहने लगे किंतु बीच-बीच में कालाकांकर जाते रहते थे। कालाकांकर के परिवेश, वहां के जन, वहां से मिली प्रेरणाओं का विवेचन किये बिना पंत के व्यक्तित्व तथा उनके काव्य को समझा नहीं जा सकता। पंत को कालाकांकर हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार कुंवर सुरेश सिंह उधर ले गए। कुंवर सुरेश सिंह और उनकी पत्नी प्रकाशवती के स्नेह पाश में पंत आजीवन बंधे रहे। इस स्नेह की अभिव्यक्ति का साक्ष्य पंत और कुंवर सुरेश सिंह के बीच हुआ पत्र-व्यवहार है। यह पत्र-व्यवहार 1930 से लेकर 1977 की दीर्घ व्यापी कालावधि में फैला हुआ है। प्रस्तुत कृति में पंत के इन्हीं पत्रों को आधार बना कर उनके व्यक्ति, उनके चिंतन, उनकी गद्य शैली तथा कालाकांकर के निवास काल में लिखी गई उनकी रचनाओं के बदलाव और उन पर कालाकांकर के परिवेश की छाप का उल्लेख किया गया है।

कालाकांकर का राजवंश एक शताब्दी से साहित्यकारों का संरक्षक, आश्रयदाता तथा देश सेवक रहा है। नवनीत के संपादक पं. गिरीश शंकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
द्विवेदी ने लिखा है। कालाकांकर का राजवंश अपनी राष्ट्रीयता और साहित्य सेवा के लिए विख्यात है। उसमें जन्मे सभी राजपुरुष अपनी राष्ट्रीयता, जनसेवा तथा साहित्य की आराधना के लिए बहुश्रुत हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उनकी गरिमा सर्वोपरि है।[2]

कालाकांकर नरेशों में राजा रामपाल सिंह उनके पुत्र राजा रमेश सिंह तथा उनके पुत्र राजा अवधेशसिंह तथा सुरेश सिंह न अपने पूज्य पिता द्वारा प्रवर्तित साहित्य सेवा की परम्परा को अक्षुण्ण ही नहीं रखा वरन् साहित्य सेवियों को सदा संरक्षण दिया।

राजा रामपाल सिंह के बारे में लिखा गया है–आप जहां अंग्रेजी के अच्छे लेखक पत्रकार थे वहां हिंदी को आगे बढ़ाने में भी आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा था। आपने 1883 में इंग्लैंड में रहते समय अंग्रेजी के 'इंडियन यूनियन' के साथ 'हिंदोस्थान' नाम से हिंदी का भी एक पत्र प्रकाशित किया था। भारत लौट कर इसी पत्र को कालाकांकर से प्रकाशित करके आपने अपने हिंदी प्रेम का परिचय दिया। इसे उत्तर प्रदेश का प्रथम हिंदी दैनिक पत्र माना जाता है। इसका पहला संपादक आपने महामना मदनमोहन मालवीय को बनाया था। मालवीय जी ने इसका संपादन लगातार दो वर्ष तक किया था। मालवीय जी के बाद 'दैनिक हिंदोस्थान' के संपादन में विख्यात पत्रकार श्री बालमुकुन्द गुप्त, गोपाल राय गहमरी तथा अमृतलाल चक्रवर्ती जैसे साहित्यकारों ने सहयोग दिया था।[3]

गोपाल राय गहमरी के बारे में लिखा गया है कि आप प्रतापगढ़ कालाकांकर के राजा रामपाल सिंह के आमंत्रण पर हिंदोस्थान के संपादक होकर चले गए। कालाकांकर में राजा साहब ने हिंदी का जो वातावरण बना रखा था उसके कारण आपका साहित्य प्रेम और बढ़ा। आप वहां की 'नवरत्न सभा' में सम्मिलित होते थे। नवरत्न सभा के सदस्य पं. प्रतापनारायण मिश्र, पं. राधारमण चौबे, गुलाब चन्द और बाबू बालमुकुंद गुप्त आदि विख्यात साहित्यकार थे। ऐसे साहित्यिक वातावरण में सुयोग्य लेखकों और कवियों से प्रेरणा पाकर आपका हिंदी प्रेम सुपुष्ट हुआ और आपने यहीं बभ्रुवाहन, देश दशा और विद्याविनोद आदि नाटकों के अतिरिक्त सोभद्रा नामक उपन्यास भी लिखा।[4]

राजा रामपाल सिंह ने कालाकांकर हिन्दोस्थान नामक अखबार ही घाटा सहकर नहीं निकाला आपने फर्रुखाबाद बचनेश मिश्र जैसे साहित्यकार को अपने यहां रखा और उन्हें आश्रम दिया।

राजा रामपाल सिंह के पुत्र राजा रमेश सिंह के बारे में लिखा गया है कि "आपने अपने पिता की परंपरा को जीवित रखने की दृष्टि से कालाकांकर से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सम्राट नामक पत्र का प्रकाशन किया। आपके कार्यकाल में कालाकांकर राज्य में कवियों और कवि सम्मेलन की बहुत धूम रही थी। आप स्वयं भी उस समय के ब्रजभाषा के अच्छे कवियों में गिने जाते थे।''[5]

राजा रमेश सिंह के तीन पुत्र हुए—राजा अवधेश सिंह, राजा ब्रजेश सिंह और राजा सुरेश सिंह। इनमें राजा अवधेश सिंह बड़े देश-प्रेमी थे और अपने पिता के दिवंगत होते ही कालाकांकर के आप ही राजा हुए किंतु आपका हृदय देश सेवा से छलछलाता रहता था। आप गांधी जी से प्रभावित थे। आपने गांधी जी के विचारों और आदर्शों के प्रचार के लिए कालाकांकर के 'दरिद्रनारायण' नामक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया।

जिन दिनों उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद लखनऊ से प्रकाशित होने वाली साहित्यिक पत्रिका 'माधुरी' का संपादन करते थे तब आपने उनसे राजा रईसों के नाम एक अपील भी लिखवाई थी, जिसके प्रारूप को आपने प्रेमचंद जी के साथ मसूरी जाकर पं. मोतीलाल नेहरू से सम्पुष्ट कराया था। राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति आपका जो अनन्य अनुराग था उसका ही यह सुपरिणाम निकला कि आपके छोटे भाई कुंवर सिंह हिंदी में 'जीव जंतुओं' पर एक विख्यात लेखक बन गये। कालाकांकर से उन्होंने 'कुमार' जैसा पत्र निकाला और 'वानर' जैसे बालोपयोगी पत्र का भी संपादन किया। कुंवर सुरेश सिंह का हिंदी प्रेम यहां तक उमड़ा कि वे हिंदी के छायावादी काव्य के अनन्य उन्नायक कविवर सुमित्रानन्दन पंत को कालाकांकर ही ले गए और वहां पर उनके सहयोग से पंत जी ने 'रूपाभ' नामक साहित्यिक पत्र का संपादन श्री नरेंद्र शर्मा के साथ किया था।[6]

कालाकांकर में वहां के राजाओं के हिंदी प्रेम के कारण जो साहित्यिक वातावरण बना उससे खिंच कर गोपालराय गहमरी, बाल मुकुंद गुप्त, वचनेश जी आदि पुराने साहित्यकार वहां जाते और आश्रय पाते रहे। द्विवेदी युग के साहित्यकार तथा कवि श्री मैथिलीशरण, श्री सियारामशरण गुप्त, पं. रामनरेश त्रिपाठी, हरिऔध जी, रत्नाकर जी, अमृतलाल नागर और नरेंद्र शर्मा भी वहां से जुड़ गये। महाकवि पंत तो वहां के स्थायी व्यक्ति भी हो गये। साहित्यकारों के इस जुड़ाव का श्रेय कालाकांकर के प्राकृतिक परिवेश और वहां के एकान्त को भी दिया जा सकता है। कालाकांकर के इस महत्त्व पर अलग-अलग लोगों ने प्रकाश डाला है।

कुंवर श्री सुरेश सिंह ने कालाकांकर के प्राकृतिक परिवेश पर प्रकाश डालते हुए उन कारणों की छानबीन की है जिनके चलते वहां कवि पंत दस वर्ष

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रह गये और वहां के परिवेश को अपने मन में अंतिम समय तक बसाये रहे।

कालाकांकर उत्तर प्रदेश का गंगातट पर बसा हुआ एक छोटा-सा ग्राम है जिसे प्रकृति ने सुंदरता देने में कृपणता नहीं दिखायी। इसे जहां दक्षिण और पश्चिम की ओर से गंगा स्नेह से सीने लगाये हुए है वहीं हमारे पूर्वजों ने एक नहर उत्तर की ओर से निकाल कर पूर्व की ओर फिर उसी में गिरा दी है जिसके कारण वर्षा काल में यह चारों ओर से गंगाजल से घिर कर एक टापू-सा हो जाता है। यह नहर जो शहर पनाह की आवश्यकता पूर्ति के लिए बनायी गयी थी काफी गहरी है और उसके दोनों ओर के फसीले या टीले पलाश वृक्षों से ढंके थे। और बसन्त ऋतु के आगमन के समय जब यह पलाश वन अपना पत्रों का वस्त्राभरण गिराकर टेसू के केसरिया फूलों से लद जाता था तो ऐसा लगता था कि जैसे सारे पलाश वन में आग-सी लग गयी हो।[7]

कालाकांकर के प्राकृतिक परिवेश के संबंध में कुंवर सुरेश सिंह की उपर्युक्त टिप्पणी उचित ही है। अगर वहां ऐसा वातावरण न होता तो पहाड़ी परिवेश में पले एकान्त सेवन के अभ्यस्त सुमित्रानंदन पंत कालाकांकर में कैसे रहते। पं. रामनरेश त्रिपाठी ने अपने एक पत्र में लिखा है—"कालाकांकर मेरे लिए सबसे अनुकूल स्थान होगा एक तो गंगा जी का तट और प्रतिदिन का स्नान और दूसरी ओर श्रीमती जी का आतिथ्य और तीसरे एक खास तरह के वातावरण के अभ्यासी शिष्टपुरुषों का सत्संग, इतने प्रलोभन और कहीं नहीं मिल सकते।"[8]

नरेंद्र शर्मा, शांति जोशी, बच्चन तथा स्वयं पंत ने कालाकांकर के उस परिवेश की आत्मीयता की शब्दों में चर्चा की है। शांतिप्रिय द्विवेदी ने लिखा है "मैं भी पंत जी से मिलने के लिए कालाकांकर जाने लगा। एक ऊंचे टीले पर स्थित छोटे से सुरुचिपूर्ण कॉटेज में वे अग-जग से तटस्थ दर्शक की तरह ऐसे ही निवास करते थे जैसे पृथ्वी के ऊपर कोई नक्षत्र। पंत जी ने उस कॉटेज का नाम भी 'नक्षत्र' रख दिया था। उसके नीचे दूर तक प्रकृति का हरितमर्मरित और खगकुल कूजित कान्तार फैला हुआ था। 'नक्षत्र' के बांये ठीक बगल सैकड़ों फुट नीचे एक खड्ड पाताल लोक को छू रहा था जैसे आकाश पृथ्वी को। मुझे वहां का प्राकृतिक वातावरण इतना सुहावना लगता था कि वह खड्ड भी प्रकृति के हृदय की गहराई का स्नेह-क्रोड जान पड़ता था।"[9]

गीतकार नरेंद्र शर्मा 'रूपाभ' पत्र में सहयोग देने कालाकांकर गये थे। पंत जी प्रयाग में भी नरेंद्र शर्मा के साथ रहते थे। उन्होंने कालाकांकर और पंत के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
संबंध में लिखा है कि वहां पंत जी का निवास-स्थान 'नक्षत्र' बहुत ऊंचे टीले पर बना हुआ था। साफ-सुथरा वह छोटा-सा मकान डाक-बंगला जैसा लगता था। आसपास और दूर-दूर तक घोर जंगल था। जिसने पंत जी को रहते वहां देखा है वह पंत जी के धैर्य और अभय की प्रशंसा किये बिना न रहेगा। सांप, बंदर और घुग्घु जैसे प्राणियों की वहां बहुतायत थी और मनुष्यों की वहां कमी थी। श्री पंत ने प्रकृति का बहुत गहराई से अनुशीलन किया था इसलिए उन्होंने लिखा कि कुंवर सुरेश सिंह पंत जी को अपनी हवेली में ही टिकाना चाहते थे। किंतु पंत जी एकांत प्रेमी थे, इसलिए गांव से दूर एकान्त टीले पर रहना ही पसंद करते थे।[10]

कालाकांकर में पंत जी का रहना कई तरह से लाभ दायक हुआ। वे 1929-30 की लंबी बीमारी के बाद वहां के परिवेश में रहकर पूर्ण स्वस्थ हो गये। अवध के ग्राम्य जीवन को उन्हें निकटता से देखने का अवसर मिला। अध्ययन, मनन और लेखन के लिए समय और अवसर प्राप्त हुए।[11] वहां रहकर पंत जी ने प्रतिकूल वातावरण और भिन्न रुचियों के व्यक्तियों के साथ रहना सीखा। वे और अधिक आत्मत्व हो गये। उनमें तटस्थता की वृत्ति और गहराई।

पंत के कालाकांकर आवास काल का मूल्यांकन करते हुए महाकवि बच्चन ने लिखा है : युग वाणी और ग्राम्या को ध्यानपूर्वक पढ़ने से यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि कालाकांकर में रहकर पंत जी ने कितना देखा था, कितना अनुभव किया था, कितना चिंतन और मनन किया था जिसको हमने पलायन समझा था, वह उनकी सघन साधना का समय था। अपनी कॉटेज 'नक्षत्र' को सम्बोधित कर वे सत्य ही कहते हैं—

कितनी आशाएं मनोल्लास
संकल्प महत् उच्चाभिलाष।
तुझमें प्रतिक्षण करते निवास
है भीम श्रेय साधन प्रयास ॥[12]

कालाकांकर का पंत पर क्या प्रभाव पड़ा है और पंत का कालाकांकर वहां के निवासियों, वहां के वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ा इसका आकलन कुंवर सुरेश सिंह ने किया है : गंगातट पर बसा हुआ हमारा यह गांव छोटा होकर भी भाग्य में सचमुच में बहुत बड़ा है, नहीं तो सर्वश्री पंत जी, प्रतापनारायण मिश्र, गोपाल राय गहमरी जैसी साहित्यिक विभूतियों के रहने तथा विश्व वैद्य बापू और महामना मालवीय जैसे तपस्वियों के पवित्र चरण पड़ने से यह एक साहित्यिक तीर्थ न बन जाता।[13]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कालाकांकर के आसपास फैली वनश्री और प्राकृतिक परिवेश पंत जी के स्वभाव के बहुत अनुकूल पड़ा और वे यहां 1941 तक रहे। यहां रहकर उन्होंने 'गुंजन', 'ग्राम्या', 'ज्योत्स्ना', 'युगान्त' और 'युगवाणी' आदि अमर ग्रन्थों की रचना की। उस समय के साहित्यिक वातावरण का उल्लेख करते हुए कुंवर सुरेश सिंह ने लिखा है—पंत जी जब कालाकांकर आये तब मेरे पूज्य भ्राता श्री राजा अवध नरेश जीवित थे। इसलिए उस समय उन्हें किसी प्रकार की चिंता नहीं थी। पंत जी और वे सदा सैर-सपाटे और साहित्य-चर्चा में लीन रहते थे। पंत जी के रहने के कारण कोई न कोई साहित्यकार बाहर से निरन्तर पधारता रहता था। निराला जी, सोहनलाल द्विवेदी, नरेंद्र जी, रामचंद्र टंडन, सियारामशरण गुप्त, निर्मल जी, शांतिप्रिय जी आदि तो प्रायः आते रहते थे। किंतु कभी-कभी मैथिलीशरण गुप्त, श्रीमती महादेवी वर्मा, जैनेंद्र कुमार तथा डॉ. नगेंद्र जी कालाकांकर आ जाते थे।[14]

कालाकांकर में पंत जी सुरेश दंपत्ति से ऐसे घुल-मिल गये थे कि उनका कोई भी काम बिना पंत के नहीं होता था। पंत जी दो-चार दिन के लिए अगर कहीं चले जाते थे तो वे लोग बहुत व्याकुल हो उठते थे। गांव के हर उत्सव, पर्व में पंत जी भाग लेते थे। होली के अवसर पर 'रसिक' अखबार निकलता था जिसमें गांव के सब लोगों पर कुछ न कुछ छींटे रहा करते थे। शाम को फैंसी ड्रैस होती थी जिसमें पंत जी भी भाग लते थे। एक बार पंत जी के साथ निराला ने भी भाग लिया था। इसी समय 'रसिक' नाम का अखबार पढ़ा जाता था। जब सुरेश सिंह ने कुमार नामक पत्र निकाला तो पंत जी ने उसके लिए उसके मुगुल नामों से कई बालोपयोगी रचनाएं लिखीं। कुंवर सुरेश सिंह ने लिखा है—उनके साथ मेरे जीवन के दस वर्ष कितने आनंद से बीते उसकी तुलना हमारे जीवन के सारे सुखों से भी नहीं हो सकेगी। उन्होंने लिखा है कि मुझे जीवन में काफी बड़े लोगों के संपर्क में आने का अवसर मिला किंतु पंत की तरह कोमल और सरल स्वभाव का व्यक्ति मेरी दृष्टि में दूसरा नहीं आया। ऊपर संकेत किया गया है कि कुंवर सुरेश सिंह और उनके परिवारीजनों पर ही नहीं कालाकांकर के निवासियों पर भी पंत का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा था। कुंवर सुरेश सिंह ने लिखा है : उन्होंने यहां जो दस वर्ष बिताये हैं वे मेरे ही लिए नहीं कालाकांकर के समस्त निवासियों के चिरस्मरणीय रहेंगे। यहां के भावी नागरिकों को उनका 'नक्षत्र' सदियों तक प्रेरणा प्रदान करता रहेगा और कालाकांकर जिसको उन्होंने अपनी कृतियों द्वारा अमर कर दिया है उनकी स्मृति को युग-युगान्तर तक अपने हृदय में सुरक्षित रखेगा।[15]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंत के काव्य जीवन के निखार में कालाकांकर का स्मरणीय योगदान है। यहां की निवास भूमि को पंत की रचना भूमि कहा जा सकता है। अगर पंत को अवध राज्य का वह गांव देखने को न मिलता तो उनके काव्य में यथार्थ की प्रतीति नहीं आ सकती थी। उनकी गुंजन, ग्राम्या, युगवाणी, युगान्त और ज्योत्स्ना तो कालाकांकर की अनुभूतियों से प्रभावित हैं ही, उनका 'लोकायतन' काव्य भी अपनी लोक सम्पृक्त पृष्ठभूमि के लिए कालाकांकर का उपकृत है। इसलिए पंत की मनोभूमि विशेष रूप से उनकी रचना भूमि को समझने के लिए कालाकांकर के निवास की अनुभूतियों तथा उनके परिवेश को समझना अत्यंत आवश्यक है। कालाकांकर काल की अपनी स्मृतियों को लिपि-बद्ध करते हुए स्वयं कवि पंत ने लिखा है—

"अपनी अस्वस्थता के कारण विश्राम की आवश्यकता पड़ने पर मैं सन् 31 में कालाकांकर चला गया। पंत जिस प्रेरणा से गये थे वह वहां फलीभूति होती दिखायी दी। वहां के स्वच्छ, एकान्त वातावरण से पंत को सान्त्वना तथा शक्ति मिली। उनकी युवावस्था के सर्वश्रेष्ठ वर्ष वानप्रस्थ स्थिति में ज्ञान साधना में पशु-पक्षियों के साथ व्यतीत हुए। आर्थिक परिस्थितियों के अतिरिक्त पंत के अंतर में एकांत का कितना दुर्बहबोझ तथा मानसिक द्वंद्व रहा कि तारुण्य की प्रणय भावना के सुनहले विष को उन्हें चुपचाप पी जाना पड़ा। यहां उन्हें मानसिक स्वास्थ्य लाभ हुआ। उन दिनों के संघर्ष का आभास गुंजन तथा ज्योत्स्ना के रूप में मिलता है।"[16]

'युगवाणी' तथा 'ग्राम्या' की रचना कालाकांकर के निवास के दसूरे चरण में हुई। इस काल में पंत ने ग्राम-जीवन के वातावरण तथा रहन-सहन का निरीक्षण-परीक्षण अधिक तरह से किया और अपने आर्थिक राजनीतिक विचारों को सांस्कृतिक तथा काल्पनिक पृष्ठभूमि में ग्रहण कर उसके पुनर्निर्माण की संभावनाओं पर विचार किया। कालाकांकर में कवि के सौंदर्य-प्रेमी हृदय को गांवों की अत्यन्त दयनीय दुर्व्यवस्था का दृश्य देख-देख कर अनेक बार कठोर आघात भी लगे और उसका विचार जगत क्षुब्ध विचलित भी होता रहा।[17]

उस समय पंत जी के तीन काम थे—एक प्रकृति निरीक्षण, दूसरे अध्ययन तथा तीसरे ग्राम्य जीवन की विपन्नता का विश्लेषण। उस समय के अधिकांश भाग को कवि ने केवल पठन पाठन चिंतन तथा सृजन के लिए समर्पित कर दिया था। इन वर्षों में यह बौद्धिक यंत्र मात्र बन गया था। विश्व साहित्य, आधुनिक काव्य तथा पूर्व पश्चिम की प्राचीन नवीन विचार धाराओं को उसने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ग्रहण करने यथाशक्ति कोशिश की थी। पंत ने लिखा है—एकान्त अरण्य नीड़ में छिपकर इस युग में मैंने भारतीय संस्कृति में प्रविष्ट अनेकान्त विचार सरणियों का भी गंभीर मनन किया और मानव चेतना के नवीन विकास की दिशा का आभास भी मेरे मन को इसी युग में मिला।[18]

कालाकांकर के प्राकृतिक सौंदर्य का पंत के मन पर क्या प्रभाव पड़ा इस संदर्भ में कवि का कथन भी महत्त्वपूर्ण है। कालाकांकर प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से एकांत ग्राम है। गंगा का किनारा, पलाश वन, एकान्त भीटा-कालाकांकर का नौका विहार, पिकनिक, साहित्य आयोजन, भ्रमण आदि सब मेरे लिए विशेष आकर्षण थे जो एकांत अकेले कक्ष में रात-दिन लिखने-पढ़ने की एक स्वरता के भार को हल्का करने में सहायक होते थे। कालाकांकर में रहते हुए इतने दिन बीत गये और मुझे पता ही नहीं चला।[19]

पंत के जीवन में कालाकांकर निवास की अवधि का अत्यधिक महत्त्व है। उनकी रचना प्रक्रिया को बिना इस भूमि को पढ़े समझा नहीं जा सकता। पंत के अनुसार—"यह विधाता की कृपा ही रही कि मुझे कालाकांकर में रहने का अवसर मिला, वहां का प्रवास मेरी कवि प्रतिभा के विकास के लिए अत्यन्त उपयोगी रहा। वहां नहीं रहा होता तो युग जीवन का अनुभव एक प्रकार से अपूर्ण ही रहता।[20]

महाकवि पंत के कालाकांकर के निवास काल की जिन लोगों ने आलोचना की है उनमें तीक्ष्ण स्वर महाकवि बच्चन का है जिसका खंडन पंत की जीवनीकार शांति जोशी ने किया है। अपने भावद्दीप्त नक्षत्र की मधुर स्मृति पंत को तल्लीन कर देती है किंतु कालाकांकर के प्रति न जाने क्यों बच्चन जी का मन असंतोष से भरा हुआ है। संभवतः कालाकांकर के राजदरबार एवं नक्षत्र का स्वयं अनुभव होने के कारण उन्होंने यथार्थवादी कल्पना के पंख लगाकर उसे मुगलकालीन विलासिता से मंडित कर दिया है।[21]

बच्चन जी के इस संदर्भ में दो परस्पर विरोधी बयान हैं एक में उन्होंने पंत पर आक्षेप लगाया है कि पंत ने राष्ट्रीय आंदोलन के समय का ठीक उपयोग नहीं किया और दूसरे स्थान पर लिखा—'युगवाणी' और 'ग्राम्या' को ध्यानपूर्वक पढ़ने से यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि कालाकांकर में रहकर पंत जी ने कितना देखा था, कितना अनुभव किया था, कितना चिंतन और मनन किया था जिसको हमने पलायन समझा था वह उनकी गहन साधना का समय था।[22]

उनके 'नक्षत्र' पर नरेंद्र शर्मा की टिप्पणी ध्यातव्य है वहां पंत जी का निवास स्थान 'नक्षत्र' बहुत ऊंचे टीले पर बना हुआ था। आसपास और दूर-दूर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तक घोर जंगल था जिसने पंत जी को वहां रहते देखा है वह पंत जी के धैर्य और अभय की प्रशंसा किये बिना नहीं रहेगा।[23]

महादेवी वर्मा के अनुसार वे कई वर्ष कालाकांकर में रहे। उनके क्षेत्र सन्यास का अर्थ समझने को जाकर मैंने उन्हें जिस उत्साह भरी स्थिति में पाया उसने मेरे प्रश्न का उत्तर बना दिया। टीले पर बनी अपनी उस कुटी का 'नक्षत्र' नाम रखकर वे किसी नवीन सृजन की दिशा का अनुसंधान करने में लगे हुए थे।[24]

पंत अपनी बीमारी के बाद विश्राम की भावना से कालाकांकर गये थे बाद सुरेश दंपत्ति के स्नेह ने उन्हें वहीं रोक लिया। वहां का रहना इतना विषम और प्रतिकूल परिस्थितियों से लगातार संघर्ष था कि आत्मीयता, स्नेह और सौहार्द्र ही वह संबल था जिसने उन्हें वहां टिकाये रखा। एक दिन वार्तालाप के क्रम में शांति जोशी से पंत ने कहा था--

उनके आत्मीयता पूर्ण स्नेह से मैं इतना वशीभूत था कि वहां रहना मुझे पता ही नहीं चला अन्यथा क्या तुम सोचती हो मेरा सा संवेदनशील व्यक्ति वहां रह पाता।[25] यह बात साफ समझ लेनी चाहिए कि किसी ऐश्वर्य या आराम अर्थात् विलासिता की प्रेरणा से पंत ने कालाकांकर रहना स्वीकार नहीं किया था। कालाकांकर की रचनात्मक की दृष्टि से उन पर क्या प्रभाव पड़ा यह उनकी उस अवधि में प्रकाशित रचनाओं की छानबीन से पता चल जायेगा।

बहुतों को यह विश्वास न होगा कि पंत का जीवन असह्य अभावों, रिक्तता और संघर्ष का जीवन रहा है। कालाकांकर काल का मूल्यांकन करते हुए कहा जा सकता है कि यह पंत के कवि हृदय को यथार्थ से परिचित कराने का निमित्त रहा है। वास्तव में सन् 26 से 40 तक का काल उनके जीवन का वह महत्त्वपूर्ण काल है जिसने उन्हें ठोस धरती पर चलना सिखाया उनकी सुकुमारि कल्पनाओं, आदर्शों को ऊबड़-खाबड़ राहों, कंटकाकीर्ण मार्गों एवं जीवन की विषमताओं का अनुभव करा उनकी काव्य चेतना को मानवीय संवेदनाओं से अनुप्राणित किया।[26]

कालाकांकर और पंत का जो घनिष्ट संबंध रहा है उस पर अब तक विचार किया गया। पंत के काव्य में यथार्थ की और ग्रामीण जीवन संबंधी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का श्रेय जहां कालाकांकर को है वहीं कुंवर सुरेश सिंह अमित सौहार्द्र के कारण उन्हें जो मानसिक तोष प्राप्त हुआ वह भी उनकी रचना भूमि की तैयारी के लिए उत्तरदायी है। इसके अलावा पंत और कुंवर सुरेश

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिंह के बीच 1930 से लेकर 1977 (पंत के अंतिम समय तक) जो पत्राचार होता रहा वह भी उनकी घनिष्ठता को प्रमाणित करता है।

संदर्भ

1. पंत जी और कालाकांकर, पृ. 8
2. नवनीत, मार्च 1988, पृ. 129
3. दिवंगत हिंदी सेवी क्षेमचन्द सुमन, भाग-1, पृ. 475-476
4. वही, पृ. 178
5. वही, पृ. 418
6. वही, भाग-2, पृ. 56
7. पंत जी और कालाकांकर, पृ. 16
8. यादों के झरोखे से, कुंवर सुरेश सिंह, पृ. 190
9. श्री सुमित्रानन्दन पंत एक स्मृति चित्र, पृ. 123
10. वही, पृ. 57
11. वही, पृ. 58
12. वही, पृ. 48-49
13. वही, पृ. 26
14. वही, पृ. 26
15. वही, पृ. 29-30
16. वही, पृ. 29-30
17. पंत जी और कालाकांकर, पृ. 2
18. पंत जी और कालाकांकर, पृ. 3
19. वही, पृ. 4
20. वही
21. सुमित्रानंदन पंत, जीवन और साहित्य, भाग-1, पृ. 254
22. कर्मयोगी साम्य संत पंत, पृ. 96
23. सुमित्रानंदन पंत, जीवन और सहित्य, भाग-1, पृ. 256
24. महादेवी वर्मा, पथ के साथ, पृ. 111
25. पंत जीवन और साहित्य, पृ. 257
26. वही, पृ. 262

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पत्रों में व्यक्त पंत का व्यक्तित्व तथा अन्य संदर्भ

पंत और कुंवर सुरेश सिंह आपस में घनिष्ट रूप से संबद्ध रहे। यह घनिष्ठता उनके व्यक्तिगत पत्रों से बखूबी व्यक्त होती है। किसी साहित्यकार के मन को समझने के लिए पत्र प्रथम कोटि के प्रमाण होते हैं। पत्रों में उसकी रुचि, उसकी दृष्टि तथा उसके जीवन की ऐसी छोटी-छोटी बातें व्यक्त होती हैं जो उसके अन्य रचनात्मक साहित्य में देखने को नहीं मिलती हैं और इस दृष्टि से वे पत्र और महत्त्वपूर्ण होते हैं जो एकदम निजी होते हैं और इस भावना से लिखे जाते हैं कि ये कभी प्रकाशित नहीं होंगे।

हिंदी में पत्र साहित्य अब पर्याप्त रूप से विकसित हो चुका है। इस संबंध में सबसे महत्त्वपूर्ण काम पं. बनारसीदास चतुर्वेदी ने किया है। इन्होंने 'पत्र व्यवहार एक मनोरंजन व्यसन' शीर्षक अपने निबंध में इस व्यसन की तुलना अफीम और गांजे से की है। कोई भांग पीता है, कोई तंबाकू खाता है, किसी को अफीम की लत है, तो किसी को गांजे का शौक है। सुरों की प्रिय सुरा के पीने वालों का तो क्या कहना, पर इन सब नशों की तरह का, उतना ही उन्मादक एक नशा और भी है और वह है चिट्ठियां भेजने का।"[1]

श्री हरीशंकर शर्मा ने पत्र व्यवहार के महत्त्व पर लिखा है–निजी पत्र जो इष्ट मित्रों या सगे संबंधियों को लिखे जाते हैं उनमें लेखक के हृदय का वास्तविक चित्र अंकित होता है। ये निजी चिट्ठियां ही जिनमें हृदय खोलकर बातें की जाती हैं, लेख्क के वास्तविक व्यक्तित्व की परिचायक हैं। शर्मा जी ने आगे लिखा है किसी विशेष स्थिति, प्रसंग या घटना के संबंध में, किसी के हृदयगत भाव जानने हों तो उसके निजी पत्रों का अवलोकन करना चाहिए–कवियों या साहित्यकारों की रचनाएं समझने के लिए, उनकी चिट्ठियों से बड़ी सहायता मिलती है। अभिप्राय यह है कि किसी का वास्तविक व्यक्तित्व व प्रकृत चरित्र जानने के लिए उसकी चिट्ठियां ही सुलभ और सफल साधन हैं।"[2]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंत जी के पत्र

दो लोगों से पंत का लगातार पत्र व्यवहार रहा। एक कालाकांकर के कुंवर सुरेश सिंह से, दूसरा महाकवि बच्चन से। बच्चन को लिखे पंत जी के पत्रों को बच्चन जी ने तीन पुस्तकों में छपवा दिया है—'पंत के दो सौ पत्र' बच्चन ने लिखे 'पंत के सौ पत्र' तथा कुछ पत्र 'कवियों में सौम्य पंत' के अंत में। मेरा विवेच्य केवल कुंवर सुरेश सिंह या उनकी पत्नी को लिखे पंत के पत्र हैं इसलिए यहां अपनी मूल प्रतिज्ञा के सविस्तार विवेचन के लिए इन्हीं को लिया जाएगा। पंत ने कुंवर सुरेश सिंह को जो पत्र लिखे उनसे कालाकांकर उनकी रचना भूमि का उन पर क्या प्रभाव पड़ा तथा उस समय लिखी उनकी रचनाएं कहां तक कालाकांकर की पृष्ठभूमि को लिए हुए हैं यह स्पष्ट हो जाएगा। 'पंत जी और कालाकांकर' ग्रन्थ की भूमिका में कुंवर सुरेश सिंह ने उनको लिखे पत्रों को छपवाने की प्रेरणा कैसे मिली इसका विवेचन किया है।

श्री सुमित्रानन्दन पंत के पत्रों के प्रकाशन का प्रश्न कैसे उठा, उसकी योजना किस प्रकार बनी और इस विषय में श्री पंत जी के क्या विचार थे, इसे पाठकों के सम्मुख रखना और उन्हें सारी परिस्थितियों से अवगत कराना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं।[3] आगे उन्होंने लिखा है कि इस संकलन की रूपरेखा बनाने का श्रेय डॉ. रामविलास शर्मा को है। कुंवर सुरेश सिंह में बचपन से ही अपने मित्रों तथा आदरणीय महापुरुषों की चिट्ठियां सहेज कर रखने का शौक था। धीरे-धीरे उनके पास बहुत से पत्र एकत्र हो गए। उन्होंने लिखा है मुझे कभी इन पत्रों को छांटकर अलग-अलग करने का ध्यान भी न आता यदि भाई रामविलास जी शर्मा अपनी पुस्तक 'निराला की साहित्य साधना' के लिए मुझे पूज्य निराला जी के पत्रों के लिए न लिखते।[1] निराला जी के पत्रों को छांटकर उन्होंने उन्हें डॉ. शर्मा को भेज दिया बाद में डॉ. शर्मा ने कुंवर सुरेश सिंह के पास एकत्र साहित्यकारों के सारे पत्रों की सूची मांगी जिसमें पंत जी के पत्र सबसे अधिक थे। फिर उन्होंने अपने एक पत्र में पंत जी के पत्र संग्रह के लिए 'पंत जी और कालाकांकर' नाम सुझाकर उसे छपवाने और उसके लिए एक भूमिका तथा पंत जी का परिचय लिख देने का सुझाव दिया। उन्होंने लिखा : पंत जी के संदर्भ में हिमालय की उपत्यकाओं का उल्लेख बहुत हुआ है, पर पंत जी मैदानी कवि हैं और कालाकांकर से उनके यथेष्ट कृतित्व का गहरा संबंध है, यह सिद्ध करना अनावश्यक है। इसलिए मुझे लगा 'पंत जी और कालाकांकर'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
यह नाम ऊपर की बात उजागर करेगा। भूमिका बड़ी हो जाए तो विचलित न हों, जितनी बड़ी और तथ्यपूर्ण हो उतना ही अच्छा।[5]

पंत जी के सारे पत्र निजी थे इसलिए कुंवर सुरेश सिंह ने उन्हें राय कृष्णदास के कलाभवन को नहीं दिया था। इसलिए वे उन्हें छपाना भी नहीं चाहते थे। इस पर डॉ. रामविलास शर्मा ने उन्हें जो लिखा वह पत्रों के महत्त्व पर प्रकाश डालता है—"प्रत्येक पाठक अपने प्रिय कवि अथवा लेखक के बारे में छोटी-से-छोटी बात जानने के लिए आतुर रहता है, जो उसे उनके पत्रों द्वारा ही ज्ञात हो सकती है जीवनियों और संस्मरणों से नहीं। जीवनियों और संस्मरणों में तो बहुत गपबाजी रहती है। पत्रों से कवि अथवा लेखक का सहज स्वभाव, उसकी मनःस्थिति और उसका वास्तविक स्वरूप पाठक के सामने आ जाता है और उसके हृदय में अपने प्रिय कवि के लिए अधिक आदर और अपनत्व का भाव उदय होता है।[6] अंत में यह प्रस्ताव पंत जी के सम्मुख रखने का डॉ. शर्मा ने सुझाव दिया। इस पर पंत जी ने उन्हें लिखा—डॉ. रामविलास ने जिस दृष्टि से भी यह सुझाव दिया हो उससे यह लाभ तो हुआ ही कि पत्र छप जायेंगे। आप लोगों के साथ एक दशक से भी अधिक रहने का सौभाग्य मिला है। आपके पारिवारिक स्नेह की स्मृति स्थायी हो जाय इससे अधिक प्रसन्नता मेरे लिए क्या हो सकती है निजी तो संसार में शायद कुछ भी नहीं है। सभी कुछ परिस्थिति तथा कार्य-कारण भाव का परिणाम है, मुझे इन पत्रों को छपवाने में रत्ती भर आपत्ति नहीं है।"[7]

पंत जी भी इन पत्रों को छपवाना चाहते थे किन्तु किन्हीं कारणों से वे उनके जीवन काल में न छपकर उसके बाद छपे।

पंत के पत्र

कुंवर सुरेश सिंह को पंत ने पहला पत्र 22 जुलाई, 1929 को भरतपुर से लिखा और अंतिम पत्र 7 दिसंबर, 1977 को इलाहाबाद से लिखा। इसके कुछ ही दिनों बाद पंत जी का निधन हो गया था। अगर वर्षों के हिसाब से देखा जाए तो 1929 में पंत ने मात्र एक और '30 में एक भी नहीं किंतु 31 में 5, 32 में 3, 33 में 4, 34, में 14, 35 में 8, 36 में 3, 37 में एक भी नहीं, 38 में 13, 39 में 3, 40 में 24, 41 में 16, 42 में 17, 43 में 14, 44 में 3, 45 में 3, 46 में 4, 47 में 7, 48 में 4, 49 में 9, 50 में 2, 51 में 6, 52 में 3, 53 में 1,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
54 में 4, 55 में 17, 56 में 2, 57 में 6, 58 में 17, 59 में 9, 60 में 8, 61 में 3, 62 में 3, 63 में 3, 64 में 4, 65 में 5, 66 में 3, 67 में 6, 68 में 5, 69 में 6, 70 में 11, 71 में 6, 72 में 4, 73 में 2, 74 में 5, 75 में 3, 76 में 3, 77 में 7 पत्र लिखे। इस प्रकार पत्रों की संख्या 302।

अगर पत्र लेखन के स्थल की दृष्टि से इनका वर्गीकरण किया जाए तो पंत ने श्री सुरेश सिंह तथा उनके परिवार को सर्वाधिक 220 पत्र इलाहाबाद से लिखे। इससे यह भी सिद्ध होता है कि पंत ने अपने जीवन का सर्वाधिक समय इलाहाबाद में व्यतीत किया। पत्रों में जल्दी-जल्दी स्थान परिवर्तन का क्रम अगर देखा जाए तो जैसे-जैसे पंत इलाहाबाद में रमते गये उनका बाहर जाने का क्रम टूटता गया। यही कारण है कि जिस पार्वत्य प्रदेश की पंत संतान थे वहां जाने का क्रम 1958 तक मिलता है बाद के वर्षों में पंत अल्मोड़ा एक भी बार नहीं गये और गये भी हों तो वहां से उन्होंने कालाकांकर कोई पत्र नहीं लिखा। पंत ने कुंवर सुरेश सिंह को अल्मोड़ा से 41, बिजनौर से 6, लैंडल डाउन से 4 तथा देहरादून से 2 पत्र लिखे। भरतपुर से उन्होंने मात्र एक पत्र लिखा जिसका अर्थ है 1929 के बाद पंत भरतपुर फिर कभी नहीं गये। पंत जब उदय शंकर के साथ बम्बई गये तब उन्होंने वहां से कुल 4 पत्र लिखे और दिल्ली से मात्र 6 दक्षिणांचल के मद्रास तथा बंगलौर से उन्होंने 4 तथा 1 पत्र लिखा और लखनऊ जो कालाकांकर से पास था वहां से मात्र 4 पत्र लिखे। सुरेश दम्पत्ति जब कभी बाहर चले जाते थे तब पंत ने उन्हें 9 पत्र लिखे। ये पत्र कालाकांकर से लिखे गए हैं।

निजी पत्रों के महत्त्व के बारे में हिंदी में अब निश्चित धारणा बन चुकी है। यद्यपि हिंदी प्रकाशकों की पत्र साहित्य प्रकाशन में अधिक रुचि नहीं है फिर भी विभिन्न स्मृति/अभिनंदन/रचनावलियों तथा स्वतंत्र रूप से कई महत्त्वपूर्ण पत्र संकलन निकल चुके हैं। इनका महत्त्व पत्र लेखक के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने के मुख्य स्रोत के रूप में निरूपित किया जा चुका है। प्रेमचंद की चिट्ठी-पत्री से उनके बारे में ऐसी बातें मालूम हुई हैं जो उनकी जीवनी की आधार बनी। उग्र द्वारा संपादित 'फाइल-प्रोफाइल' पत्र संकलन भी कई साहित्यकारों के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालता है। 'निराला की साहित्य साधना' खंड 3 में तो निराला और उनको लिखे गए पत्रों का संकलन निराला की गद्य शैली तथा उनके व्यक्तित्व पर बखूबी प्रकाश डालता है। डॉ. रामविलास शर्मा द्वारा यह पत्र संकलन अब तक छपे पत्र संकलनों में सर्वथा वैज्ञानिक और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पत्र-साहित्य विश्लेषण में शलाका स्थानीय है।

पंत जी और कालाकांकर में पंत के लिखे जिन पत्रों का संकलन है वे पंत के व्यक्तित्व/उनकी प्रवृत्तियों और उनकी जीवन दृष्टि को व्यक्त करने के साथ उनकी गद्य शैली पर प्रकाश डालते हैं। संकलन के प्रकाशकीय में डॉ. प्रेमनारायण शुक्ल ने लिखा है—अभी तक हम पंत जी के काव्य साहित्य का ही अध्ययन करते रहे हैं। पर उनका पत्र साहित्य भी विपुल मात्रा में है जिसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। व्यक्ति अपनी कृतियों से जितना जाना जाता है उससे कहीं अधिक वह अपने पत्राचार द्वारा अपना परिचय दे देता है। इसलिए हमारा पत्र ही हमारा परिचय पत्र होता है। हम अपने पत्रों से ही वास्तविक रूप में पहचाने जाते हैं। हमारी चिंतन धारा हमारे मन का वेग, हमारा विवेक, हमारा संपूर्ण हृदय प्रदेश हमारे पत्र की पंक्तियों में चित्रित हो जाता है उसमें हम बोलते हैं। हमारा मन बोलता है। उसमें हमारी साधों के अंकुर उगते हैं। हमारी कल्पनाओं का प्रासाद निर्मित होता है। सच तो यह है हमारे पत्रों में हमारा जीवन विकसित होता है।[8]

कुंवर सुरेश सिंह के स्नेह के कारण पंत कालाकांकर रहने गये थे। धीरे-धीरे यह स्नेह अत्यन्त गाढ़ा होता गया। इस प्रगाढ़ स्नेह का पूरा इतिहास इन पत्रों में सुरक्षित है इसलिए पंत अपने मन की हर बात सुरेश दम्पत्ति के सामने निःसंकोच मन से प्रकट करते थे। लोगों की ऐसी धारणा है कि कालाकांकर में पंत बड़े ठाठ से राजसी सुख-सुविधा के साथ रहते होंगे और पंत के जीवन में किसी तरह का संघर्ष नहीं होगा। समीक्षक ऐसा सोचते हैं कि पंत इसलिए स्वप्न दर्शी, आदर्श प्राण और सुकुमार कल्पना के कवि हैं क्योंकि उन्हें आर्थिक स्तर पर संकट का सामना कभी नहीं करना पड़ा और यथार्थ की कठोर भूमि से उनका नाता कभी नहीं रहा। उनके पत्र इस बात के साक्षी हैं कि उनके जीवन में आर्थिक संघर्ष किस स्तर तथा किस प्रकार का रहा।

यह बहुतों को कम जानकारी होगी कि पंत की आर्थिक आवश्यकता की पूर्ति सुरेश दंपत्ति ही किया करते थे। पंत निःसंकोच भाव से उनसे पैसे मांग लिया करते थे। इसका कारण था उनके प्रति उनका अटूट स्नेह। वे एक प्रकार से कुंवर सुरेश सिंह के परिवार का अपने को अंग समझते थे। उनकी पत्नी प्रकाशवती उन्हें बच्चे की तरह सरल भोला समझ कर उनकी छोटी-सी-छोटी बात की परवाह किया करती थी। यह सब प्रमाण उनके पत्रों में उपलब्ध है और उनका अध्ययन बहुत रोचक तथा महत्त्वपूर्ण है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
22 जुलाई, 1929, आपका कृपा पत्र मिला बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं सदैव आपसे मिलने का इच्छुक हूं। आपका पल्लवं पसंद आया—आपकी कृपा है। आपका कृपा पत्र कल संध्या के समय मिला, बड़ी प्रसन्नता हुई धन्यवाद। प्रयाग में त्रिपाठी जी के यहां आपसे मिलने का जो सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ उसके लिए मुझे भी कम प्रसन्नता नहीं हुई। आपके दर्शनों की मेरे हृदय में भी बड़ी अभिलाषा थी (8-5-31)।

एक मास बाद ही पंत ने लिखा है—हां, नैनीताल में उत्सुकतापूर्वक मैं आपकी बाट जोहता था, जब मुझे श्रीमान बैरेवा के कुंवर साहब से मालूम हुआ कि आप नैनीताल नहीं आइयेगा और मेरा भी जी वहां से ऊब गया था। (11-6-31) उसी पत्र में पंत के मन में सुरेश सिंह जी के व्यक्तिगत जीवन के संबंध में जानने में उत्सुकता होती है और वे पूछते हैं—क्या आपकी स्टडीज समाप्त हो गयी? आप पहले बनारस में शायद पढ़ते थे, जैसा कि आपने लिखा था—क्या आप डिग्री ले चुके अब आपका क्या विचार है—क्या इन बातों पर आप थोड़ा-बहुत प्रकाश डालकर मुझे बाधित कर सकते हैं।

इस संकलन में केवल पंत जी के पत्र हैं कुंवर सुरेश सिंह के पत्र नहीं हैं। इसलिए पत्रों/बातों/संदर्भो/प्रतिक्रियाओं का पूरा क्रम देखने में नहीं आता है किंतु अकेले पंत के पत्रों से ही अनुमान करना सहज है कि जैसे-जैसे कुंवर सुरेश सिंह के सहज सौहार्द्र के प्रति पंत आश्वस्त होते गये वे अपने मन की बातों को खोलकर कहते गए। यही कारण है कि अपने 2-7-31 के पत्र में उन्होंने अपनी आर्थिक कठिनाई तथा अर्थ को लेकर अपने स्वभाव की चर्चा करते हुए लिखा—

इधर कुछ रोज से मैं अपनी आर्थिक स्वतंत्रता के प्रश्न पर विचार कर रहा हूं, ज्ञात नहीं आप मुझे इसमें किसी प्रकार की सहायता दे सकेंगे या नहीं? शायद आपको ज्ञात होगा कि मैं अभी तक आर्थिक लाभ की दृष्टि से कोई काम नहीं करता आया हूं—अपना सब समय केवल अध्ययन में और थोड़ा-बहुत लिखने में व्यतीत किया है। पर अब जीविका का प्रश्न मेरे लिए आवश्यक सा हो उठा है। घर से लगातार सहायता लेना मुझे भीतर ही भीतर अच्छा नहीं लगने लगा है। हिंदी में लिखने से आर्थिक लाभ नहीं के बराबर है। उससे एक पब्लिशिंग आदि का कार्य न करे—प्योर लिटरेरी राइटिंग्स बिलकुल भी पेइंग नहीं। प्रेस वर्क बड़ा स्क्वीजिंग टाइप का होता है—उसके बाद अपने काम के लिए मेरे जैसे कान्स्टीट्यूशन के प्राणी के पास शेष शक्ति नहीं रहेगी।[9]

इस पत्र में पंत के बारे में चार बातों का पता चलता है। एक वीणा, ग्रन्थि,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पल्लव लिखने के युग में पंत आर्थिक संघर्ष से जूझते रहे। 'पल्लव' लिखने के बाद ही वे बीमार पड़ गए और स्वस्थ होते ही उनके सामने आर्थिक स्वतंत्रता का प्रश्न खड़ा हो गया। वे घर से और आर्थिक सहायता नहीं लेना चाहते थे। इससे पंत की स्वाभिमानी प्रकृति और अपने पैरों खड़े होने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है। 1931 तक पंत आर्थिक लाभ की दृष्टि से कोई काम नहीं करते थे। उनका सारा समय केवल अध्ययन और लिखने में व्यतीत होता था। तीसरी बात हिन्दी में केवल लेखन के बल पर जीविका का प्रश्न हल नहीं हो सकता। चौथा कुंवर सुरेश सिंह कुछ आर्थिक सहायता दे सकते हैं या नहीं। उन्होंने ट्यूशन जैसे 3/4 घंटों के किसी काम की संभावना के विषय में भी कुंवर सुरेश सिंह को लिखा था—3/4 घंटों में अपने कार्य से बचा सकता हूं। इन 3-4 घंटों में ट्यूशन की तरह का या कोई और जोन टैक्सिंग कार्य मुझे कहीं मिल जाता तो वह मेरे लिए अधिक अनुकूल होता—मुझे अपना काम करने के लिए ऐसा रूप चाहिए हैपसेजड अटेम्ट्स करने से मुझे स्वयं सेटिसफेक्शन नहीं होता लिखने के सिवा मैं और कोई कार्य करने के लिए फिजिकली तथा मेन्टली भी अनफिट हूं।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि वे अपने लिए कोई 3-4 घंटे का काम चाहते थे। उन्हें अध्ययन, मनन और लेखन के लिए एक शांत एकांत कमरे की आवश्यकता थी। पंत को अव्यवस्थित काम करना पसंद नहीं था। मानसिक तथा शारीरिक दृष्टि से लेखन के अलावा वे और कोई काम नहीं कर सकते थे। पंत के पूरे काव्योत्कर्ष को ध्यान में रखकर अब ऐसा लगता है उन्होंने अपने को ठीक समझा था और अपने स्वभाव के अनुकूल जीवन कार्य चुना था।

उसी पत्र में उन्होंने कुंवर सुरेश सिंह को लिखा—यद्यपि मैं आपसे अधिक परिचित नहीं हूं और आपके भाई राजा साहब से तो बिल्कुल ही नहीं। पर फिर भी जो कुछ मैंने आप लोगों के लिए सुना है उससे मैं इस निष्कर्ष तक पहुंचा हूं कि शायद आपके यहां में शांतिपूर्वक कार्य कर सकूंगा।

इसी पत्र से विदित होता है कि पंत प्रयाग के आसपास पब्लिक लाइब्रेरी के कारण रहना चाहते थे कि वे हर ठंडक में प्रयाग ही लगभग 9-10 वर्ष से रहते आये थे।

आगे वे निःसंकोच भाव से लिखते हैं कि आप मेरे लिए सुविधापूर्वक 3-4 घंटे किसी काम की व्यवस्था कर दें जिससे सामान्य मध्यवर्ग की जीविका का इंतजाम हो सके। इसके साथ शांत और एकांत कमरे की व्यवस्था, साथ ही पंत ने एक शर्त रखी कि हर ग्रीष्म में दो-ढाई मास पहाड़ चला जाया करूंगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंत ने आगे जो कुछ लिखा उससे उसकी संवेनशीलता के साथ स्पष्ट कहने की प्रवृत्ति का पता चलता है—इतनी फ्रेंकली और बिजनेस में जो मैं टर्म्स डिक्टेस सा करा रहा हूं उसका एक कारण यह भी है कि मैं कहीं नेसेसिटी के कारण आपका यह इमोशन न टच कर दूं और आप किसी प्रकार की बाध्यता अपने ऊपर न समझ लें—दूसरा यह भी कारण है कि आपकी कृपा पर विश्वास।[10]

यह अत्यंत निजी पत्र लिखकर पंत ने आग्रह किया था कि "मुझे यथावत् उत्तर देकर चिरकृतज्ञ करेंगे। हेल्प मुझे अभी कहीं मिल सकती है अपने घर में बुरा नहीं हूं पर अपने कार्य से अपनी भौतिक जरूरतें पूरी करने से विशेष नैतिक संतोष मिलता है। इस लिए भी कार्य करना आर्थिक दृष्टि से मेरे लिए आवश्यक होता है। मैं अपनी पोजीशन इस छोटे से पत्र में इससे अधिक किलियर नहीं कर सकता।[11]

इस पत्र के उत्तर में कुंवर सुरेश सिंह ने उन्हें जो आत्मीयता भरा पत्र लिखा उसने पंत को सदैव के लिए अपनी कृतज्ञता से पाश में बांध लिया। "भाई लिख कर आपने जो मुझे भ्रातृत्व प्रदान किया उसकी मैं सदैव रक्षा करूंगा।"

कुंवर सुरेश सिंह ने उन्हें लिखा था कि आप मुझे हिंदी साहित्य पढ़ा दिया करना इस पर पंत ने लिखा था आपको पढ़ाने का साहस मैं अवश्य नहीं कर सकता। क्योंकि मैं इसेन्सली पोयट हूं। स्कालर नहीं। पर हम लोग बिना किसी रुकावट के साथ-साथ पढ़ सकेंगे। इस पर मैं विश्वास करता हूं।

अपने इस पत्र में पंत ने साहित्य का इतिहास पढ़ने की दो दृष्टियां रखीं—आप जिस प्रकार हिंदी साहित्य का अध्ययन करना पसंद करेंगे तद्नुसार ही हम लोग स्कीम द्वारा कर लेंगे। लिटरेचर को या हम हिस्टारिकली अपरोच कर सकते हैं या फिलासोपिक स्टैंड प्वाइंट से। यह अपने अपने टेम्प्रामेंट पर डिपेंड करता है। मुझे दोनों स्टैंड प्वाइंट पसंद हैं, "यद्यपि इफ यू वांट टू इन क्लेस्प द ट्रथ लेट पास द वर्ड, फालो द थाट, द थाट" इस सेइंग पर मुझे विशेष श्रद्धा है।[12]

पत्र के इस अंश से साहित्य के प्रति पंत की गंभीरता और उसे वे किस दृष्टि से ग्रहण करते थे उसका पता चलता है। उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि साहित्य के अध्ययन की दो रीतियां हैं एक इतिहास और परम्परा अर्थात् उसके क्रमिक विकास की दृष्टि से, दूसरा उसमें निहित विचारधारा की दृष्टि से। पंत को दोनों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ही पसंद थीं किंतु दार्शनिक दृष्टि से पढ़ना उन्हें अधिक अच्छा लगता था। यही कारण है कि स्वयं पंत के काव्य विकास में उत्तरोत्तर विचार तत्व प्रधान होता गया।

पंत ने ट्यूशन जैसे काम के लिए लिखा था इस पर कुंवर सुरेश सिंह ने साहित्य पढ़ाने के साथ-साथ वे कितना वेतन लेंगे, यह पूछा। इस पर पंत ने उत्तर दिया, भाई वेतन के लिए मुझसे कुछ भी नहीं लिखा जाता, मेरे लिए लिखना उचित नहीं; क्योंकि "मुझे भीतर ही भीतर ऐसा ज्ञात होता है यह ट्यूटर शिप केवल एक क्लॉक भर है जिसके अंदर से आपका कृपा भाव छिपा हुआ है और मुझे रुपयों की ऐसी आवश्यकता भी नहीं—केवल मेरा वर्क अबाध्य रूप से हो सके यही मैं चाहता हूं। मेरी ऐसी कोई इक्सपेन्सिव हैबिट भी नहीं जितना आप सुविधा पूर्वक मुझे इसेन्सल नीड्पूरी करने के लिए दे सकेंगे वही मेरे लिए यथेष्ट होगा—आप विश्वास रखिए इस विषय में मुझे रत्ती भर आपत्ति नहीं होगी—"इट इज द स्प्रिट आफ मैन इन हिम दैट नोयेथमैन" कहते हैं।

पंत जी के पत्र से इस अंश से रुपये-पैसे के प्रति उनके विशेष लगाव का अभाव सिर्फ काम अबाध रूप से चल सके और अनिवार्य किंतु मामूली जरूरतें पूरी करने भर के लिए आर्थिक सुविधा किसी तरह की खर्चीली आदत का अभाव पंत जी की इन प्रवृत्तियों पर प्रकाश पड़ता है।

इसी पत्र में लिखी बातों से कुंवर सुरेश सिंह की विशेष सहृदयता भी स्पष्ट होती है। पंत की संवेदनशीलता और मनुष्यता के आंतरिक भावों को पहचानने की आंतरिक क्षमता भी पत्र के इस अंश से प्रकट होती है। उन्होंने लिखा है—आप तो जरूरत से ज्यादा सहृदय हैं—ग्राम्य जीवन भी मुझे बुरा नहीं लगता।" पत्र के इसी अंश में पंत ने ग्राम्य और शहरी जीवन के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उन्हें शहर पसंद नहीं था क्योंकि उससे उन पर बोझ और तनाव पैदा होता था। इसीलिए उन्होंने कालाकांकर रहना पसंद किया था और जब कार्य की अनिवार्यता हुई तभी प्रयाग रहना पसंद किया। उनके पत्र का अंश इस प्रकार है—सिटी लाइफ को माइंड को रेजिस्टैंस मिलती है इसलिए सिटी से दूर रहना मैं वैसे ही पसंद करता हूं। इलाहाबाद तो कापीसेरीन प्लेस है। लखनऊ में मैं दो रोज भी अपने माइंड की रक्षा नहीं कर सकता।[13]

पंत सुरेश जी के पत्र से अभिभूत हो गये थे और उन्होंने उनके अशेष निश्छल स्नेह का एहसास कर लिया था। उन्हें विश्वास हो गया था कि वे उनके साथ सुख पूर्वक रह सकेंगे। इसी पत्र का अंश है—"आपका निःसंकोच व्यवहार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
एवं स्नेह पाकर मैं तृप्त-सा हो गया हूं। मुझे विश्वास है हम बहुत सुख पूर्वक रह सकेंगे। आपका टम्प्रामेंट मुझे आपके हैंड राइटिंग से ही थोड़ा-बहुत मालूम हो गया था। ऐंगुलेरिटिस किसी प्रकार की मुझमें भी नहीं है।[14]

उनका यह प्रेम उत्तरोत्तर बढ़ता गया उस पर आगे विचार किया जाएगा। यहां पंत के आर्थिक संघर्ष और सुरेश सिंह जी पर उनकी आर्थिक निर्भरता की बात चल रही थी वह पंत के कई पत्रों में व्यक्त हुई है।

उन्होंने लिखा—आप मुझे 100/- जून प्रथम सप्ताह भेज दें तो बड़ी प्रसन्नता हो। कालाकांकर जाने से पहले मुझे एक बार दिल्ली फिर जाना होगा। एक्सरे भी अबके वहा लूंगा।[15] आप मुझे लैंसडाउन जाने से पहले 100/- भेज दें तो बड़ा अच्छा हो मेरे पास रुपये हैं नहीं।''[16]

50/- तो यहां बिल्कुल ही जरूरी चाहिए। कल मैंने और नरेंद्र ने हिसाब लगाया था। 12-50 घर के। 18/- खाने और चाय। 5/- दूध के। 27/- रोशनी 27/- धोबी के। 10/- फुटकर। आपके स्नेह और सहायता का मैं अधिक से अधिक उपयोग बिना आपके ऊपर किसी प्रकार का दबाव डाले करना अपना कर्तव्य समझता हूं।[17]

कल कुंवर साहब का पत्र मिला। यहां हमने 'रूपाभ' के लिए कागज का प्रबंध कर लिया है उसका बिल इस महीने के अंत तक चुकाना पड़ेगा। लेकिन पर्सनल इक्सपेन्सेंज के लिए मि. सुरेश सिंह 20/- और भेजने वाले थे। संभव है उन्हें खयाल न रहा हो। अतः आप मेहरबानी करके 20/- मेरे लिए एम. ओ. द्वारा यहां के पते पर जल्दी भेजवा दीजिये।[18] आप कृपा पूर्वक मेरे लिए 20/- और भेज दें यहां कहीं नहीं मिल सकेंगे।[19]

1-4-40 के पत्र में पंत ने लिखा—आप मुझे 50/- महीने भेजते रहिएगा नहीं तो मैं काफी संकट में पड़ जाऊंगा। किसी तरह इतना आपको मेरे लिए बचाना ही पड़ेगा इससे कम में यहां का काम नहीं चलेगा। इससे मैं अपने मित्रों के सामने अपने को बैंकरप्ट करार देने से बच जाऊंगा। मेरे कपड़े, चादर, तौलिये, छाता, फाउंटेन पेंस अवश्य किसी से भेजवा दीजिएगा।''

अपनी आंतरिक मांग और अपने कार्य के दबाव के कारण जब पत ने कालाकांकर छोड़ दिया तब भी वे कुंवर सुरेश सिंह पर ही आर्थिक दृष्टि से निर्भर बने रहे। उन्होंने 18 जुलाई, 40 के पत्र में लिखा वह कालाकांकर पर उनकी आर्थिक निर्भरता से अधिक सुरेश सिंह पर उनके आंतरिक संबंध का द्योतक है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आपसे जो मैं पूछना चाहता हूं वह यह कि क्या आप आगे चलकर भी 50/- प्रति माह भेजना पसंद करेंगे कि नहीं। आपने मुझे 2 महीने से कुछ भी नहीं भेजा और मुझे ठीक समय से रुपये न मिलने से कितनी दिक्कतें उठानी पड़ती हैं। मालूम नहीं आप यह सोच सकते हैं या नहीं। जहां तक मैं जानता हूं आपके लिए मुझे प्रतिमाह 50/- दे देना कोई खास दिक्कत का काम नहीं, और जैसा कि आपका मेरा संबंध है, आपको सभी तरह से मुझे उठाने में सहायक बनना ही चाहिए। संसार में ऐसे कई उदाहरण हैं जो मुझे स्वाभाविक लगते हैं। और जिसकी स्थिति संतोषजनक नहीं उसका अपने को उठाने की चेष्टा करना भी बिलकुल स्वाभाविक और युक्तिसंगत बात है, जैसा कि मैं चाहता हूं।

पंत ने अपने इसी पत्र में लिखा कि यदि आपको अपनी वर्तमान अवस्था में मुझे आर्थिक सहायता पहुंचाना सुविधाजनक नहीं जान पड़ता तो वह भी आपको मुझे निःसंकोच बतला देना चाहिए क्योंकि रुपये देने न देने में आपके और मेरे संबंध में तिल भर का अंतर नहीं पड़ सकता। न मैं उसे कोई बड़ी बात ही समझता हूं। आपका मेरा स्नेह संबंध हर हालत में एक सा ही रहेगा। उसका आपके पास रहने या रहने से कोई संबध नहीं।[20]

"रही आपसे सहायता पाने की बात, वह तो मैं यह जान लेना चाहता हूं कि मुझे वर्तमान स्थिति का पता चल जाय। दूसरा कि इसलिए कि अगर आपको मुझे सहायता करने में प्रसन्नता होती है तो आप रेगुलरली ठीक समय पर मेरे पास रुपये भेज दिया करें। क्योंकि आपको बार-बार लिखने में या आपसे मांगने में मुझे बड़ा खराब लगता है और मुझे बैगर (भिखारी) की पोजीशन रिड्यूज करना आप भी पसंद नहीं करेंगे। आप से मैं इसलिए लेना पसंद करता हूं कि आपके पास है और मुझे देने में खुशी होती है। कोई भी एहसान मैं आपका रुपयों के लिए नहीं मानता। मेरा मन ही ऐसा है केवल आपके स्नेह एहसान मुझे मालूम देता है।

आपकी आर्थिक स्थिति अगर इस समय ऐसी नहीं तो आप लिखने में रत्ती भर संकोच न करें। आप अकारण ही मेरे सदैव प्रिय सुहृद रहेंगे और मैं भी अपने को आपका सदैव एक छोटा सा स्नेही रहने का दावा कर सकूंगा।[21]

इस पत्र से यह निष्कर्ष निकलता है कि पंत और कुंवर सुरेश सिंह का संबंध आंतरिक था। इसका आधार अर्थ नहीं था। किंतु यह भी सुस्पष्ट है कि पंत आर्थिक सहायता के लिए पूर्ण रूपेण कुंवर सुरेश पर निर्भर थे। उन्हें लगता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
था बिना मांगे वे उन्हें नियमित सहायता देते रहें। इससे यह भी लगता है कि पंत कभी-कभी अपने को भिखारी की स्थिति में पाने से दुखी से हो जाते थे।

एक पत्र में पंत ने लिखा—वैसे भी आप ही पर मेरे भविष्य की सफलता निर्भर है। आप पर अपना विश्वास रखकर ही मैं अपने जीवन का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहता हूं।[22]

आप मेरे लिए 15/- और भेज दीजिये। मुझे 25/- आधा महीना का हिसाब बच्चन को देना होगा। शेष मेरे काम आयेंगे और मुझे अप्रैल में भी यहां रहने की जरूरत पड़ी तो आप 75/- मुझे एप्रिल में देंगे। मुझे दृढ़ विश्वास है कि 1-1 महीने के भीतर सुस्थिर हो जाऊंगा और भविष्य में फिर आपको फिर कभी नहीं दूंगा।

आपका कृपा पत्र और 100/- का एम. ओ. मिल गया, हार्दिक धन्यवाद। (26-4-14) मेरे गर्म कपड़ों का बकस वहीं 'नक्षत्र' में है। काला ट्रंक जो आपने दिया था उसे 3/4 तारीख तक या उससे पहले ही यहां किसी के साथ भेजवा दें तो बड़ी कृपा हो।[23]

प्रिय बहन,

आपका कृपा पत्र और मेरे कपड़ों का बकस मुझे कल मिल गया हार्दिक धन्यवाद। आप जून और जुलाई का खर्च देहरादून भेज दीजिएगा। 100/- भेज दीजिएगा।[24]

पंत के जीवन में कालाकांकर कैसे छोड़ें। इससे कहीं कुंवर सुरेश सिंह के मन में भ्रम तो पैदा नहीं होगा। वे इसको सह सकेंगे? इसके साथ अपने और सुरेश सिंह के बीच संबंधों के विश्लेषण से उत्पन्न संघर्ष इन पत्रों में विद्यमान है। पंत सुरेश दंपत्ति के अटूट स्नेह में बंधा हुआ अनुभव करते थे। उसकी झलक कई स्थलों पर मिलती है। जब पंत को लगा कि कालाकांकर राज्य की स्थिति खराब है और अवधेश सिंह सुरेश सिंह की उलखर्ची से परेशान हो गये उस समय पंत को उन्होंने पत्र लिख कर जो संकेत किया उससे पंत ने कालाकांकर छोड़ देने और प्रयाग में रह कर जीविका का साधन करना उचित समझा। सुरेश सिंह को संकेत से स्थिति स्पष्ट कर स्नेह को बनाये रखने और कालाकांकर से जाने की अनिवार्यता भी स्पष्ट कर दी।

"इधर मेरे मन में प्रयाग बस जाने का यह पुराना विचार फिर से पल्लवित हो रहा है। राजा साहब के पत्र से और भी दृढ़ हो गया है। जैसा उन्होंने लिखा है उसके अनुसार आपको मुझे कालाकांकर रहने के लिए बाध्य नहीं करना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
चाहिए। आपके एकांत स्नेह को मैं खूब समझता हूं और मेरे मन के भावों को भी आप थोड़ा बहुत जानते होंगे। पर मनुष्य की सांसारिक परिस्थिति में उत्थान-पतन अथवा परिवर्तन हुआ करता है।[25]

जीवन के सत्य का पंत को खूब अनुभव था। वे केवल स्वप्नदर्शी ही नहीं थे वे उसके यथार्थ रूप और जीवन की सीमा को भी स्वीकार करते थे—''जैसा मनुष्य हृदय से चाहता है वैसा ही यह यदि हृदय से कर सकता तो जीवन को संग्राम की उपाधि नहीं मिलती।''

पंत ने लिखा था—''जगत् है अविरत संग्राम स्वप्न है यहां विराम। इनके पीछे उनका अनुभव था। पंत अंदर से पलायनवादी नहीं थे। उन्हें अपनी आंतरिक आकांक्षा का पता था और उसकी पूर्ति के लिए अनुकूल वातावरण सृजन तथा उसकी तलाश में वे सदा रहे। उन्होंने इसी पत्र में लिखा—

''फिर कालाकांकर छोड़ देने में मेरा भी श्रेय है। वहां का वातावरण मेरे लिए इतना अनुकूल नहीं है। इधर दो-तीन साल मुझे सोच-विचार में अधिक समय एवं एकान्त की आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति आपने मेरे लिए बड़े ही स्नेह सौहार्द के साथ की। इस बात को मैं कभी भूल सकता हूं?'' किंतु पंत को और भी अनुकूल और भी साहित्यिक वातावरण की आवश्यकता थी इसलिए वे चाहते थे कि सुरेश सिंह उनके कालाकांकर छोड़ने से सहमत हो जायं। श्री सुरेश सिंह की आर्थिक कठिनाइयों से पंत काफी दुखी थे। राजा साहब ने चाहा था कि साहित्यिक कार्यों पर खर्च कम किया जाय। इस संबंध में एक पत्र पंत जी को भी उन्होंने लिखा था। पंत जी ने इसी से कालाकांकर छोड़ देने का निश्चय कर लिया था किंतु वे सुरेश सिंह जी से स्नेह संबंध नहीं तोड़ना चाहते थे—आपके स्नेह और सद्भावनाओं की स्मृति मैं सदैव अपने हृदय में रखूंगा और बीच-बीच में आपसे मिलकर उसको पुनः ताजा करता रहूंगा—आप व्यर्थ रुपये मुझे न भेजें। मैं प्रबंध कर लूंगा। आप स्वयं कष्ट में हैं।[26]

एक पत्र में पंत ने सुरेश दम्पत्ति के स्नेह को याद करते हुए अपने स्वभाव का विश्लेषण किया है—आपके स्नेह के लिए मेरे अन्तरतम हृदय में बड़ा सम्मान है। आपके मेरे बीच में कभी मिसअंडर स्टैंडिंग नहीं आये सदैव इसका प्रयत्न करूंगा, आप मेरा स्वभाव जानते हैं। मैं अंडर स्टैंड करने में ही विश्वास करता हूं। यह दूसरी बात है कभी बाहर की परिस्थितियों से तीव्र प्रतिघात पाकर हृदय अवसन्न हो जाता है उस समय मेरा दृष्टिकोण धुंधला हो जाता है।'' इन क्रिया-प्रतिक्रियाओं से ऊपर उठना/उनसे प्रभावित न होना पंत के लिए इस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
समय संभव नहीं था। इसलिए कभी कभी वे अपने अत्यंत हितैषियों के प्रति भी विरक्त हो जाते थे। वे अपनी किसी भी कमजोरी को छिपाते नहीं थे। उन्होंने लिखा यह छिपाने की बात नहीं–यह मेरी दुर्बलता है यह मैं खूब जानता हूं आप आपकी प्रकाश मुझे अत्यंत प्रिय हैं, सदैव रहेंगे।[27]

18-7-35 का पत्र पंत के मन की अनेक बातों पर प्रकाश डालता है। पंत अपने भावी साहित्यिक विकास के लिए इलाहाबाद रहना आवश्यक समझते थे। हिंदी जगत् में जीविका के लिए चल रहे संघर्ष से वे परिचित थे। उन्हें इसका भी पछतावा था कि वे कुंवर सुरेश सिंह द्वारा दी गई सुविधाओं और उनके स्नेह का इतना सदुपयोग नहीं कर सके। दूसरे वे अलग होना चाहते थे किंतु कुंवर साहब को आघात नहीं पहुंचाना चाहते थे। यह पत्र उनके पूरे संघर्ष और ऊहापेह की स्थिति को प्रकट करता है–आपसे बातों द्वारा अपने को प्रकट करने में मुझे सदैव कठिनाई होती है जिसका कारण आपके असीम स्नेह के सिवा और कुछ नहीं, जो मेरे हृदय में अटूट पाश की तरह पड़ा हुआ है।''[28]

''किंतु जितना सदुपयोग आपके स्नेह और सहायता का मुझे करना चाहिए था उतना मैं नहीं कर सका हूं इसका कारण मेरी दुर्बलताओं के अलावा बहुत अंशों में यहां की परिस्थितियां भी हैं जो मुझे अपने जीवन एवं मन के वेग को सीमित करने के लिए बाध्य करती हैं।''

पंत इलाहाबाद जाने को उनसे अलग होना न मानकर उनसे आग्रह करते थे कि इस प्रकार उनका स्नेह व्यर्थ न जाकर निश्चित रूप से फलीभूत होगा। पंत को मनुष्य के भावों को समझने की सूक्ष्मान्तर दृष्टि प्राप्त थी। उन्होंने लिखा :

आप लोगों को मैंने खूब अच्छी तरह देख लिया है और इसमें रत्ती भर भी अतिश्योक्ति एवं चाटुकारी नहीं है। आप लोगों से अधिक स्नेही और अभिभावक मेरा दुनिया में और कोई भी नहीं है। जब ऐसा सुयोग्य विधाता ने मुझे दिया है तो आप ही ख्याल कीजिए क्यों न मैं उसके बल पर अधिक से अधिक उन्नति करूं? मेरा अभिप्राय आप स्वयं समझ सकते हैं। उन्होंने स्पष्ट लिखा–आपकी सहायता के बिना में कहीं भी नहीं रह सकता। न यहां न इलाहाबाद में।

हिंदी के पाठक/समीक्षक सोचते हैं पंत जैसे सुकुमार कवि को कभी संघर्ष नहीं करना पड़ा वे फूलों की सेज पर सोते रहे किंतु तथ्य इससे भिन्न हैं।

''हिंदी जगत् में आर्थिक दृष्टि से जितना भयानक संघर्ष वह आपसे छिपा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं। उस संघर्ष के बीच में अपने लिए आर्थिक सुविधा प्राप्त कर सकने का साहस मुझमें नहीं। श्री निराला जी जैसे व्यक्ति भी उसमें अधिक सफल नहीं हुए हैं। मेरे तो स्वभाववश ही संघर्ष में पड़ने के संस्कार नहीं हैं। अतएव यदि मैं इलाहाबाद जाना चाहता हूं तो केवल आप ही के भरोसे।''[29]

पंत ने यह समझ लिया था कि सुरेश सिंह से कुछ भी सहायता न लेना मिथ्याभिमान मात्र है। और यदि वे पंत को अगर सहायता न दें यह अशोभन और अभद्र होगा। इसी पत्र में उन्होंने अपने स्वभाव/बचपन के संस्कारों का विश्लेषण किया है। कवि पारिवारिक परिस्थितियों और परिवेश से प्रभावित होकर अपने मनोवेगों को व्यक्त करना सीखता है। पंत ने लिखा है—छुटपन में एक आवश्यकताओं से युक्त परिवार में पलने के कारण मुझमें कई प्रकार की मान-अभिमान की भावनाएं कमजोरियां बन कर रही हैं और अब भी मैं पूर्णतः उन संस्कारों का दमन नहीं कर सका हूं। इसी से शायद कई बार मैंने आपके अपने प्रति इस निःस्वार्थ स्नेह का तिरस्कार किया है जिसका मुझे हार्दिक दुख है और इस प्रकार मैं आपका अपराधी भी हूं।

आगे उन्होंने लिखा जिस तरह शिरीष या लाल साहब लखनऊ में रहते हैं उसी तरह मैं भी आपके एक अंग की तरह इलाहाबाद रहना चाहता हूं। मेरी समझ में न इसमें आपके दुखी होने की बात है न मेरे। इस तरह आप वास्तव में मेरी भलाई भी कर सकेंगे और आपका स्नेह भी मेरे प्रति अधिक शुद्ध उपयोगी साबित हो सकेगा।[30]

यह पत्र पंत के भावनात्मक व्यक्तित्व पर प्रकाश डालता है। यह प्रयाग जाना चाहते थे किंतु जब कुंवर सुरेश सिंह चाहें जब तभी और वहां भी उनके एक अंग के रूप में रहना चाहते थे। पंत जी ने दूसरे पत्र में लिखा आप लोगों के स्नेह पर मुझे अटल विश्वास है और मैं कालाकांकर को ही अपना घर समझता हूं। आपका और मिसेज सुरेश सिंह का स्नेह मुझे सदैव वहां खींचता रहेगा।

इलाहाबाद पहुंचने पर पंत ने कोई काम ढूंढ़ने की भरसक चेष्टा की। वे विश्वविद्यालय में पार्ट टाइम लेक्चरिंग का काम / कोई टांसलेशन वर्क धीरेंद्र वर्मा और झा साहब से मिलकर करना चाहते थे। वे अपने लिए किसी तरह 100/- मासिक का प्रबंध कर लेना चाहते थे।

पंत जी सुरेश दम्पत्ति से निष्कपट स्नेह से अभिभूत थे। स्वयं भी उन पर निःष्कपट स्नेह रखते थे। उन्होंने लिखा—मुझे दृढ़ विश्वास है कि बहुत जल्दी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मैं आपको अपनी आर्थिक चिंता से मुक्त कर सकूंगा। किंतु जब तक मैं जीवित रहूं सदैव हम लोग एक दूसरे के सच्चे स्नेही और अभिभावक रहें यही मेरी कामना है।[31] इलाहाबाद पहुंच कर पंत सुरेश दंपत्ति को अपने पास रखना चाहते थे किंतु उन लोगों को इलाहाबाद में अच्छा नहीं लगता था।

पंत जी की व्यवहार बुद्धि की प्रशंसा उनके निकटवर्ती मित्रों ने भी की है। इनमें बच्चन और नरेंद्र शर्मा हैं। पंत जी हरेक के स्वभाव की सीमायें समझते थे। उन्हें समझ कर ही वे किसी से संबंध रखना चाहते थे। लिमिटेशंस सभी में होते हैं यह मनुष्य के स्वभाव में है। पर लिमिटेशंस को माइंड न कर हमें परस्पर सहानुभूति एवं स्नेह अवश्य रखना चाहिए। इसी तरह हम लिमिटेशंस के भीतर से ग्रोकर सकते हैं।[32]

वे कुंवर सुरेश सिंह के कल्याण को अपने जीवन का ध्येय मानते थे। उन्होंने लिखा—आप मेरे स्नेह को अपने को ऋणी बताते हैं, असल में हूं मैं आपके सनेह का ऋणी। कभी अपने स्नेह को सार्थक मैं कर सका तो उसे सफल समझूंगा।[33]

सच तो यह है कि केवल आप ही के स्नेह और सौहार्द्र का मुझे एक मात्र इस जीवन में अविलम्ब है। आपके और मिसेज सुरेश सिंह के स्नेह पर मुझे इतना अटल विश्वास है कि उसके बारे में कभी मेरे हृदय में प्रश्न ही नहीं उठता। और उसे खो देने की संभावना मेरे लिए संभव ही नहीं हो सकती।[34]

पंत छोटी से छोटी बात के लिए सुरेश सिंह के परिवार पर निर्भर रहे बाद में उनका सारा भार शांति जोशी ने उठा लिया। मिसेज सुरेश सिंह को मेरे लिए लखनऊ से पलंग की चादरें, तौलिया, एक छाता जो भारी न हो। चेरीहुड हैंडिल की मिल सके तो और भी अच्छा है लानी है। आप कहते थे वे सामान खरीदने जायेगी। मुझे पायजामे या लंबे कुर्तों के लिए खादी भी चाहिए। पायजामा के लिए पतली सफेद और कुर्ता के लिए भी पतली सफेद या अच्छी मिल सके तो धारीदार। पर अगर आपके पास इस समय खर्च की कमी हो और सामान ज्यादा खरीदना हो तो खादी न लाइयेगा फिर ले लूंगा। और मेरे पास कहीं से हाल में रुपये भी तो नहीं आ सकते।[35]

अंतर्जीवन से जिनका परिचय नहीं है और जो जीवन को उथले स्तर पर लेते हैं जो काव्य को मात्र शब्दों/बिम्बों/प्रतीकों और शिल्प का जमघट समझते हैं और कवि को मात्र एक टेलैंटिड व्यक्ति मात्र मानते हैं वे उसकी चेतना/उसके विश्वासों/उसकी आस्था और उसके जीवन को लेकर नियति तथा नियति का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
भी नियंत्रण करने वाली ईश्वरीय शक्ति की लीला को नहीं समझ पाते। पंत ने अपने जीवन को उस शक्ति के लीला संकेत को खूब समझा था उसी के इंगित पर चलने की वे कोशिश करते थे। उन्होंने एक पत्र में लिखा—

"भाई, मेरा जी कालाकांकर वापस आने को अभी करता है क्या आप मुझे समझ सकेंगे? आपको मैं बहुत-बहुत प्यार करता हूं। आप भी मुझ पर अयाचित स्पांटेनियत स्नेह रखते हैं यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे आप सा स्नेही आत्मीय सुहृद मिला है। यह सब जानते हुए भी मेरी आत्मा मुझे विवश करती है कि अब मैं गांव में न रहूं। सदैव से मैं अपने जीवन में इस भीतरी अंकुश को मानता आया हूं। दस साल आपके साथ रह चुका हूं। आपको अवश्य ही इसका आभास मिला होगा कि मैं अंतर्जीवन के हाथ का खिलौना हूं। मुझे बड़ा ही कष्ट होगा, भाई, अगर आप मुझे नहीं समझ सकेंगे तो।[36]

इलाहाबाद का उनके मन पर क्या प्रभाव पड़ रहा था और वे किस प्रकार अपनी भावी योजनाओं के लिए वहां रहना अनिवार्य मानते थे इसका विवरण देते हुए उन्होंने कुंवर सुरेश सिंह से आग्रह किया कि वे इलाहाबाद में रहने की उन्हें स्वेच्छा से स्वीकृति देवें।

अक्टूबर के महीने में आपने जिस प्रकार मुझे इलाहाबाद रहने की आज्ञा दी थी। उसी प्रकार अब भी दे दीजिए। इतने रोज मैं इसी असमंजस में बिताता रहा हूं। आपकी प्रसन्न आज्ञा पाकर मैं सुस्थ होकर यहां काम शुरू कर दूंगा। पहाड़ जाने की मेरी इच्छा नहीं। यहां जल्दी ही काम शुरू कर देना चाहता हूं। यहां कालाकांकर का सा आराम जरूर नहीं है, पर माइंड स्टीमुलेटेड रहता है। तरह-तरह के लोगों के विचार जानने को मिलते हैं। लोगों को खूब इंकरजमेंट मिलता है। अक्टूबर में मैं डर कर वहां लौट आया था। अच्छा ही हुआ 'ग्राम्या' लिख ली। पर अब मैं खूब अच्छी तरह समझ गया हूं कि मुझे अपना कार्यक्षेत्र यहीं बनाना है। सब से अच्छा तो यह मेरे लिए होता कि आप भी यहां के रहने वाले होते और मैं निश्चित होकर काम करता, पर वहां से आपको यहां लाना मेरे लिए बड़ा ही स्वार्थपूर्ण होगा, इसलिए मुझे बाहरी और शारीरिक असुविधाओं की परवाह न करके अपना समस्त ध्यान अपने कार्य के पीछे लगा देना चाहिए और मेरे लिए संसार में किसी प्रकार का इन्ज्वायमेंट रह भी नहीं गया है।[37]

उन्होंने बड़ी गंभीरता से लिखा—मेरे सेल्फ रिस्पेक्ट की सेन्स मुझे अपारचुनिस्ट बनने या लाइफ का रास्ता उपयोग करने से रोकती है। सदैव से मैं इसके इशारे पर चला हूं आज 40 पार कर चुकने पर मैं अपने को नहीं बदल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सकता। करीब महीनों भर से सभी प्रकार से इस प्रश्न के सभी पहलुओं पर सोचने के बाद मुझे यही ठीक लग रहा है कि मैं अब यहां रहूं और हैड लांग काम में लगूं।

भाई, रहना मुझे अब यहीं है। यह तो विधाता ने ही मेरे लिए निश्चित कर दिया है, उस सारी प्रोसेस को आपको समझाना मेरी शक्ति से बाहर की बात है, अतः इसे विधाता की इच्छा जानकर मेरे लिए स्वीकार कर लीजिए। आपका मुझ पर जो स्नेह है, वह व्यर्थ नहीं जायेगा, क्योंकि स्नेह कभी भी व्यर्थ नहीं जाता। मैं कहीं भी रहूं सदैव आपके साथ रहूंगा।[38]

पंत जी में अपनी आन्तरिक शक्तियों, प्रवृत्तियों और अपनी सीमा को पहचानने की अपरमित शक्ति थी उन्हें जब विश्वास हो गया कि इलाहाबाद मेरे ध्येय की पूर्ति में सहायक होगा तो फिर वे वहाँ से छोड़कर कभी नहीं गये और इसी को उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र बनाया। पंत में आंतरिक संघर्ष तो मिलता है किंतु उनमें भटकन नहीं थी। यही कारण है उनकी रचनाओं में भी कहीं अंतर्विरोध नहीं मिलता है।

पीछे कहा जा चुका है कि पंत के आंतरिक जीवन के विकास में कालाकांकर और कुंवर सुरेश सिंह तथा उनकी पत्नी के स्नेह का बहुत बड़ा योगदान था। पंत जिस अपनेपन के लिए सदा लालायित रहे कहना न होगा वह अपनापन उन्हें सुरेश दंपत्ति के निश्छल स्नेह में सदा मिला और उसी से प्रेरित और तृप्त होकर वे अपने काम में लगे रहे। पंत के आग्रह करने पर कुंवर सुरेश सिंह ने उन्हें इलाहाबाद में रहने और वहां भी अपना स्नेहिल सहयोग देते रहने का वचन दिया इससे पंत अभिभूत हो गये। उन्होंने अपने एक पत्र में लिखा—

आपका अत्यन्त कृपापूर्ण और स्नेहपूर्ण पत्र पाकर हृदय बहुत हल्का हुआ। इन सब दिनों में जब मैं वहां से आया हूं, मेरे हृदय में यही बात खटक रही थी कि आप मेरे इस प्रकार यहां रहने की बात को किस झंइट में लेंगे, कैसे वह आपके मन में रिएक्ट करेगी। लेकिन आपका मुझ पर असीम स्नेह और कृपा है कि आपने उसका अत्यन्त उदार और वाइस व्यू लेकर मुझे सदैव के लिए अपना ऋणी बना लिया। शायद ऐसे ही मौकों पर ह्यूमन रिलेशन की स्टैन्य इस लाइफ की स्कीम में टैस्ट की जाती है। आपने जो इतने प्रेम के साथ सहयोग देना चाहा है, इसे आपका सौजन्य और ईश्वर की कृपा समझता हूं।[39]

इसी पत्र में पंत ने पुनः अपना विश्लेषण करते हुए जो कुछ लिखा है उससे मानवीय जीवन पर इस सत्य पर प्रकाश पड़ता है कि मनुष्य के मन का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निर्माण परिस्थितियों के दबाव वश भी होता है। फिर उसको नकार कर चलना या उसके अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण बहुत कठिन होता है। कालाकांकर छोड़ने का एक कारण तो वहां आगे बढ़ने की अनुकूल परिस्थिति और वातावरण न पाना था दूसरे सुरेश दंपत्ति से उन्हें बहुत मोह हो गया था जिसे वे एक बंधन सा महसूस करने लगे थे। उन्होंने लिखा है : लेकिन आप लोगों को मैं बहुत ही प्यार करने लग गया था। इसका सब श्रेय अवश्य ही आप लोगों को था। आपका और सीमा का सा स्नेह मैंने कभी आजीवन नहीं पाया था और मिसेज सुरेश सिंह को तो मैं स्वयं ही बहुत प्यार करने लग गया था। उनका सा मृदु-स्वभाव मुझे बहुत अट्रैक्ट करता है और सबसे पहली बात यह है कि आप लोगों ने अपने स्नेह के कारण मेरे सभी लिमिटेशन्स की ओर आंख मूंद कर मुझे एक डमी-गाड की तरह रखा था। इतने प्रबल मोह को छोड़ना मेरे लिए आसान नहीं था पर मेरे भीतर सदैव से ही कर्तव्य की अविराम स्ट्रगल जारी रही है। यह मेरे मन में क्लियर हो गया था कि वहां रहने से मैं फ्यूचर में आप लोगों के लिए ट्रबल क्रियेट कर सकता हूं या अपने लिए ट्रबल क्रिऐट करता—क्योंकि मेरे विचार दिन-पर-दिन प्रबल होते जा रहे थे और मैं वर्ल्ड हाथ-पाँव फैलाना चाहता था आपको याद होगा कि मैं कई साल से आपसे बीच-बीच में कहता रहा कि अभी मेरे माइंड को तैयार होने में 4-5 साल लगेंगे।

इतना लिखने के बाद पंत ने लिखा कि मैंने अपने एक्सपीरेन्स का सदैव सदुपयोग करने की चेष्टा की है, और यद्यपि मुझसे बाहरी साधन सब छिन गये थे पर भीतर से जो कुछ मैं कर सकता था सदैव करता रहा हूं। और भी बहुत से ऐसे इक्सपीरियन्सेजन मुझे हुए हैं कि जिनके बारे में कभी भविष्य में आपको बतलाना ठीक समझूंगा।[40]

कुंवर सुरेश सिंह तथा उनकी पत्नी के प्रति वे सदैव कृतज्ञ रहे। उन्होंने लिखा—आपने मेरी जिस निस्सहायता की स्थिति में मदद की उसे क्या मैं कभी भी भूल सकता हूं। मिसेज सुरेश सिंह का और मेरा तो केवल मन और हृदय तक का स्नेह संबंध है, पर आपको मैं अपने वेरीबीरंग से प्यार करता हूं और अगर मैं किसी योग्य हो गया तो उसका सबसे अधिक प्रेम और सुख आप ही को मिलेगा। सुरेश सिंह, यह मैं खूब अच्छी तरह जानता हूं कि मैंने जानबूझ कर अपने बारे में आपसे कभी कुछ नहीं कहा। मैं सदैव से समय की प्रतीक्षा करता आया हूं इसलिए अब भी काम की बातों के सिवा अधिक कुछ नहीं लिखूंगा। आप लोगों से दूर रहकर मैं अपने को और भी आपके पास पाता हूं।[41]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इलाहाबाद में आकर पंत ने अपना भाग्य अजमाना शुरू किया। जब कभी सुरेश सिंह परेशान हो जाते थे तो पंत उन्हें समझाते हुए लिखते। उन्होंने एक बार लिखा—और फिर लाइफ में किसी के लिए भी गोल्डनरोड नहीं बनी है। सभी को स्ट्रगल कर थ्रू मिस्ट्रैक्स एंड फालोज आगे बढ़ना होता है, मुझमें तो बेवकूफी की मात्रा हद से ज्यादा है—40 साल तक क्या किया कुछ समझ में नहीं आता।[12]

सुरेश दंपत्ति के साथ पंत सचमुच में आत्मिक रूप से जुड़े हुए थे। उन तीनों की एक-दूसरे के बिना कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। पंत ने स्वयं इस बात को अपने कई पत्रों में व्यक्त किया है। मुझे विश्वास था कि आप मुझे भुला नहीं देंगे। आप लोगों को मैं अपना ही समझता हूं, इसी से आपसे मान-अभिमान आदि सभी प्रतिक्रियाएँ आपके संबंध में मेरे हृदय में जागृत होती रहती हैं। अगर मैं कभी किसी योग्य बन सका तो आपका सौहार्द्र हम लोगों के जीवन काल को अतिक्रम करके अधिक चिरस्थायी और लोकोपयोगी बन सकेगा।

पंत को अपनी आन्तरिक प्रेरणाओं और अपने स्वभाव की यथार्थ पहचान थी उन्होंने लिखा—जो व्यक्ति केवल स्नेह की इकाई लेकर इस संसार में आया है, वह सदियों के अंधकार में खोये हुए इस देश में अपनी सच्चाई और अस्तित्व का क्या प्रमाण दे—समझ में नहीं आता है। लेकिन हृदय का संबंध अधिक टिकाऊ होता है और बलीकाल उसकी अधिक समय तक उपेक्षा शायद नहीं कर सकता। जो भी हो, इस समय तो यह सब छायावाद ही है। अस्तु।[13]

कालाकांकर रहते-रहते पंत ऐसा अनुभव करने लगे थे कि वे जैसे अपनी समूची शक्तियों का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। इसलिए इलाहाबाद में आकर उनके मन में जो बातें उठीं उसको उन्होंने सुरेश सिंह को इस प्रकार लिखा—मेरा मन ही ऐसा हो गया है कि मुझे जीवन का अनुभव करने के लिए सिटी लाइफ की जरूरत पड़ने लगी है। यहां अनेक प्रकार की दिक्कतें होते हुए भी जो मेरा मन यहीं रहने का पक्ष ले रहा है, इसका कारण यही है कि चुपचाप बैठे रहने से अच्छा सुसाइड करना मालूम देता है। लाइफ का पूरा-पूरा उपयोग किये बिना मेरे मन में शान्ति नहीं हो सकती।[14]

इलाहाबाद जाकर पंत कुछ अस्वस्थ हो गये। उनका मन भी अशांत हो गया था। शांत चित्त और स्वस्थ होने पर उन्होंने लिखा—आप लोगों का असीम स्नेह, साहचर्य और वहां का आराम और निश्चिन्तता को छोड़ कर जो मुझे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बार-बार इलाहाबाद आना पड़ता है उसका मेरे भीतर के जीवन से अवश्य ही बहुत बड़ा संबंध है। मैंने अपने से बहुत लड़ाई की कि मैं यहां नहीं आऊं पर जैसे मेरे भीतर की कोई शक्ति भय ग्रस्त कर बाध्य कर देती है और मैं इसे ठीक-ठीक समझ रहा हूं।[15]

पंत ने अपने और सुरेश सिंह के संबंधों को कई तरह से व्यक्त किया है। किंतु वे इस लगाव को जितना मन ही मन अनुभव करते थे उतना वाणी से व्यक्त नहीं करते थे। किंतु कभी-कभी उनकी भावना शब्दों का अतिक्रमण कर जाती है और वे उसे व्यक्त करने को व्याकुल हो जाते थे—आपसे मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि आप मेरे इस तरह के व्यवहार से रुष्ट नहीं हो जावें। क्योंकि आप ही केवल ऐसे हैं जो मेरे इस जीवन के रेगिस्तान में एक हरे-भरे ओएसीस की तरह हैं जिसकी और आशा की दृष्टि लगाये मैं अपना रास्ता पार करता हूँ।[16]

इन दिनों पंत गंभीर अकेलेपन से जूझ रहे थे उन्होंने कालाकांकर में अकेलेपन से छुटकारा पाने के लिए अपने को एक तरह से स्वाध्याय में डुबो दिया था किंतु यही प्रक्रिया इलाहाबाद में काम न आई और उन्हें दमघोंटू अकेलेपन ने दबोच लिया। पंत कालाकांकर के निश्िंचत और सुविधापूर्ण वातावरण के अभ्यस्त हो चुके थे। फिर भी नियति की पुकार उन्हें इलाहाबाद खींच लायी थी जिसे अनसुना करना उनके लिए असंभव था। उन्होंने कालाकांकर में रहते समय जिस अकेलेपन का अनुभव किया उस संबंध में उन्होंने लिखा कि कोई भी मनुष्य आत्मिक अकेलेपन को नहीं सह सकता और भूख को नहीं सह सकता जिसे मैं कभी-कभी वहाँ अनुभव कर सकता था। वह मेरी हड्डी-हड्डी को हिला देता था। मैं उसके सामने परास्त होकर पड़ जाता था। इसी से निजात पाने वे इलाहाबाद में आये थे ताकि कर्म संकुलता और रचना के वेग में वे अपने को डुबा सकें और अपनी प्रवृत्तियों का महत्तर लक्ष्यों के लिए उपयोग कर सकें।

पंत अपने आंतरिक और साहित्यिक जीवन की प्रगति में बाधक संबंधों को तोड़ देना चाहते थे और इसी से उन्हें लड़ना पड़ रहा था। उन्होंने लिखा—इस साल मैं अपने को किसी प्रकार भी हो, ऐसे संघर्षो से मुक्त कर लेना चाहता हूं जो कि मेरे साहित्यिक जीवन में बाधा डालते आ रहे हैं, जिनके कारण मैं इधर दो साल से बड़ा क्षुब्ध और अशान्त रहता हूं। आशा है, आपकी सहानुभूति मेरे साथ सदैव बनी रहेगी। यहां भी मैं एक प्रकार से अस्थिर ही हूं पर साथ ही ऐसे प्रयत्नों में भी संलग्न हूं कि जिससे आगे चलकर मेरा पथ सरल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो जाय और मेरी कठिनाइयां कम हो जायं। वहां जो कई बातें सूझती नहीं थीं यहां आकर वह अधिक स्पष्ट हो गयी हैं।[47]

इलाहाबाद आने के पहले पंत ने जो सोचा था यहां आकर लगने लगा कि वे बातें बहुत कठिन हैं। वे कालाकांकर में तो रहना नहीं चाहते थे साथ ही आर्थिक निश्चिन्तता भी चाहते थे और आर्थिक निश्चिन्तता बिना कुंवर सुरेश सिंह की सहायता के संभव नहीं थी। इलाहाबाद आकर उन्होंने सोचा कि यहां किसी काम का प्रबंध हो जाएगा किंतु यहां आकर उन्हें कठोर संघर्ष प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ा इससे उनका विश्वास बार-बार टूट जाता था। अपनी इसी स्थिति का चित्रण उन्होंने एक पत्र में किया है—

वहां (कालाकांकर) में सब प्रकार से अवश्य निश्चिंत होकर रह सकता हूं लेकिन अकेले नहीं रह सकता—इससे मैं चाहता हूं इस कमी को अवश्य किसी प्रकार से भर लूं। वहां जो बातें निश्चिंत रूप से तय कर ली थीं यहां आकर उसमें फिर बदलाव आ गया है। असल में एक कारण यह भी है कि मैं कहीं नहीं जमा। यहां मुझे किसी प्रकार का अभाव है तो है नहीं, साथी लोग भी काफी हैं पर यहां आर्थिक निश्चिंतता का प्रश्न हल होना सरल नहीं—खासकर ऐसे समय मैं। और वहां जिस प्रकार मैं रहता हूं उस प्रकार रहना मेरी शक्ति के बाहर है। इस पहेली को कैसे सुलझाया जाय, समझ में नहीं आ रहा है—आशा है, आप मेरी इस अनिश्चित स्थिति को अत्यंत सहानुभूतिपूर्वक समझने की चेष्टा करेंगे।[48]

बीच-बीच में पंत जी सोचते थे कि अगर सुरेश सिंह यहीं इलाहाबाद में रहने लगते तो कितना अच्छा होता। साथ भी नहीं छूटता और उन लोगों के जीवन में वांछनीय परिवर्तन हो जाता। उन्होंने लिखा—वहां जो जीवन गंगा जी की धारा की तरह अभ्यासवश बह जाता है, यहां वह उर्बर उन्नति कर सकता है। उसका सुख भी बढ़ जाता, सौंदर्य भी। एडवेंचर तो जवान आदमी की ही विशेषता है।[49]

पंत जी सुरेश सिंह की थोड़ी भी उदासीनता नहीं सह पाते थे उन्हें लगता था कहीं वे असंतुष्ट तो नहीं हो गये। कवि होने के कारण और पहाड़ी होने के सबब से भी मैं व्यवहार कुशल हूं। इसी से कभी-कभी डरता हूं कि आप मन ही मन रुष्ट न हो जाएं।[50]

जीवन के प्रतिपंत का एक दार्शनिक भाव जो विकसित हो गया था अनुभव के बल पर जीवन उनके लिए एक गंभीर वास्तविकता बन गया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन्हें सत्य और मिथ्या की अच्छी पहचान हो गयी थी। वे सुरेश दंपत्ति के अक्रत्रिम और अविराम प्रेम और सहानुभूति के प्रति सदैव कृतज्ञ रहे। ये उनके संपर्क के लिए सदा लालायित रहते थे किंतु परिस्थितियों के कारण उनसे दूर रह रहे थे। उनका मानना था—बहुत सी बातें जो आज हमको अनरियल और इंप्रेक्टिकेबल लगती हैं, भविष्य की वह वास्तविकता बन जायंगी और आज की क्षण भंगुर रियल्टी के पाश खुल जायेंगे। यह अनरियल रियल्टी आप और मेरे बीच में भी उसी तरह अपना जाल बिछाये हुए हैं जिस तरह आज कल की दुनिया के बीच में। अपनी छाटी सी बुद्धि से मैं भी इसे समझने का प्रयत्न बराबर करता आ रहा हूं। पर यह जो भी हो—आपका मेरा संबंध सदैव अटूट रहेगा, इस पर मुझे पूर्ण विश्वास है।[51]

पंत जी में सुरेश दंपत्ति के प्रति ही नहीं वे जिस 'नक्षत्र' नामक कॉटेज में रहते हैं उसके प्रति भी उनके मन में बड़ा ममत्व था। उन्होंने लिखा—मुझे भूलियेगा नहीं, मेरे जीवन काल तक 'नक्षत्र' को मेरे ही लिए रख लीजियेगा। कभी-कभी वहां आकर रहूंगा।[52] वे लिखते थे—मैं आपका सदैव का वैसा ही पंत जी हूं और रहेगा। आपके एहसान और स्नेह मुझे बांधे हैं। आप ऐसी बातें कभी न सोचिएगा। आप दोनों को मेरा प्यार और नमस्ते।[53] आप लोगों को मैं कभी नहीं भूल सकता। बहुत बड़ा भाग मेरे जीवन का आप लोगों के साथ बीता है। कभी अवकाश मिलने पर फिर चला आऊंगा।[54]

1955 में पंत कालाकांकर गये। एक लंबे युग की असंख्य सुंदर स्मृतियों से मन उमंग आया। उन लोगों का निश्छल स्नेह पाकर हृदय स्वच्छ हो गया।[55] आपको भूलने की बात तो संभव ही नहीं है—आप मेरे जीवन के अभिन्न अंग रहे हैं।[56]

छोटे-छोटे दुःख-सुख, स्वास्थ्य की चिंता

ऐसा नहीं है कि पंत जी सुरेश दंपत्ति के निश्छल स्नेह और आर्थिक सहायता की ही बात पत्रों में लिखकर कर्तव्य की इतिश्री मान लेते हों एक बड़े भाई और स्नेही बंधु की तरह वे कुंवर सुरेश सिंह / उनकी पत्नी तथा बच्चों के सुख-दुख के बारे में बराबर चिन्तित रहते थे। वे उनके पूरे परिवार के कुशल क्षेम की बराबर जानकारी रखते और उन्हें हिदायतें देते। अगर परिवार पर कोई छोटी-मोटी विपत्ति आ जाती तो विचलित हो जाते और उन्हें धैर्य बंधाने का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
प्रयास करते।

कुंवर सुरेश सिंह को लिखे पत्रों से विदित होता है पंत एक संवेदनशील मानव थे। उनकी संवेदना पशु, पक्षियों/फूलों और लताओं तक फैली थी फिर जिनके स्नेह में वे आजन्म आबद्ध रहे उनके छोटे-छोटे दुख पर विचलित हो जाने में कोई आश्चर्य नहीं।

शिरीष (पुत्र) की तबीयत अच्छी है यह जानकर प्रसन्नता हुई। कुंवर साहब के समाचार शंकर (नौकर) से पूछे थे अब पहले से अच्छे हैं सुनकर हर्ष हुआ।[57] आपकी दिक्कतों का समाचार पाकर कष्ट हुआ। आशा है अब तक माल गुजारी आदि का प्रबंध हो गया होगा और अब इस तरह की दुश्चिन्ताओं से मुक्त हो गये होंगे।[58]

नंदू बाबू ने लिखा है कि वहां टीले पर सब लताएं और चंदन के वृक्ष वगैरह सूख गये हैं। न जाने क्या कारण है।[59] मिसेज सुरेश सिंह का स्वास्थ्य वहां अवश्य इम्प्रूफ कर रहा होगा।[60] श्रीमान राजा साहब का अस्वस्थता को पढ़कर चिंता हुई। आशा है अब वह पहले से स्वस्थ होंगे। आपकी मुसीबतों का समाचार पढ़ कर दुख हुआ।[61] नंदू बाबू ने लिखा है काटेज के क्रीपर्स, सेंडल्ट्री वगैरह सब सूख गये हैं शायद पानी नहीं दिया गया होगा। आप वहां को पत्र लिखें तो लिख दें कि काली बिल्ली के बच्चों को मरने न दें। अच्छी तरह रखें। उसकी मुझे यहां भी याद आती है।[62]

आप अपने बच्चों को सदैव साधारण स्थिति के बच्चों की तरह पालियेगा। वे कष्ट सहिष्णु हों, अभाव से लड़ना सीख सकें, हम लोगों की तरह हैल्फलेसनेस न फील करें।[63] उनका मत था कि बच्चों को ऐश आराम में नहीं पलने देना चाहिए। क्योंकि इससे उनकी आत्मा निर्बल हो जाती है हमारी संस्कृति में सौंदर्य है, माधुर्य है किंतु शक्ति नहीं है क्योंकि जाहिलपन का मुकाबला करने का हमें अवसर ही नहीं दिया जाता।[64]

कुंवर सुरेश सिंह की कठिनाई को पंत अपनी कठिनाई समझते थे। इसलिए वे उनकी परेशानी से दुखी हो उठते थे। उन्होंने अब लिखा—आपकी अव्यवस्थित मानसिक स्थिति की बात पढ़ कर बहुत दुखी हूं। मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वह आपको मानसिक शांति दें और आपके स्वभाव और प्रवृत्तियों के अनुरूप आपके जीवन को और सफल बनावें।[65] आप अपने मन से सब प्रकार की उदासीन और निराशा को मार भगाइये। यदि मेरा रीडिंग ठीक है तो आप धीरे-धीरे अपने को बहुत स्वस्थ और प्रोत्साहित पाइयेगा।[66] आपका

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वास्थ्य अब अच्छा होगा एक्सरे अवश्य शीघ्र करवा लीजिए।[67]

कालाकांकर राजघराने का भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महत् सहयोग रहा है। 1941 में कुंवर सुरेश सिंह को ब्रिटिश सरकार ने गिरफ्तार कर लिया। प्रकाशवती अकेली रह गयी तब तक पंत कालाकांकर से इलाहाबाद जा चुके थे। सुरेश सिंह की गिरफ्तारी से पंत विचलित हो गये। उन्होंने प्रकाशवती को लिखा : मुझे बड़ा दुख है भैया को अकारण ही हमारी सरकार के संदेह का शिकार बनना पड़ा, देश भर में कोई ऐसा आदमी हो जिसका कुछ प्रभाव हो और जिसे आत्म सम्मान हो उसकी यही दशा हो रही है। आपसे मेरी प्रार्थना है कि आप किसी प्रकार दुखी न होवें। लोगों ने पंत पर स्वतंत्रता संग्राम में भाग न लेकर एक अच्छा अवसर हाथ से चले जाने देने का आरोप लगाया है किंतु हरेक की अपनी-अपनी प्रवृत्ति होती है और अपने-अपने ढंग से व्यक्ति देश की सेवा करता है। इसी पत्र का अगला अंश देश के प्रति पंत की भावना प्रकट करता है : बल्कि जो हमारा देश व्यापी दुख है उसमें शरीक हो सकने का शुभ अवसर पाकर अपने को गौरवान्वित समझें। ईश्वर सब कुशल करेंगे। ऐसी विश्वव्यापी क्रान्तियों के लिए आप अकेले दुखी न होइयेगा। ईश्वर आपको बहुत बहुत साहस और शक्ति दे।[68] आपकी परेशानी के बोझ से दुखी हूं। मेरी अविराम सहानुभूति आपके साथ है।[69] यह जानकर दुखी हूं कि कुंवर साहब काफी दुर्बल हो गये हैं उन्हें पांचवें छठवें दर्द हो जाता है।[70] आपकी परेशानियों की बातें जानकर खिन्न हूं। इधर आज 20 रोज हुए मैं भी चारपायी पर लेटा हूं। मोटर के दरवाजे को खोलने में मेरे घुटने में चोट आ गयी और वह ऐसी खराब जगह पर लगी कि पांव ही नहीं हिलता।[71] कुंवर सुरेश सिंह का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता था इससे पंत बहुत चिंतित रहते थे इससे वे अपने पत्रों में इलाज करवाने, ठीक से रहने का निर्देश देते थे। आपका स्वास्थ्य नहीं सुधर रहा है यह जानकर मैं अत्यन्त क्षुब्ध हूं। अच्छा होता आप दिल्ली जाकर अपना ट्रीटमेंट करवा लेते। डाक्टर सहाब से आपके बारे में आपकी बातें हुई थीं पर चिकित्सा से लाभ उठाने का मतलब होता है उनके पास रहना।[72] आपका स्वास्थ्य धीरे-धीरे सुधर रहा है यह जानकर अपार हर्ष हुआ।[73]

1944-45 में पंत जी बहुत बीमार रहे। कुंवर सुरेश सिंह साहब के स्वास्थ्य के साथ साथ कभी कभी वे अपने स्वास्थ्य के बारे में भी लिखा करते थे। आठ महीने की बीमारी ने मुझे अत्यन्त दुर्बल बना दिया है। स्नायुओं में तो जैसे जीवन ही नहीं रह गया है।[74] पंत जी बीच-बीच में सुरेश सिंह को व्यावहारिक हिदायतें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
भी देते थे।

राजा साहब से मेल-जोल बढ़ाकर रहिएगा, आप उनसे बड़े हैं, उनसे गलती हो जाना बहुत ही स्वाभाविक है पर आप केवल उनकी हितचिन्तता की भावना से उन्हें सलाह देते रहिएगा। आजकल की दुनिया में विरोध के कारण कैसा दानवी जीवन हो गया है, यह आपसे छिपा नहीं है। खूब अच्छी तरह रहिए। परंतु और सर्वहित भावना से।

मिसेज सुरेश सिंह से स्वास्थ्य की रक्षा करने को कहिए—फ्रूटजूस खूब लें। और बटर मिल्क का भी खूब प्रयोग करें। सुबह को थोड़ा-बहुत घूमने निकल जाएं। मैं खुद बीमार पड़कर स्वास्थ्य का मूल्य समझने लगा हूं।[75] उन्होंने एक पत्र में अल्मोड़ा से लिखा—यहां अबके भाई की मृत्यु के कारण बहुत सूना लग रहा है। पर गर्मी के भय से जल्दी यहां से जा भी नहीं सकता। आपका पत्र पाकर बड़ी चिंता हुई। ईश्वर की कृपा से अब आप मृत्यु के मुंह से सकुशल बाहर निकल आये हैं, यह मानकर अपार हर्ष भी हुआ। इस वक्त न जाने ऐसी ही बातें क्यों सुनने को मिलती हैं। आशा है अपने स्वास्थ्य का खूब यत्न करेंगे।[76]

सुरेश सिंह जी अनियमित आहार-बिहार के कारण अक्सर बीमार रहा करते थे। पंत जी उन्हें नियमित जीवन और खान-पान में परिवर्तन के लिए बराबर लिखते रहते थे। आपको स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। अपने सिस्टम का अध्ययन कर तदनुसार भोजन-व्यायाम आदि की व्यवस्था करनी चाहिए। आलू, मिठाई, चावल, चीनी, घी, मक्खन बहुत थोड़ा नहीं के बराबर खायें। गोश्त उबला हुआ लहसुन, प्याज के साथ तथा पोच्ड अंडा ही थोड़ा टमाटर के साथ मुख्यतः खाना चाहिए। जैसे यौगिक व्यायाम आसन आदि से भी ऐसी अवस्था में बड़ा लाभ होता है।[77]

फरवरी-मार्च 1958 में कुंवर सुरेश सिंह का स्वास्थ्य काफी गिर गया। पंत जी इससे बहुत चिंतित हो गये। उन्होंने अपने लंबे-लंबे पत्रों में स्वास्थ्य की हिदायतें और मनोबल न गिराने को कहा। असल में इसी समय उनका कहानी संग्रह 'असली मुर्गाछाप' निकला था। इसका समर्पण उन्होंने अपनी पत्नी प्रकाशवती का जिन करुण शब्दों में किया था उससे ऐसा लगता था जैसे वे अपने जीवन से निराश हो गये हैं। इस पर पंत जी ने उन्हें अत्यंत सांत्वना पूर्ण पत्र लिखा : समर्पण में आपने जिन करुण मर्मस्पर्शी शब्दों में श्रीमत सुरेश सिंह को याद किया है, उससे बड़ी व्यथा हुई। वैसे भी आपको ऐसा निराश नहीं होना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
चाहिए। यदि आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो लखनऊ, प्रयाग, बम्बई जहां कहीं भी जाकर अपना प्रापर ट्रीटमेंट करवा लें। आप अभी जवान हो, मेरी तुलना में, अपने को समझो—रोग घर कर लेता है तो उससे युद्ध करना धर्म है। मैंने स्वयं धर्मराज के दो निमंत्रणों को सविनय लौटाया है।[78] उन्होंने अपनी बीमारी का हाल लिखकर उन्हें धैर्य पूर्वक रोग से लड़ने और हिम्मत न हारने के लिए कहा—मुझे 3-4 महीने से बड़े सिवियर विण्ड कालिक के वीकली अटैक होने लगे हैं जब दर्द उठता है तो व्याकुल हो उठता हूं--बदन से पसीना निकलता है हमेशा रात को अटैक होता है। फिर रात भर सो नहीं पाता जब तक डाक्टर आकर इंजेक्शन न दे जाय। इधर कुछ थोड़ा फायदा है। खाना पीना पहिले से डाइबिटीज से छूट गया था अब और भी छूट गया है। पर मैं अपनी ओर से निराश नहीं हूं—यथाशक्ति उपचार करवा रहा हूं।[79]

आपको भी एक बार सब काम छोड़ कर अवश्य अपना थारोट्रीटमेंट करवा लेना चाहिए। भोजन की व्यवस्था बिलकुल बदल देनी चाहिए। प्राकृतिक चिकित्सा से भी लाभ हो सकता है। आशा है मिसेज सुरेश सिंह अवश्य ध्यान देंगी। आशा है, आप समस्त मनोबल संग्रह करके अवश्य प्राणपण चिकित्सा कर रोग से मुक्ति पा सकेंगे। आपकी उम्र में कोई भी हाथ-पांव ढीले नहीं करता। कृपया अवश्य तुरंत अपने स्वास्थ्य पर ध्यान दीजिए।[80] पंत जी ने यह पत्र 5-3-58 को लिखा था और 10-3-58 के पत्र में तो उन्होंने विस्तार से सुरेश सिंह को स्वास्थ्य की हिदायें दीं। यह पत्र कुंवर सुरेश सिंह की दिनचर्या के अलावा जीवन के प्रति पंत जी के दृष्टिकोण साथ में उनके स्वास्थ्य संबंधी गंभीर ज्ञान को प्रकट करता है—आप मेरे स्वास्थ्य की तो चिंता करें नहीं मैं बहुत कुशल डाक्टर के हाथ में हूं और खूब संयम तथा मिताहार पर रहता हूं।

पर आपने अपना स्वास्थ्य सालों से अपनी असावधानी के कारण निगलेट कर दिया है और अब भी निरुत्साप्रद बातें लिखते हैं। आज के युग में रोग क्या मत्यु पर भी मनुष्य अपने कृतसंकल्प (दृढ़ प्रयत्न) तथा वैज्ञानिक उपचार से विजय पाने की आशा रखता है। आप तो उम्र में भी मुझसे बहुत छोटे हैं आपको अवश्य स्वास्थ्य की ओर उपेक्षा करने का साहस नहीं करना चाहिए। आशा है आप मेरे अनुरोध पर अवश्य ध्यान देंगे।

फिर उन्होंने लखनऊ को इलाहाबाद से अच्छा उपचार केंद्र बताते हुए दिल्ली, बंबई, कलकत्ता कहीं भी प्रॉपर इलाज कराने के लिए कहा। पंत स्वयं भी अच्छे होमियोपैथ थे। उन्होंने उसका भी सुझाव देते हुए लिखा—होमयोपैथी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भी क्रानिक केसेज में अच्छी रहती है पर होमियोपैथी के लिए चाहिए बेहद लगन, धीरज, परहेज : पान तम्बाकू, सिगरेट, परफयूमरी, इसपाइसजी फूड इक्सटरा का। और (लखनऊ) के डॉ. श्रीवास्तव बड़े इसट्रिक्ट हैं उनका कहा अक्षरशः पालन होता है। आप और रुचि प्रकट करें तो मैं डॉ. श्रीवास्तव का पता लिखूं। वैसे एलोपैथी आपके लिए आसान है।[81]

लोगों को शायद पता नहीं होगा कि पंत बहुत ज्योतिषी थे। इसी पत्र में उन्होंने हंसी-हंसी में लिखा वह आगे चलकर सत्य-सत्य घटित हुआ। उन्होंने लिखा : मैं चाहता हूं 3-4 दशक तो अभी अवश्य जीयें, 3 दशक अत्यंत आवश्यक है। मैं 58 पर हूं। 2 दशक अपने लिए ही उम्मीद तथा प्रयत्न करना चाहता हूं। काम तो भगवान जो कुछ करायेंगे करना चाहता हूं। आशा है आप मेरे अनुरोध की अवश्य रक्षा करेंगे। मनुष्य को तो जीवन प्रेमी होना चाहिए दुख निराशा से ऊपर रहना चाहिए।[82]

पंत के इस पत्र पर टिप्पणी करते हुए स्वयं कुंवर सिंह ने लिखा है : कैसी अद्‌भुत भविष्य वाणी उनकी अपने लिए ठीक दो दशक ही वे जिये। कैसा आश्चर्य है? 2 दशक पहले ही जैसे वे अपने जीवन के अंत का दृश्य देख रहे थे।[83]

और कुंवर सुरेश सिंह से संबंधित भविष्य वाणी का क्या हुआ। वह भविष्यवाणी भी सत्य हुई। पंत जी ने लिखा था—मैं चाहता हूं कि आप 3-4 दशक तो अभी अवश्य जियें, 3 दशक तो अत्यंत आवश्यक है उनका यह लिखना भी सत्य साबित हुआ। कुंवर सुरेश सिंह ठीक 3 दशक बाद अभी पिछले दिनों 7 जनवरी, 1988 को परलोक सिधार गए। उन्होंने 'असली मुर्गाछाप' अपने कहानी संग्रह के समर्पण में प्रकाशवती को लिखा था—जीवन की गाड़ी कितने दिनों तक हम दोनों मारपीट कर खींच लाये, इसी को गनीमत समझना चाहिए, लेकिन श्री चित्रगुप्त जी महाराज की आंखों में अब ज्यादा धूल झोंकना मुमकिन नहीं जान पड़ता।

मेरे न रहने पर ये कहानियां तुम्हारा जी बहलाने में कुछ न कुछ सहायक होगी, इसी आशा से यह संग्रह तुम्हें समर्पित कर रहा हूं। आशा है तुम इसे स्वीकार करोगी।

—तुम्हारा सुरेश सिंह

हो सकता है कुंवर सुरेश सिंह ने भी 3 दशक बाद अपनी पत्नी को छोड़ कर उस लोक की यात्रा करने की आहट सुन ली हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंत जी के हृदय का तार कुंवर सुरेश सिंह से जुड़ा हुआ था। उनकी माता जी के निधन पर उन्होंने लिखा : श्री पूजनीया माता जी के स्वर्गवास के समाचार को पढ़ कर बड़ा दुख हुआ। वैसे वह कभी से अस्वस्थ थी, पर फिर भी पूज्यनीय जनों का विछोह बड़ा दुखप्रद होता है। आपके ऊपर तो उनका वरदहस्त रहा करता था, अब आपको सचमुच ही बड़ा सूनापन लग रहा होगा। मेरी हार्दिक संवेदना ग्रहण करें।[84] किंतु उनकी स्वास्थ्य के प्रद लापरवाही के बारे में वे उन्हें सदा सावधान करते थे। आप अपने स्वास्थ्य के बारे में बड़े असावधान हो गये हैं, यह ठीक नहीं है। मिसेज सुरेश सिंह से भी मेरा अनुरोध है कि आपको असावधान न रहने दें।[85]

10-3-70 के पत्र में उन्होंने हिदायतें देते हुए लिखा—मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि अब आप ड्रिंक करना बिलकुल छोड़ दें। एक बूंद एलकोहल घातक सिद्ध हो सकता है। आप स्ट्रांगविल के व्यक्तियों में हैं।

एक पत्र में उन्होंने पुनः लिखा—आप शैय्याग्रस्त हैं, जानकर अच्छा नहीं लगा। मनुष्य को अपने जीवन की रक्षा करने के लिए कोई भी प्रयत्न करने से आना कानी नहीं करनी चाहिए। आपका जीवन कालाकांकर के ही लिए नहीं, हिंदी के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। वैसे आपको सभी तरह के संयम पूर्वक रहना चाहिए। हमें बीमार पड़ने का कोई अधिकार नहीं—हम अपनी ही गलती से अस्वस्थ हो जाते हैं जीवन को नियमित बनाना प्रौढ़ावस्था में आवश्यक हो जाता है, क्योंकि जब देह विकास रुक जाता है। पूर्व अर्जित शक्ति पर ही वह निर्भर रहती है।[86]

संदर्भ

1. महापुरुषों की खोज में बनारसीदास चतुर्वेदी, पृ. 205
2. पद्मसिंह शर्मा के पत्र-चिट्ठियों का महत्त्व, हरिशंकर शर्मा, पृ. 7
3. पंत जी और कालाकांकर, पृ. 6
4. वही, पृ. 7
5. वही, पृ. 8
6. वही, पृ. 9
7. वही, पृ. 9
8. वही, प्रकाशकीय, पृ. 61

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9. वही, पृ. 83
10. वही,
11. वही, पृ. 85
12. वही
13. वही, 93
14. वही, 94
15. वही, 112
16. वही, पृ. 121
17. वही, पृ. 130
18. वही, पृ. 145
19. वही
20. वही, 152
21. वही, पृ. 167
22. वही 96
23. वही, पृ. 96
24. वही, पृ. 97
25. वही, पृ. 97
26. वही, पृ. 104
27. वही, पृ. 109
28. वही, पृ. 110
29. वही
30. वही, पृ. 114
31. वही
32. वही, पृ 115
33. वही, पृ. 115
34. वही
35. वही
36. वही, पृ. 132
37. वही, पृ. 133
38. वही, पृ. 133
39. वही, पृ. 136
40. वही, पृ. 136
41. वही, पृ. 137
42. वही, पृ. 137
43. वही, पृ. 146
44. वही
45. वही, पृ. 156
46. वही
47. वही, पृ. 176
48. वही
49. वही, पृ. 186
50. वही, पृ. 187
51. वही, पृ. 192
52. वही, पृ. 192
53. वही, पृ. 195
54. वही, पृ. 97
55. वही, पृ. 238
56. वही, पृ. 281
57. वही, पृ. 89
58. वही, पृ. 93
59. वही, पृ. 93
60. वही, पृ. 94
61. वही, पृ. 95
62. वही
63. वही, पृ. 104
64. वही, पृ. 105
65. वही, पृ. 137
66. वही, पृ. 140
67. वही, पृ. 147
68. वही, पृ. 160-61
69. वही, पृ. 163
70. वही, पृ. 164

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

71. वही, पृ. 174
72. वही, पृ. 192
73. वही, पृ. 203
74. वही, पृ. 207-8
75. वही, पृ. 208
76. वही, पृ. 240
77. वही, पृ. 250
78. वही, पृ. 252
79. वही
80. वही
81. वही, पृ. 253
82. वही, पृ. 254
83. वही, पृ. 76
84. वही, पृ. 256
85. वही, पृ. 259
86. वही, पृ. 318

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंत : पत्रकारिता तथा अन्य सन्दर्भ

पंत के पत्रों से पता चलता है कि उनकी रुचि साहित्यिक पत्रकारिता में थी। उन्होंने 'रूपाभ' नामक स्वयं एक पत्र निकाला और सुरेश सिंह द्वारा निकाले गये सब पत्रों को अपना सहयोग दिया तथा उनमें रुचि ली। कुंवर सुरेश ने लिखा है : मैं उन दिनों कालाकांकर से 'कुमार' नाम का एक बालोपयोगी पत्र निकालता था जिसके संपादन में श्री पंत जी मेरी बहुत सहायता करते थे। उन्होंने कुमार के लिए 'मुकुल'—नाम से कई लेख और कविताएं भी लिखीं। 'सुश्री शब्द भी' आकाशवाणी की तरह उन्हीं की देन है। 'कुमार' की लेखिकाओं के लिए 'श्री' के जोड़ का कोई शब्द नहीं सूझ रहा था। श्री पंत जी से पूछने पर उन्होंने बहनों के नाम के आगे 'सुश्री' शब्द लगाने को कहा जो आज इतना लोकप्रिय हो गया है।[1]

कुंवर सुरेश सिंह ने सन् 38 में पुनः 'कुमार' का प्रकाशन आरंभ किया। इसी समय पंत ने नरेंद्र शर्मा को सहकारी संपादक बना कर प्रयोग में 'रूपाभ' नामक एक मासिक पत्र निकाला। 'रूपाभ' का प्रथम अंक जुलाई, 1938 में निकाला था। इसके कुल 11 अंक निकल पाये। बाद में द्वितीय विश्वयुद्ध तथा अन्य आर्थिक कठिनाइयों के कारण 'रूपाभ' और 'कुमार' दोनों का प्रकाशन बंद कर देना पड़ा। कुंवर सुरेश सिंह ने इस संदर्भ में लिखा है : इन दोनों मासिक पत्रों को बंद करने का निर्णय इस लिए भी लेना पड़ा कि हम दोनों में पत्र चलाने का न तो अनुभव था और न व्यावसायिक दृष्टिकोण ही। पत्र बिना विज्ञापन के नहीं चल सकते। यह तो हम लोग जानते थे लेकिन विज्ञापन कैसे प्राप्त किये जावें। इसका अनुभव किसी को भी न था। फिर 'रूपाभ' का प्रकाशन हिंदी संसार का एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग था। 'रूपाभ' का उद्देश्य सामाजिक चेतना को जन जागरण की ओर प्रेरित करना तथा लोक कल्याण को वाणी प्रदान करना था। यह प्रगतिशील मासिक अल्प जीवी होने पर भी अपने इस उद्देश्य में सफल रहा, यही क्या कम है।[2]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुंवर सुरेश सिंह और पंत ने जो पत्र निकाले उनके संबंध में विभिन्न संदर्भ तथा उनके बारे में पंत जी की चिन्ता कुंवर सुरेश सिंह को लिखे पत्रों में इस्ततः बिखरे पड़े हैं जिन पर विचार पत्रकारिता और पंत के संबंध में बहूत उपयोगी होगा।

''सुनता हूं आप तथा श्रीयुत् रामनरेश त्रिपाठी जी एक बालोपयोगी मासिक निकाल रहे हैं शायद 'वानर' नाम से इसका विज्ञापन 'द लीडर' में पढ़ा था–यह बात कहां तक सत्य है, कृपया लिखिएगा–शायद इस विषय में मैं एक दो बातें आपको लिखूं।''[3]

अपने दूसरे पत्र में उन्होंने लिखा, बालोपयोगी पत्र निकालने का आपका प्रयत्न बड़ा स्तुत्य है। मेरी इसमें हार्दिक सहानुभूति है। जुलाई के प्रथम सप्ताह में उसका प्रथम अंक देखने को मिलेगा तभी आपके उद्देश्यों का पता चलेगा। उसके बाद मैं भी अपनी अल्प सम्मति भेजने का साहस करूंगा वही ठीक भी होगा। मैं उत्सुकता पूर्वक उसके आने की बाट देखूंगा।[4]

एक पत्र में वे लिखते हैं–आप आजकल 'बानर' द्वितीय अंक की तैयारी में व्यस्त होंगे। आशा है आप नवीन अंक को और भी रोचक तथा सुंदर बनायेंगे।[5]

असल में 'बानर' नामक बालोपयोगी पत्र निकालने की योजना पं. रामनरेश त्रिपाठी की थी और उसके संपादन का भार उन्होंने कुंवर सुरेश सिंह पर डाला था। कुंवर सुरेश सिंह श्री त्रिपाठी जी को बहुत मानते थे और ग्राम गीतों के संकलन में उन्होंने उनकी बहुत मदद की थी। कुंवर सुरेश सिंह ने लिखा है : सन् 1930 ई. में मैं जेल से छूटा तो एक दिन पं. रामनरेश त्रिपाठी जी से मिलने प्रयाग गया, क्योंकि त्रिपाठी मुझसे मिलने जेल में कई बार आये थे। उन्होंने 'बानर' नाम का एक बालोपयोगी पत्र निकालने की योजना बनायी थी। उस दिन उन्होंने मुझे अपनी वही योजना दिखाकर 'बानर' के संपादन का भार लेने को कहा, जिसे मैंने बड़ी खुशी से स्वीकार कर लिया।

उसके कुछ अंक निकले थे कि श्री पंत जी कालाकांकर में रहने के लिए आ गये। उनसे 'बानर' के संपादन में बहुत सहायता मिलती थी।[6] देवदूतों के रंगीन चित्र में बने घंटे पर लिखित पंत जी की कविता के साथ रंगीन चित्र न छापने पर कुंवर सुरेश सिंह ने उस पत्र से अपना संबंध विच्छेद कर लिया और 'कुमार' नामक अपना पत्र छापने की योजना बनायी इसमें भी पंत ही उन्हें पूरा सहयोग करते थे। उन्होंने लिखा आज दोपहर को यहां 'फस्ट एण्ड' का नवीन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
संस्करण देखने को मिला। मालूम हुआ कि उस 1976 के पुराने संस्करण से बहुत ज्यादा बदलाव उसमें हो गये हैं इसलिए मैं समझता हूं कि यदि आप नवीन संस्करण से 'कुमार' के लिए अनुदित करावें तो अच्छा हो कविताएं मैं यथा संभव भेज दूंगा। सियारामशरण गुप्त और श्री नाथ सिंह जी से कविताएं अवश्य मंगवा लीजिएगा। त्रिपाठी जी ने आपका संबंध-विच्छेद (बानर से) चिरयफुली टेक किया या नहीं, यह जानने को उत्सुक हूं।[7]

'कुमार' के बारे में पंत जी बहुत चिंता करते थे यहां तक कि उसके ग्राहक भी उन्होंने बनाये थे 'कुमार' के 10 ग्राहक बन गये अच्छा हुआ। 2 ग्राहक सीमा बनाना चाहती है। अगले पत्र के साथ एक ग्राहकों की लिस्ट मैं भी भेजूंगा।

श्रीमान् राजा साहब से 'कुमार' के विषय में क्या-क्या बातें हुईं कृपया लिखिएगा।[8]

कविताएं 'कुमार' के लिए न भेज सका यहां लिखने का मौका देते ही नहीं। हर वक्त साथ रहते हैं माइंड कान्सेंट्रेट करने का अवकाश ही नहीं मिलता। कटिंग मशीन भी मंगवा ली जा रही है। यह अच्छा ही हुआ।

ग्राहकों के लिए 1.50 कर देना अधिक अच्छा शायद नहीं हुआ क्योंकि अगले साल से वे सेफली अपने को अलग भी कर सकते हैं। पर ग्राहक जिस तरह बढ़ रहे हैं वह बड़ा ही होपफुल साइन है। नया टाइप कितनी तरह का आया। मैटर की ऐरे और डिस्पले खूब बढ़िया कीजिएगा। निर्मल जी से सहायता लीजिएगा।[9]

आर्थिक कठिनाइयों के कारण 'कुमार' जब बंद कर देना पड़ा तो पंत ने प्रयाग से पुनः निकालने का प्रयास किया सोचता हूं 'मैं प्रयाग से 'कुमार' को फिर से निकालूं।

इंडियन प्रेस वाले फिनान्स करेंगे मैं ऐज ऐन एडीटर रहूंगा उसका स्टैंडर्ड कुछ रेज कर देने पर और जोर से वह शीघ्र ही स्टुडेंट वर्ल्ड में पुश इन किया जा सकता है एवं सेल्फ सपोर्टिंग बन सकता है। मेरी आजीविका का उपक्रम भी इससे हो जावेगा।

उन्होंने इच्छा प्रकट की। क्या आप कृपा कर 'कुमार' को उसके सब पैरा फरनेलिया ब्लाक्स, सब्सग्राइवर्स रजिस्टर के साथ मुझे प्रदान कर सकेंगे। आपका स्नेह भाजन होने के कारण उसका सबसे बड़ा अधिकारी मैं ही तो हूं। आप भी उसे पुनः जीवित देखकर प्रसन्न होंगे।[10]

कुमार निकला फिर भी परेशानियों का सिलसिला टूटा नहीं। वे दीक्षित

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेस से 'कुमार' निकलवाते थे। वे अपनी परेशानियों में फंसे थे। अपनी लंबी राम कहानी का ही रोना रोते थे। कागज का भी टोटा होने से 'कुमार' समय पर नहीं निकल पाता था। पंत ने लिखा—'कुमार' के लिए कागज नहीं मिल रहा है। 'कुमार' के प्रूफ मैंने यहां भेजवा देने को कह दिया। एच. बागची के पास 'वंडर वैल्यू' और वायज का एडवरटिजमेंट भेज देने को भी कह दिया है।[11]

26-7-35 के पत्र में पंत लिखते हैं—दीक्षित प्रेस के संबंध में 'कुमार' के काम सब ठीक तरह से हो जायेंगे। संपादकीय लिख लिया जाएगा। और भी मेरे योग्य काम लिखें।

ब्लाक रजिस्टर्ड और छपे हुए ऐड्रेसेज आपके पास भेज देने को कह दिया है। कल सुबह वे लोग प्रूफ लेकर आएंगे, फिर रिमाइंडर भेज दूंगा।

पत्र निकालने में कितने झंझट होते हैं, यह इन पत्रों में बखूबी है। पेपर वालों ने पेपर देना रिफ्यूज कर दिया था, इसी से दीक्षित प्रेस वालों ने अपनी ओर से खरीद लिया। आप लखनऊ जायें तो चैक उनसे जरूर ले लें और 800/-800/- दोनों को प्रेस और पेपर वालों को अगले महीने के शुरू में अवश्य देने की कोशिश करें।[12]

जब कुंवर सुरेश सिंह 'कुमार' नामक पत्र निकाल रहे थे उसी समय पंत ने प्रयाग से 'रूपाभ' नामक पत्र निकाला था। इस संदर्भ में पंत की जीवनीकार शांति जोशी ने कई तथ्यों का उल्लेख किया है। 'रूपाभ' 1938 में प्रयाग से निकलना प्रारंभ हुआ। इसका आर्थिक पक्ष कुंवर सुरेश सिंह देखते थे। यह प्रगतिशील मासिक था। कवि नरेंद्र शर्मा इसके सहायक संपादक थे। प्रथम अंक जुलाई, 1938 में निकला और 11 अंक निकल कर यह बंद हो गया। 'रूपाभ' की विशिष्टिता को रेखांकित करते हुए शांति जोशी ने लिखा है—पत्रकारिता में उस साहित्यिक मापदंड को निर्धारित किया जिसका अभी संभवतः कोई अतिक्रमण नहीं कर पाया तथा साथ ही अप्रत्यक्ष रूप उसने लोक रुचि को भी प्रभावित किया।[13] सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना को जन जागरण का अंग बनाना उसका लक्ष्य आज भी उसकी प्रतियों में सुरक्षित है। 'रूपाभ' का संपादकीय भी बहुत चर्चा का विषय रहता था। उसमें पंत का छायावाद विरोधी जन चेतना उन्मुख प्रगतिवादी दृष्टिकोण रहता था।

'रूपाभ' की प्रशंसा करते हुए प्रकाशचंद गुप्त ने इसे हिंदी पत्रकार संसार की एक महत्त्वपूर्ण घटना माना। उस समय का सभी समस्त साहित्य—कविता, कहानी, आलोचना इसमें प्रकाशित हो रहा था।[14] जगदीशचंद्र माथुर ने स्मृति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
चित्र (पृ. 177) में अपना मत व्यक्त करते हुए कहा कि 'रूपाभ' के आभिजात्य और गरिमा ने उन दिनों हिंदी मासिक साहित्य को एक नया अनुभव दिया। शुद्ध साहित्यिक, सांस्कृतिक परंपरा की नींव 'रूपाभ' ने डाली।[15] डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार 'रूपाभ' ने छायावाद के अवसान काल में साहित्य को नयी दिशा की ओर प्रेरित किया।[16]

'रूपाभ' के प्रकाशन में क्या कठिनाई होती थी इसमें पंत को कितना खटना पड़ता था इसके प्रमाण उनके पत्रों में सुरक्षित हैं। उन्होंने एक पत्र में लिखा है कि यहां हमने 'रूपाभ' के लिए कागज का प्रबंध कर लिया है उसका बिल इस महीने के अंत तक चुकाना पड़ेगा।

अनुभव होने से 'रूपाभ' के प्रूफ रीडिंग आदि में काफी प्रयास करना पड़ रहा है आज बड़ी मुश्किल से पहले फार्म का प्रिंटिंग आर्डर देख पाया हूं। लेकिन 'रूपाभ' काफी अच्छा निकल रहा है। मैटर भी पहले अंक का अच्छा बन पड़ा है। यही संतोष है।[17] 26-27 तक 'रूपाभ' छप जाएगा। रूपाभ बहुत अच्छा निकल रहा है। उसकी सामग्री भी बड़ी अच्छी है। आप देख कर प्रसन्न होइएगा।[18] ऐसा मेरा विश्वास है। श्रीमती सुरेश सिंह को पंत ने 22-6-38 के पंत्र में 'रूपाभ' के रजिस्ट्रेशन तथा उसके डिस्पेच के लिए 2-3 आदमियों की आवश्यकता के संबंध में लिखा। उन्होंने यह भी जानकारी चाही कि 'रूपाभ' के रेपर्स गंगा पुस्तक माला वालों ने छापकर कालाकांकर भेज दिये होंगे। उन्होंने 29-5-38 के पत्र में लिखा 'रूपाभ' कल सुबह तक छप जायेगा। परसों तक तैयार भी हो जायेगा। यहां सुनने में आया है कि डाकखाने के नये नियमों के अनुसार रजिस्टरी करने में 2 सप्ताह से कम नहीं लगेंगे। अतः अब इरादा है कि अंक की 100-200 प्रतियां बिना रजिस्टरी करवाये ही ग्राहकों तथा पत्र-पत्रिकाओं के पास भेज दी जाय।[19]

'रूपाभ' की छोटी सी छोटी चिंता पंत जी को करनी पड़ती थी। 'रूपाभ' को डिस्पेच करने के लिए आदमी भी पेपर व पत्रों का रजिस्टर लेकर भेजवा दीजिएगा। कष्ट के लिए क्षमा करें। शायद 'रूपाभ' में डेढ़ आने पैसे का टिकट लगेगा। लोगों में 'रूपाभ' के बारे में अच्छी दिलचस्पी है हमारे प्रयत्न को सफलता मिल जायेगी। ऐसी उम्मीद है।

रूपाभ के कागज तथा छपाई और ब्लाकों का हिसाब 3-4 तारीख तक अगर हो जाता तो बहुत अच्छा होता। दीक्षित प्रेस छोटा सा है। उसके मालिक इसकी आशा रखते हैं।[20]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पत्रों में अन्य संदर्भ

पंत के पत्रों में उनकी प्रवृत्तियों, रुचियों तथा व्यक्तित्व के कई आयामों के अलावा समकालीन साहित्यकारों, राजनीतिक, आंदोलनों, अपने सांस्कृतिक/रचनात्मक संकल्पों के सूत्र भी मिलते हैं।

साहित्यकारों ने पं. रामनरेश त्रिपाठी, शांतिप्रिय, नरेंद्र शर्मा, दुलारे लाल भार्गव, अमृतलाल नागर, बच्चन, निराला, रामकुमार वर्मा, महादेवी वर्मा, पं. श्रीनरायन, चतुर्वेदी, डॉ. रामविलाास शर्मा, जयशंकर प्रसाद, गुरु देव रवीन्द्रनाथ, विचारक मानवेंद्र राय, बनारसीदास चतुर्वेदी, पूर्ण चंद जोशी आदि का उल्लेख मिलता है।

सुनता हूं आप तथा श्रीयुत् रामनरेश त्रिपाठी जी एक बालोपयोगी पत्र निकाल रहे हैं। सियारामशरण गुप्त और श्रीनाथजी सिंह से कविताएं अवश्य मंगवा लीजियेगा। निर्मल जी से सहायता लीजिएगा।[21] हां रामकृष्णदास जी ने लिखा था कि वह 'कुमार' का भार लेने में असमर्थ हैं। लीडर प्रेस के साथ अभी उनका फैसला नहीं हुआ (3 जून, 34), हमारे घर के नीचे के हिस्से में एक दक्षिणी महिला रहती हैं, 30-35 साल की होगी वह बहुत ही मधुर गाती है। दोनों दंपत्ति बड़े शरीफ हैं, शाम को उनसे मिलूंगा। कभी आप यहां आये तो आप भी गाना सुनेंगे। (24-7-35), अगर झा साहब (अमरनाथ झा) ने यूनिवर्सिटी में पार्ट टाइम लेक्चरिंग का काम हिंदी में दे दिया तो यह भी बड़ा अच्छा होगा। दो तीन रोज में उनसे और डॉ. धीरेंद्र वर्मा से मिलूंगा।

नरेंद्र शर्मा का विचार है कि यहां रहने के लिए मुझे कम से कम 100/- प्रतिमास उपलब्ध कर लेना चाहिए (वही पत्र), हां मैं इतवार को (26 तारीख को) यहां से नरेंद्र शर्मा के यहां शिफ्ट करूंगा, क्योंकि मि. टंडन छुट्टी में अपने मकान जा रहे हैं। (24-3-38), मुझे बड़ा दुख है कि जैनेन्द्र जी से मैं वहां जाकर नहीं मिल सका। अगर मिल भी सकता तो मैं कुछ भी हार्ट टू हार्ट टाक या विचारों का आदान-प्रदान नहीं कर सकता क्योंकि मैं आज कल बड़ा ही अपसैट हूं। (22-10-38), नरेंद्र का प्रश्न भी कठिन हो गया है। कृपलानी जी उसे एक महीने से अधिक छुट्टी देने को तैयार नहीं हैं—वह भी अवैतनिक। अब या तो हम लोग नरेंद्र की सदैव की रेस्पोन्सबिल्टी लें और उससे कांग्रेस आफिस छुड़वा दें या फिर एक महीने बाद दूसरे का प्रबंध करें। (वही), जैनेंद्र जी को भी आज तार दे रहा हूं वहीं, नरेंद्र कांग्रेस कलकत्ता वहां से शांति निकेलन चला गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(25 मार्च, 40), 'पल्लविनी' की भूमिका पांडेय जी इस महीने की अंत तक देंगे। बहुत बड़ी लिख रहे हैं। (वही, पृ. 38), नरेंद्र और उनकी वाइफ यहीं हैं। नरेंद्र की वाइफ मिसेज सुरेश सिंह का भी साथ हो जायगा। वह बहुत अच्छी लड़की है। नरेंद्र के यहां आपको क्वायट भी ज्यादा मिलेगा और आराम भी मिलेगा। (1 जून, 40), श्री काजगी साहब से मैं 2-3 बार मिल चुका हूं। एकेडेमी में बड़े-बड़े चेंजेज होने वाले हैं। अभी यह नहीं कहा जा सकता कि पब्लिकेशंस वह कब से शुरू करेंगे। आपकी पुस्तक तो उन्हें पसंद है, और छापेंगे भी (21 अगस्त, 40), काजमी साहब से इधर मैं नहीं मिला मिलने पर हिंदुस्तानी एकेडमी के पब्लिकेशन स्ट्रॉट करने के बारे में फिर से पूछूंगा (4 सितंबर, 40), श्री दुलारे लाल जी को कविताएं दे दी हैं। वह सपत्नीक आए थे (21 अगस्त, 40), अभी हाल में मि. टंडन से मालूम हुआ कि एकेडेमी दिसंबर से पहले नये प्रकाशन का कार्य नहीं शुरू करेगी। आपकी पुस्तक भी नहीं छपेगी। मैं आने से पहले काजमी साहब से मिल कर ठीक-ठीक बातें मालूम कर लूंगा। (12 सितंबर, 40), उदयशंकर यहां 10-12 को नृत्य प्रदर्शन करने वाला (4-12-40), आइयेगा अवश्य, मैं यहां 8-1 रैली रोड श्री रंजन साहब की कॉटेज में आ गया हूं। बच्चन को मैंने अपने साथ ले लिया है। (11-12-40), मैं यहां 11 बजे के करीब पहुंचा बच्चन मुझे स्टेशन में लेने आया था (22-12-40), श्रीनरायन चतुर्वेदी जी से मिलने पर आपको पुस्तक के बारे में लिखूंगा उनसे कभी जरूर ही भेंट होगी। (19 मार्च 41), आज के नेशनल हिरेल्ड से मालूम हुआ कि कुंवर सुरेश सिंह 24 तारीख को अंडर डिफैनस एक्ट डिटेन कर लिए गए हैं। जिसे पढ़कर बड़ा आश्चर्य हुआ। (27 मार्च 41), मैं आज श्रीनरायन चतुर्वेदी जी से मिलने दारागंज गया था, पर वह वहां नहीं थे, लखनऊ गए हुए हैं। 15-20 तारीख तक लौटैंगे, मालूम हुआ। उसके बाद ही उनसे मिलकर लाल साहब की पुस्तकों के बारे में तय करके उन्हें लिखूंगा। (14-4-41)।

कुंवर सुरेश सिंह की पक्षियों में रुचि थी शिकार और जीव-जंतुओं का अध्ययन करना यही उनके दो शौक थे। चिड़ियों और अन्य जीव-जंतुओं पर उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं हैं जिनके हिंदुस्तानी एकेडेमी, इंडियन प्रेस अथवा लीडर प्रेस कहीं से भी वे छपवाना चाहते थे। पंत जी इसी संबंध में पं. श्रीनरायन चतुर्वेदी जी से मिलना चाहते थे। उन्होंने 26-5-41 को श्रीमती सुरेश सिंह को लिखा—श्रीनरायन चतुर्वेदी जी से मैं मिला था उन्होंने अभी हमारी वीडियो के बारे में कुछ भी तय नहीं किया। कहा है कि प्रयाग आफिस चले जाने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से स्थिति बदल गयी है। पुस्तक अभी विचाराधीन है। अन्य तीन पुस्तक के बारे में उन्होंने कहा है कि जब तक वह देख न लें तब तक कुछ नहीं कह सकते।

इंडियन प्रेस तो छापना नहीं चाहता। हिंदुस्तानी एकेडेमी का अभी कुछ तय नहीं हुआ होगा। लीडर प्रेस वाले छाप देंगे। अगर श्रीनरायण जी ने 1000 प्रतियां ले लीं। क्योंकि पुस्तक में ब्लाक्स काफी हैं, इससे कीमत बढ़ जायेगी। 2000 छापी जाय जो कीमत कम रखी जा सके और अधिक मूल्य की पुस्तकें ये लोग लाइबेरीज के लिए नहीं खरीदते। श्रीनरायन जी का उत्तर मिलने पर मैं कुंवर साहब के लिए खुद ही लिख दूंगा। (वही, पृ. 164)।

पंत जी का संबंध प्रसिद्ध नर्तक उदयशंकर से भी रहा है। उनके साथ उन्होंने अल्मोड़ा में कल्चर सेंटर खोला था और उनके सहयोग से कई डाकूमैंट्री फिल्मों की शूटिंग के लिए दिल्ली, बंबई, मद्रास, बैंगूलर की यात्राएं की थीं। इनके संदर्भ भी इन पत्रों में मिलते हैं। कल्चर सेंटर वाले लड़ाई तक ड्रामा क्लासेज नहीं खोल रहे है। उदयशंकर जी काफी शरीफ आदमी हैं, पर फंड्स की बहुत कमी अब के हैं। मैंने बहुत कोशिश की कि जनार्दन हाई स्कूल वाले 50,000/- उन्हें मिल जावें, पर ट्रस्टीज राजी नहीं हुए (4-5-42)।

जीव-जंतुओं पर पुस्तक तैयार करने के लिए कुंवर सुरेश सिंह को संदर्भ ग्रंथों की जरूरत पड़ती थी जिनकी व्यवस्था पंत जी इलाहाबाद के पुस्तकालयों या पुस्तक विक्रेताओं के यहां से करते थे। एक पत्र में वे लिखते हैं—किताबिस्तान में वेटरफलाईज पर कोई पुस्तक आजकल नहीं हैं। पब्लिक लाइब्रेरी में परसों तक अवश्य जाऊंगा (18 अक्तूबर, 42)।

फाना ओफ, ब्रिटिश इंडिया सिरीज में मार्क्स पर किताव मैंने इशू करवा ली है, वहां वेटरफलाई पर भी एक वाल्यूम है, आदमी के हाथ इसे आपके पास भेज दूंगा। एक महीने से पहले ही कृपया इसे वापस कर दीजिएगा। (1 नवंबर, 42)। फाना आफ ब्रिटिश इंडिया सिरीज के मार्क्स और वेटरफलाई वाले दोनों वाल्यम्स 2 दिसंबर, 42 के भीतर लाइब्रेरी में लौट जाना चाहिए। अब पब्लिक लाइब्रेरी से रिमाइंडर्स इशू नहीं होते। इसी से पीछे डेट का कार्ड चिपका दिया जाता है। आशा है आप आदमी जल्दी ही भेज देंगे। (3 नवंबर, 42) पब्लिक लाइब्रेरी की पुस्तकें अभी तक मुझे नहीं मिलीं। 2 ता. के बाद उन पर, प्रतिदिन फाइन पड़ रहा है 8 दिसबंर, 42, आज पब्लिक लाइब्रेरी वालों का रजिस्टर्ड नोटिस भी मुझे मिला है जिसे आपके पाास भेज रहा हूं 2 नवंबर से 17 ता. तक का फाइलन दो आना पर डे पड़ ही गया साथ ही वह मेरे डिपाजिट से काट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
लेंगे। फिर से मेम्बर बनना हुआ तो 4/- एडमीशन फी एक्स्ट्रा अलग से देने होंगे। अतएव आप पुस्तकें शीघ्र भेजवा दें। (1-1-43)।

पंत को कुछ लोग अव्यवहारिक और कल्पना जीवी समझते हैं यहां उनके जिन पत्रों को उद्धृत किया गया है उनसे इसके विपरीत तथ्य सामने आते हैं। वे पूर्णतः व्यावहारिक और छोटे-छोटे कामों में मनोयोगपूर्वक लगे रहते थे। एक कवि में और साधारण व्यक्ति में अंतर यह रहता है कि साधारण व्यक्ति पूर्णतः व्यवहारवादी होता है और बाहरी दुनिया मे ही खो जाता है जबकि एक कवि व्यवहार की दुनिया में जाकर भी पुनः अपनी दुनिया में लौट आता है। वह जब अपने रचना कर्म में लगता है तब पूर्णतः बेखबर और निर्लिप्त ध्यान-केंद्रित हो जाता है। मानसी सृष्टि की यही मांग रहती है।

कुंवर सुरेश सिंह ने पंत को अपना स्नेह/आर्थिक सहयोग/मनोवांछित एकांत देकर उनके कवि जीवन को विकसित होने का अवसर दिया। पंत जी ने भी उनके लेखकीय जीवन के विकास में कम सहयोग नहीं दिया है। जीव संबंधी उनकी पुस्तकें छपने में उन्होंने पूरी मदद की। एक पत्र में उन्होंने लिखा : दीक्षित प्रेस वालों से किताब कम्पोज (जापानी खतरा) करने को कह दिया है। कागज 5-6 ता. तक खरीद कर उनके पास पहुंचा दूंगा, तभी पेपर मर्चेंट के यहां भी 100/- जमा करवा दूंगा। आजकल शहर जाना खतरा से खाली नहीं है। (1-4-40)।

इंडियन प्रेस के मैनेजर साहब कलकत्ता हैं, अतः आपके वर्ड्स वाली पुस्तक के बारे में अभी कुछ तै नहीं हो सका है। आप मैनस्क्रिप्ट्स और वर्डस के डिजाइन यहीं सुभीते पर भेजवा दीजिएगा (वही)।

आपकी जो डेट फिक्स्ड हो उसके बारे में, चिड़ियों की पुस्तक के बारे में तथा बेट ट्रिप के बारे में डिफिनिटली लिखिएगा (22-12-40)। आपके कृपा पत्र तथा पुस्तक के लिए हार्दिक धन्यवाद। मुझे पुस्तक बहुत पसंद आई। आपकी शैली अत्यंत रोचक, सरल तथा मधुर होती है। आशा है हिंदी पाठकों को वह बहुत रुचिकर प्रतीत होगी। (9-5-54) के पत्र में कुंवर सुरेश सिंह की पुस्तक 'हमारे जीव जंतु' पर टिप्पणी कुंवर सुरेश सिंह की पुस्तकें छपवाने के लिए पंत चौथे दशक में ही प्रयत्नशील रहे हों ऐसा नहीं वे इसके आगे भी सहयोगी भूमिका निभाते रहे। उन्होंने (6-10-57) के पत्र में लिखा—आपकी पुस्तकों के प्रकाशन के लिए प्रयत्नशील हूं समय पर सूचना दूंगा। लीडर प्रेस वाले तो असमर्थता प्रकट करते हैं। राजकमल वालों ने कहा है कि वह मासान्त तक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बतलायेंगे। इधर कृत साहित्य के प्रकाशन में व्यस्त हूं। आपके पूरे सेट के प्रकाशन के लिए श्री लक्ष्मी चंद्र जी को आज ही लिख रहा हूं आशा है, निर्णयात्मक उत्तर आपको मिल सकेगा। (13-11-57)। आपका कृपा पत्र और कहानी-संग्रह 'असली मुर्गा छाप' मिला। अनेक धन्यवाद। आपको कहानी लेखक के रूप में पाकर हार्दिक आनंद हुआ। (5-3-58) आपका 'जीव-जगत्' छप गया, प्रसन्नता हुई। श्री मैथिलीशरण बाबू प्रशंसा कर रहे थे। (26-7-58)। 'जीव-जगत' की प्रति जब आ जाय अवश्य भेजें देखना चाहता हूं (वही)। 'जीव-जगत्' इधर-उधर देखता रहता हूं। बहुत ही रोचक है। आपने हिंदी के एक बड़े ही अभाव की पूर्ति की। अपने विषय की संभवतः यह पहली बड़ी पुस्तक है (31-10-58)। अपने एक अन्य पत्र में वे लिखते हैं—श्री लक्ष्मीचंद्र जी ने आपकी पुस्तकों को छापना स्वीकार किया है। उन्होंने लिखा है—श्री कुंवर सुरेश सिंह के अद्वितीय कृतित्व से मेरा परिचय है। कृपया पुस्तकें और पांण्डुलिपियां एक बार यहां भिजवा दें ताकि प्रकाशन और व्यय आदि की संभावना पर यहां विचार विनिमय कर सकूं। (2-2-60)।

पंत जी कोई काम हाथ में लेकर उसे बीच में छोड़ने में विश्वास नहीं करते थे। वह पूरा न हो जाय तब तक उसी में दत्तचित् रहते थे। कुंवर सुरेश सिंह की पुस्तकें भारतीय ज्ञानपीठ से छपवाने के लिए लिखकर ही पंत जी नहीं रह गये बल्कि इसके लिए श्री लक्ष्मीचंद्र जी जैन से बार-बार अनुरोध किया और कुंवर सुरेश सिंह को उससे बराबर अवगत कराते रहे। श्री लक्ष्मीचंद्र जी का आपके पास कोई पत्र आया कि नहीं? उन्हें मैंने आपके लिखे अनुसार लिख दिया था, आजकल संभवतः शांति प्रसाद जी के मामले के कारण राजभय तथा संकट से पीड़ित हैं। मुझे जनवरी में दिल्ली में मिले थे, तब भी मैंने उनसे आपकी पुस्तकों की चर्चा की थी, वह स्वयं बहुत प्रशंसा उनकी कर रहे थे और कागज आदि के अभाव की चर्चा तथा अत्यधिक प्रकाशन सामग्री संग्रह में पड़ी है, कहते थे (17-5-65)। इसी पत्र संग्रह को छपवाने के लिए पंत ने राजकमल से कहा था किंतु उसके लिटरैरी एडवाइजर ने उन्हें छापने की सम्मति नहीं दी थी। फिर भी पंत जी ने दिल्ली जाकर शीला संधू से बातें करने को कहा था। जिसका जिक्र उन्होंने अपने 18-10-77 के पत्र में किया है। निष्कर्ष यह कि पंत जी कुंवर सुरेश सिंह की लिखी पुस्तकों को छपवाने के लिए सदा व्यग्र रहे और जो हो सका प्रयास भी किया। पीछे उनके पत्रों में अनेक साहित्यकारों के संदर्भों का उल्लेख किया जा चुका है। इसका उल्लेख उनके अंत तक पत्रों में मिलता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। उन्होंने सितंबर 42 में लिखा—नरेंद्र यहां नहीं हैं वह बनारस गया हुआ है। बच्चन और उसकी बीवी दोनों प्रसन्न हैं। बच्चन की बीवी मुझे पसंद आयी अक्टूबर में सबको इक्सपेक्ट कर रहे हैं। उसके बाद वह जाड़ों में बच्चन के साथ कालाकांकर आयेगी। श्री कामता प्रसाद गुरु के लड़के ने जो पब्लिशिंग हाउस खोला है उससे मेरी सहानुभूति है। पर इधर मेरे पास कोई ऐसी पुस्तक नहीं जो उन्हें दे सकूं। एक नाटकों का संग्रह है जो लीडर प्रेस को शीघ्र ही भेजना है उनसे रुपये एडवांस ले चुका हूं (24 जुलाई 44)।

श्री शांति प्रिय जी पंत जी पर बहुत श्रद्धा रखते थे किंतु वे उनसे शीघ्र रुष्ट और प्रसन्न दोनों हो जाते थे। 'पंत जी और कालाकांकर' पुस्तक का परिचय लिखते हुए कुंवर सुरेश सिंह ने इस संदर्भ में ठीक ही लिखा है—श्री पंत जी के कालाकांकर निवास के समय वैसे तो हिंदी भाषा के साहित्य मनीषियों का कभी-कभी आगमन होता ही रहता था लेकिन पूज्य निराला जी, सर्वश्री सोहनलाल जी द्विवेदी, नरेंद्र जी शर्मा, शांति प्रिय जी तथा निर्मल जी की हम लोगों पर विशेष कृपा थी और यह पांचों सज्जनों में से कोई न कोई दूसरे तीसरे महीने कालाकांकर अवश्य पधारते थे।[22]

'स्मृति-चित्र' में अपनी पंत संबंधी स्मृतियों को संजोते हुए श्री शांति प्रिय द्विवेदी ने लिखा है : पंत जी तो अपनी कविता और व्यक्तित्व के द्वारा मेरे भीतर सुस्पष्ट थे, किंतु मैं उनके सामने अस्पष्ट रह गया। कालाकांकर में पंत जी जिस टीले पर 'नक्षत्र' में रहते थे उसके नीचे एक सैंकड़ों फुट गहरा खड्ड था। प्रसंगवश एक दिन मैंने पंत जी से कहा—मैं तो इतनी ऊंचाई से वहां कूद सकता हूं। पंत जी ने संभ्रमित होकर कहा—हां, जमीन यदि कुछ पोली हो। मैंने कहा—जैसी भी हो, मैं कूद सकता हूं।

पंत जी को मेरे न जाने ऐसे कितने ही अटपटे मन का अनुभव हुआ होगा। वे मुझसे खिन्न हो जाते थे, मैं उनसे रुष्ट हो जाता था, किंतु उनका शील और मेरा स्नेह निःशेष नहीं हो सका।[23] अब उक्त संदर्भ में पंत जी का यह पत्र पढ़िये—श्री शांति प्रिय जी कल आये थे, उनके मारे नाक में दम है। न जाने किससे क्या-क्या कहते रहते हैं। हृदय के भावुक हैं समझ की कमी, आज की परिस्थितियों को ठीक-ठीक नहीं समझते। चाहते हैं कि मैं उन्हें डाक्टर पंत जी से परिचय कराकर कुछ स्थाई रूप से सहायता पहुंचा सकूं और भी बहुत सी बातें करनी हैं मिलने पर कहूंगा।[24] इसी के साथ उनका दूसरा पत्र इस बीच श्री नंददुलारे जी वाजपेयी और शांति प्रिय जी जाते रहे बहुत बुरा लगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाजपेयी जी पिछले वर्ष मुझे डॉक्टरेट देने यहां आये थे। कल उनका अस्थि-कलश आया हिंदी साहित्य सम्मेलन में लोगों ने श्रद्धांजलि भेंट की। काशी प्रयाग से तो अस्थियां भेजते नहीं। इसीलिए शांति प्रिय जी के कोई यहां नहीं आये। नागरी प्रचारिणी सभा ने उपर्युक्त समारोहों के साथ उनका दाह-संस्कार कर दिया था। वाजपेयी जी भी दिल के मरीज थे। आज कल तो मृत्यु कोई चीज ही नहीं रह गयी है। (20-4-67)

जीवन में पंत जी ने जो सुख-दुख देखा था उससे उनका मन बहुत संवेदनशील और अनुभव-समृद्ध हो गया था। संसार में किसी न किसी प्रकार की आपत्ति आती रहती है। प्रेमचंद के सुपुत्र अमृत का छोटा लड़का लिव्कीनिया से 21 ता. को बंबई में जाता रहा। अमृत का बड़ा सुखी परिवार था, पर ऐसा भयंकर रोग बेटे को लगा कि वे लोग बिलकुल ही टूट गये हैं। (29-6-66)

लाल साहब कुंवर ब्रजेन्द्र जी की रूस के अस्पताल में अकाल मृत्यु का दुखद समाचार आपके पत्र से पाकर मन को बड़ा ही आघात पहुंचा। यह समझना कठिन नहीं कि आपको इससे कितना संतोष मिला होगा। बड़े निश्छल स्वभाव के थे लाल साहब, बड़े स्पष्ट भाषी और साथ ही संतोषशील। उनके साथ यद्यपि रहने का अधिक समय नहीं मिला, वे अधिकतर बाहर रहते थे, पर जो भी क्षण उनके साथ बीते लाल साहब उनके साथ लाल साहब की हंसमुख आकृति उनके रोचक वार्तालाप तथा मनोरंजक क्रिया कलापों की अविस्मरणीय स्मृति जुटी हुई है। आपको और आपके परिवार को हार्दिक संवदेना भेजता हूं। मेरे भी वे मित्र भाई ही तरह ही थे (8-11-36)।

पंत जी कितने संवेदनशील थे नमूने के रूप में उनका ऊपर का पत्र पर्याप्त है। अपने आत्मीय जनों के प्रति पंत बहुत भावुक थे। इधर आपको बहुत झेलना पड़ा है, इसमें संदेह नहीं। भगवान चाहेंगे तो आगे शांत, सुखी तथा सुव्यवस्थित जीवन बिता सकेंगे। हार्ट अटैक के कारण मुझे भी अपने स्वास्थ्य पर अब विश्वास नहीं रहा 28 ता. मई को जब यहां पहुंचा तब भी हृदय गति रुक-रुक कर चलने लगी थी। (7-1-67)

दिसंबर में लेनिन (भाई साहब देवी दत्त जी का ज्येष्ठ पुत्र) की शादी अल्मोड़ा में उमा जोशी, प्राध्यापिका, कवि, नाटककार से संपन्न हो गयी। श्री कांति चंद्र जी से ज्ञात हुआ कि वहां (कालाकांकर) में 50 कमरों का लाल साहब की स्मृति में विराट ब्रजेश चिकित्सालय उन्हीं की देख-रेख में बन रहा है, जान कर प्रसन्नता हुई। उद्घाटन समारोह में आना चाहूंगा (2 जनवरी, 69)।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ब्रजेश सिंह चिकित्सा कक्ष का उद्घाटन श्रीमती महादेवी वर्मा से कराना था। इस संदर्भ में पंत जी को कुंवर सुरेश जी ने स्वीकृति के लिए पत्र भेजा था। महादेवी जी के साथ पंत जी वहां गये थे। उस संदर्भ में एक पत्र देखिए। आपका पत्र महादेवी जी को दे दिया था। उन्होंने आपको स्वीकृति का उत्तर भी भेज दिया है। हम लोग वहां 31 अक्टूबर के उद्घाटन समारोह में अवश्य सम्मिलित होंगे। 'नक्षत्र' का नया रूप भी देख लेंगे। महादेवी जी कहती थीं कि हम लोग वहां रहेंगे। आप कहें तो इलाहाबाद से बोरिया-बिस्तर बांध कर हम सब लोग वहीं आ जायें। वहां अस्पताल में नर्सिंग सीख कर काम करें। जो पैसे मिलें उससे 'नक्षत्र' में रहें और बीमारों की सेवा करें। महोदवी जी को यह प्रस्ताव बहुत पसंद है (22-9-69)।

28-10-69 को उन्होंने लिखा–हमारे साथ अमृतराय और सुधा भी आ रहे हैं। इसलिए मैं और राम जी, श्री कांति किशोर अग्रवाल की गाड़ी में आ रहे हैं। और श्रीमती महादेवी जी, डॉ. सामंत, स्मिता, शांता, अमृत और सुधा आपकी गाड़ी से।

सुश्री शांति जोशी ने पंत की जीवनी लिखी थी। उसे राजकमल प्रकाशन ने दो खंडों में छापा है। पुस्तक छपने के पहले उसके कुछ अंश सा. हिंदुस्तान में निकले थे। इस संदर्भ में पंत जी ने एक पत्र में लिखा–इधर 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' में शांता की लिखी मेरी जीवन के कुछ अंश निकल रहे हैं–अभी कुछ और भी निकलेंगे। 20 मई तक प्रकाशित जो जायेगी।[25] शांता की पुस्तक (मेरी जीवनी) निकल गयी है। आपके आदमी तो आते-जाते रहते हैं किसी को सहेज दीजिएगा तो आपकी प्रति उसके हाथ भेज दूंगा–ऐसा ही शांता चाहती है। (पृ. 302) 19/7/70 के पत्र में उन्होंने लिखा–आपको शांता की लिखी जीवनी पसंद आई इससे शांता को बड़ा संतोष हुआ और वह पुरस्कार स्वरूप मिसेज सुरेश सिंह से आम के अचार की प्रत्याशी है। आपका सुमेद कुत्ता नहीं रहा, जानकर दुःख हुआ। मेरा बिल्ला भी कहीं भाग गया है, उसका अभाव बड़ा खटकता है। बड़ा खेलाड़ी था। खाने-पीने सोने का बड़ा शौकीन था। मालूम पड़ता है मर गया है नहीं तो वह अवश्य आता–बहुत ही हिल गया था। उसका नाम राजू था। मैंने रेडियो पर एक टाक भी उसकी है।

महादेवी जी के पास तो अब कुत्ते रहे नहीं। एक छोटे कुत्ते को छोड़कर और सभी मर गये हैं। बांदा में रज्जन के पास अच्छे कुत्ते हैं। शायद स्पेनियल भी हों–और जगह भी मैं खोज-खबर रखूंगा–रज्जन के लिए डॉ. सामंत से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहला दूंगा।

पंत जी अचार के कितने शौकीन थे। एक मजेदार पत्र देखिए—आपका कृपा पत्र मिला, अनेक धन्यवाद। दूसरे दिन श्री नाग जी पांच प्रकार का अचार भी दे गये। अचार इतना स्वादिष्ट है कि मि. सुरेश सिंह को किन शब्दों में धन्यवाद दूं नहीं जानता। सभी नमूनों में अद्‌भुत स्वाद है। ऐसा अचार हम लोगों ने वर्षों से नहीं खाया था। कभी-कभार मदन स्टोर्स से अचार मंगवा लेते थे या पंचमेल चटनी—पर अब तो हर एक चीज इतनी रद्‌दी मिलती है कि मुंह में रखने को जी नहीं करता। मिसेज सुरेश सिंह के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूं। वे तो जादूगर हैं। खाने का प्रयोजन ही अचार के आने से बदल गया है (1 अगस्त, 1970)।[26] डॉ. रामविलास शर्मा मेरे पत्र छपाना चाहते हैं, इसमें कोई बुराई नहीं है। यद्यपि वे यह सब किसी सद्‌भाव से नहीं कर रहे होंगे। मेरे प्रति उनके दृष्टिकोण से आप परिचित ही हैं। पर्सनल पत्र भी छपाये जा सकते हैं, अगर उनमें कोई विशेष बात हो तो दूसरी बात है। अच्छा हो, आप मेरे पास भेज दें तो मैं भी एक बार देख लूं। मिसेज सुरेश सिंह वाले पत्र भी छपाये जा सकते हैं।

डॉ. रामविलास जी ने मुझे इस बारे में नहीं लिखा है, उन्हें पूछना तो चाहिए ही था। आप चाहें उन्हें लिख दें कि पंत जी से भी पूछ लें, देखें क्या कहते हैं। वैसे मुझे प्रसन्नता ही होगी कि आपको लिखे मेरे पत्र साहित्य के अंग बन जायें। मुझे कोई इसमें आपत्ति होना तो दूर, प्रसन्नता ही है। (18/5/76)।

पंत जी ने ये सारे पत्र देखे और हिदायतें दीं। उन्होंने लिखा—मुझे तो पत्रों को छपवाने में रत्ती-भर आपत्ति नहीं है। आप उनके साथ एक छोटी-सी भूमिका भी जोड़ दें तो सोने में सुगंध हो जाय। मैं भी कृतज्ञता ज्ञापन स्वरूप कुछ शब्द जोड़ दूंगा। (7/6/76)।

आपके पत्र, भूमिका तथा पत्रों के पार्सल के लिए धन्यवाद। मैं 21 ता. को दिल्ली जा रहा हूं। पत्रों को भी साथ ले जा रहा हूं। वहीं देखकर उन्हें राजकमल को सौंप दूंगा। (17/6/76)। फिर पंत जी ने इसी तिथि को एक और पत्र लिखा जिसमें उन्होंने लिखा—1. डॉ. रामविलास जी का पत्र नहीं छपेगा, दिल्ली से लौटने के बाद आपको लौटा दूंगा।

2. निजी पत्रों में यदि आर्थिक सहायता की बात हो तो कोई संकोच की बात नहीं और सौहार्दपूर्ण ही समझा जाएगा। आप रत्तीभर संकोच न करें।

3. भूमिका में आप थोड़े-से शब्द भी लिख देते तो अच्छा होता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(17/6/76)।[2]Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाद में राजकमल के साहित्य-सलाहकार ने इन पत्रों को छापने की सम्मति नहीं दी।

पंत जी और लोकायतन

पंत जी ने 'लोकायतन' महाकाव्य लिखा है। 'लोकायतन' शब्द उनके मन में बहुत पहले से घूम रहा था। वे लोक जागरण के लिए कोई-न-कोई सांस्कृतिक योजना कार्यान्वित करना चाहते थे। उन्होंने 1942 में 'लोकायतन' नामक एक योजना बनायी और उस संबंध में एक लंबा पत्र कुंवर सुरेश सिंह को लिखा—यहां मैंने एक नवीन योजना इधर शुरू करने का प्रयत्न किया है, और उसके लिए थोड़ा-बहुत काम भी कर रहा हूं। 'लोकायतन' नामक एक सांस्कृतिक केंद्र झूंसी में खोल रहा हूं। श्री नारायण जी चतुर्वेदी उसमें मेरी सहायता कर रहे हैं।

'लोकायतन' नवीन विचारों के अनुकूल (जिन्हें आप जानते हैं) संस्कृति का निर्माण, उसकी शक्तियों का विकास करने के उद्देश्य से खोला जा रहा है। उसमें तीन मुख्य विभाग हैं—

1. **संस्कृति द्वार**—साहित्यिक गोष्ठी, वाद-विवाद आदि का क्षेत्र। इसके अंतर्गत एक 'लोकायतन' का मासिक मुख पत्र निकलेगा। 'लोकवाहिनी' या 'लोकवाणी' नाम से।

2. **ज्योतिकार**—रिसर्च-विभाग। इसमें इस वर्ष 50 रुपये प्रतिमाह स्कालरशिप पर एक रिसर्च स्कालर रहेगा जो इस वर्ष 'झूंसी' के इतिहास पर रिसर्च करेगा। इसके अंतर्गत 'शिक्षाकर' में साहित्य सम्मेलन के उत्तमा, मध्यमा के परीक्षार्थियों के लिए शिक्षा का प्रबंध रहेगा।

3. **जीवन-द्वार**—जिसका भार मैं स्वयं ले रहा हूं। इसी में एक छोटा-मोटा स्कूल रहेगा। गांव वाले और शहर वालों के लिए। जिसमें लोक संस्कृति के अनुकूल छात्रों में प्रयोग किये जाएंगे। और उन्हें नवीन संस्कृति की भूमि पर अवतरित करने का प्रयत्न भी होगा। इसके अंतर्गत 'कलाद्वार' में नाटक खेलने 'हिंदी के स्टेज' को जन्म देने का प्रबंध रहेगा।

आपको बहुत संक्षेप में लिख रहा हूं। अगले सप्ताह तक छपा हुआ साहित्य (लोकायतन) आपके पास भेजूंगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'लोकायतन' का भक्त, छात्रावास–वहां झूंसी में सब चीजें आलरेडी हैं। बस ठीक करना है, बड़ी सुंदर जगह है। आप जब देखेंगे, प्रसन्न हो जाएंगे।

आज कल इसी काम में दौड़-धूप करनी पड़ती है। और इस समय क्या लिखूं, मेरे दिमाग में यही भरा है। उन्होंने इसी पत्र के अंत में अंग्रेजी में लिखा कि लोकायतन मेरे भावी साहित्यिक कार्य के लिए उपयुक्त वातावरण बनायेगा। (1/10/42)।[28] अपने दूसरे पत्र में उन्होंने लिखा–अब मुझे जीवन द्वार के विधायन के लिए कोर्स बुक्स तैयार करनी हैं। और लोकायतन के गीत और उद्घाटन दिवस के लिए स्पीच और प्रोग्राम निश्चित करना है। लोगों से जाकर मिलना है। विवरण पत्रिका प्रथम वर्ष की तैयार करनी है। 18 अक्टूबर, 42।[29]

19 अक्टूबर को उन्होंने लोकायतन संस्था के लिए प्रसिद्ध चित्रकार हलदार से सील की डिजाइन बनवा देने का आग्रह कुंवर सुरेश सिंह से करते हुए डिजाइन का प्रारूप भेजा। जब आप लखनऊ जायें तो श्री हलदार साहब से लोकायतन की सील का डिजाइन भी बनवा दें। मैं तो बहुत सिम्पुल डिजाइन पसंद करूंगा। स्क्वायर लेटरिंग रहे। अगर हलदार साहब स्वयं लेटरिंग न करना चाहें तो आटंस कालेज में किसी से करवा दें।

लोकायतन, झूंसी, प्रयाग–बाहर की लाइन की डिजाइन का पार्ट रहे। अगर वह कोई और डिजाइन बनायें तो और भी अच्छा है। ह्यूमन स्प्रिट का सिंबल चाहता हूं। अगर ऐसा कुछ न हो सके तो सिर्फ लेटरिंग चाहता हूं। शांति निकेतन की सील आपने देखी होगी। वैसा कुछ नहीं रहे। (19/10/42)।

'लोकायतन' का काम धीरे-धीरे बढ़ रहा है, आपके पास उसका साहित्य भेज रहा हूं। (नवम्बर, 1942)। 11/1/42 के पत्र में उन्होंने लिखा–लोकायतन जुलाई से खुलेगा, क्योंकि जनवरी से विद्यार्थी नहीं मिल सके। श्री नरायण जी ने यह दिसंबर के दूसरे सप्ताह में बतलाया, इसलिए निराश होना पड़ा।[30]

पंत जी का ऐसा विश्वास था कि जुलाई 15 से 'लोकायतन' भी यहां खुल जावेगा। इसमें अब किसी तरह का संदेह या बाधा नहीं है। डॉ. पी. आई. ने भी ग्रांट देने का वचन दे दिया है। 50 लाइफ मेंबर झा साहब बना दे रहे हैं। मासिक पत्र को सुभद्रा जी फाइनेंस कर रही हैं। डॉ. साहब और मेरे अंकल भी मुझे मदद करेंगे। मैं सोचता हूं कि एक तरह से यह चल निकलेगा। उसके बाद ही आप लोग इसके लिए राय कायम कीजिएगा।[31]

9 अक्टूबर, 1947 के पत्र में पंत जी ने 'लोकायतन' के संबंध में फिर लिखा। जिससे विदित होता है 1943 के बाद अब तक यह संस्था अपना पार्थिक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रूप ग्रहण नहीं कर सकी थी और पंत जी इसके लिए प्रयत्नशील थे। उन्होंने लिखा—आपको 'अमृत बाजार पत्रिका' द्वारा मालूम हो गया होगा कि 'लोकायतन' का कार्य शुरू हो गया है। अन्य पत्र-पत्रिकाओं में भी यह समाचार शीघ्र ही प्रकाशित हो जायेगा। आप उसके संरक्षकों और अभिभावकों में से हैं। राजा साहब मनकापुर भी। आप अपना हिंदी का टाइपराइटर 'लोकायतन' को प्रदान कर दें। लोक चेतना (लोकायन की मुख पत्रिका) भी नवंबर से निकल जावेगी, ऐसी आशा है। आप क्या अपने परिचित से 'लोक चेतना' के कवर का सुंदर सिंबालिक डिजाइन बनवा सकते हैं। 'लोकायन' का अर्थ यूनिवर्स ऑफ गाड, पाथ आफ पीपल भी होता है।[32]

इन पत्रों से लगता है पंत जी 'लोकायतन' संस्था के कार्य प्रारंभ और विस्तार के लिए कितने प्रयत्नशील थे। वे सचमुच, साहित्य, समाज और कला के क्षेत्र में कुछ करना चाहते थे। वे मात्र शब्द शिल्पी नहीं मानव शिल्पी भी बनना चाहते थे किंतु आगे के पत्रों से लगता है परिस्थितियों ने उनका साथ नहीं दिया।

''क्या आप 'लोकायतन' और उसकी मुख्य भारती 'लोक चेतना' के लिए हलदार साहब से डिजाइन्स बनवा दीजिएगा। मैं चाहता हूं मासांत तक जब मैं लखनऊ जाऊं आप ही के साथ जाऊं। एक तो वहां रहने का कहीं ठिकाना नहीं। दूसरा आपके साथ इधर-उधर जावे और हलदार साहब से मिलने में सुविधा होगी। (8 नवम्बर, 1947)।

पंत जी जिस तरह 'लोकायतन' संस्था खोलना चाहते थे। पत्रों से विदित होता है कि इसकी मुख पत्रिका का पहले नाम 'लोक वाहिनी' रखा जाना था बाद में इसका नाम 'लोक चेतना' हो गया। 'लोकायतन' की तरह पंत जी उदयशंकर कल्चर सेंटर से जुड़कर भी कुछ कार्य करना चाहते थे। उन्होंने 11/1/43 को अपने पत्र में लिखा—लखनऊ के रेडियो प्रोग्राम के बाद मुझे उदयशंकर से मिलने दिल्ली जाना पड़ा। जुलाई तक वह मुझे सेंटर में कुछ फिल्म के संबंध का काम देंगे। सांग्स एंड डाइलाग्स का कल्चर सेंटर बंबई में एक फिल्म, उसके बाद शूट करवाना चाहता हूं। उमा भी मार्च में कल्चर सेंटर फिर से ज्वाइन कर रही है। अभी कोई निश्चित रूप से बात तय मेरी ओर से नहीं हुई है। खैर, जो कुछ भी होगा, भविष्य बतलाएगा। 11/1/43।[33]

जनवरी की 11 ता. के बाद कुंवर सुरेश सिंह को पंत ने 18 फरवरी को पत्र लिखा और इसका कारण अपनी व्यस्तता को बताया। मैं वाया कानपुर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
इलाहाबाद से चला और 31 ता. जनवरी को यहां पहुंचा। तब से इतना काम में व्यस्त रहा कि इससे पहले अवकाश नहीं मिल सका। श्री उदय शंकर 22 ता. को पूना फिल्म के संबंध में जा रहे हैं। यहीं पहुंचते ही उसकी आउट लाइन (सीनरीज) उनके साथ मिलकर तैयार करना पड़ा, कल ही खत्म हो सका। इसी से विलंब से पत्र दे रहा हूं (वही, पृ. 193)।

इसी पत्र में पंत ने यह संकेत किया—मैं यहां अच्छा हूं, संतुष्ट नहीं। पर समय बीत ही जाता है। बहुत संभव है मार्च के बाद कल्चर सेंटर में रहना पड़े। अभी निश्चित नहीं।[34] अल्मोड़ा में पंत सेंटर वालों के मकान में शिफ्ट हो गए। रानीधारा के ऊपर—यहां से सेंटर करीब पड़ता था इसीलिए।

अप्रैल, 1943 तक पंत सेंटर के काम में बुरी तरह व्यस्त हो गए। उदयशंकर की बनी बनायी संस्था थी पंत जी को उसके द्वारा बनने वाली फिल्मों-वृत्त चित्रों के लिए गीत/संवाद और दृश्य संयोजना बनानी थी। वे इसी काम में लगे रहे—मैं यहां सेंटर के काम में हूं। वे लोग अबके फिल्म की तैयारी कर रहे हैं। डायलाग्स और सांग्स मेरे हिस्से में हैं—जो करीब-करीब तैयार हो गये हैं, आजकल रिहर्सल हो रहे हैं। नवंबर से शूटिंग शुरू होगा जिसमें साल भर लगेगा। जिसके लिए हमें पूना जाना पड़ेगा। लेकिन अभी निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता—बाहरी परिस्थितियों पर सब कुछ अवलंबित हैं। मैं यहीं प्रसन्न हूं।[35]

22 अप्रैल को उन्होंने पुनः लिखा—इधर मुझे काफी काम रहा। नवंबर तक मैं यहीं रहूंगा उसके बाद इन लोगों के साथ पूना चला जाऊंगा। आपको मालूम ही होगा कि सेंटर अबके फिल्म के काम में लगा है और प्रभात टाकीज द्वारा उसे प्रदर्शित करेगा।[36]

9 अक्टूबर, 43 को कल्चर सेंटर द्वारा बंगाल रिलीफ फंड के लिए किये जा रहे नाट्य/संगीत प्रदर्शनों का हवाला देते हुए पंत ने लिखा—यहां 7 ता. को शेडो प्ले था, 13/14/15 को शोज हिज एक्सेलेन्सी के आनर में और बंगाल रिलीफ फंड के उपलक्ष में होंगे। उसके बाद 15 ता. नवंबर को टूर में सब लोग चले जायेंगे और इस बीच उसके लिए रिहर्सल्स होंगे। लखनऊ भी आएंगे। अब का प्रोग्रेम विशेष रूप से नवीन और रोचक होगा। दो घंटे तक नान स्टाप शो देंगे। मैं भी टूर में जाऊंगा। भ्रमण करने के लिए अच्छा अवसर मिल रहा हे। ये लोग कम-से-कम एक सप्ताह एक-एक स्थान में रहेंगे। बंबई एक मास तक अभी रहने का इरादा है।[37]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3 फरवरी, 44 को पंत जी ने लिखा कि मैंने इन लोगों के साथ टूर में जाना एक प्रकार से करीब-करीब निश्चित कर लिया है। 3/4/5 दिसंबर को हम लोग लखनऊ में होंगे। 3 फरवरी, 44 को टूर अहमदाबाद में समाप्त होगा। उसके बाद एक महीने की छुट्टी होगी। तब आपके दर्शन कर सकूंगा।[38]

26 मई, 44 को पंत ने मलाड बंबई स्थित नरेंद्र शर्मा के आवास बांबे टाकीज लिमिटेड से एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने सुरेश सिंह को यह बताया कि बंबई जैसी भीड़-भीड़ भरी जगह में उनका मन ऊबता है और यहां की जलवायु भी उनके अनुकूल नहीं है। मैं अभी कुछ महीने यहीं रहूंगा। अगर यहां की जलवायु सूट नहीं की तो अक्टूबर तक यू. पी. चला जाऊंगा। अभी तो सूट नहीं कर रही है। मि. उदय शंकर चाहते हैं मैं यहां उन्हीं के साथ रहूं, लेकिन बंबई जैसी जगह में मेरा जी ऊबता है—बड़ी क्राउडेड सिटी है। फिर क्लाइमेट भी शायद ही मुझे शूट करे। ह्यूमिडिटी के कारण बदन में दर्द रहता है और पेट ठीक नहीं रहता।[39] 24 जुलाई के पत्र में उन्होंने पुनः बंबई में जी न लगने की बात लिखी। इसी समय उन्हें दिल्ली में अपने टॉन्सिल का आपरेशन करवाना पड़ा। 27 अप्रैल, 45 को उन्होंने पुनः मद्रास जाने की बात लिखी। इस बीच उन्हें कालाकांकर की खूब याद आती रही।

25 जुलाई, 45 को उन्होंने मद्रास से एक पत्र लिखा। इससे पता चलता है कि पंत जी किन संघर्षों/बीमारियों में अपनी नाव खे रहे थे। उन्हें कर्तव्य पालन या अंगीकृत कार्य को पूरा करने से रोक भी नहीं पाता था। इस पत्र में उन्होंने अपने स्वास्थ्य, काम तथा मद्रास के बारे में कई रोचक बातों का उल्लेख किया। मेरा स्वास्थ्य धीरे-धीरे ठीक हो रहा है। मद्रास में तरकारियां तो देखने को ही नहीं मिलतीं। आलू भी नहीं, और फल तो मद्रासी बंधु खाना ही नहीं जानते, न कहीं बिकते ही हैं। चीकू को छोड़कर। इसलिए विवश होकर जो कुछ मिल गया इसी पर रहना पड़ता है, इससे जल्दी रिकूप करना कठिन है। इसी पत्र में पंत ने आगे लिखा—आठ महीने की बीमारी ने मुझे अत्यंत दुर्बल बना दिया है। स्नायुओं में तो जैसे जीवन ही नहीं रह गया है। ऊपर से दिसंबर के अंदर ही पिक्चर खतम करनी है। फिल्म का काम छोटा-मोटा काम नहीं होता। हम लोगों के यहां सभी काम—क्या कास्टिमिंग, क्या स्क्रिप्ट, क्या रिहर्सल्स, म्यूजिक सेट्स इक्सेक्ट्रा कैलेबोरेशन के साथ होता है, इसलिए सभी को सभी डिपार्टमेंट्स की सहायता करनी पड़ती है। इसलिए मेरे ऊपर पेपर वर्क के अतिरिक्त और भी कार्यों में परामर्श देने का उत्तरदायित्व रहता है, सो काफी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काम रहता है। पर मुझे ये लोग थकने नहीं देते और बड़ी देखभाल करते हैं, इसलिए आप कोई चिन्ता न करें। पिक्चर खत्म होने तक मैं यहीं हूं, फिर आपको लिखूंगा।[40]

15 अगस्त, 45 को पुनः उन्होंने अपने अच्छे स्वास्थ्य की सूचना देते हुए लिखा—यहां हिंदी-प्रचार सभा के कारण मुझे बहुत लोग जानते हैं। मद्रास के लोग भद्र लोग हैं। यह ''भारत नाट्यम्' की भूमि है। मुझे यह बहुत पसंद है।[41]

30 जनवरी, 46 को उन्होंने पुनः लिखा—एप्रिल तक यहां का काम समाप्त हो जाएगा, उसके बाद गर्मी में पहाड़ अल्मोड़ा जाना चाहता हूं। हम लोगों की पिक्चर देखकर आप बहुत प्रसन्न होंगे—बहुत सुंदर बन रही है। आजकल लगातार शूटिंग चल रहा है। यहां का मौसम भी सुहावना है।[42]

3 मार्च, 46 को उन्होंने लिखा। मैं आजकल बंगलूर में हूं। कल यहां से मैसूर जाऊंगा। 18 ता. तक बंबई पहुंच जाऊंगा। मैं अब उदयशंकर जी के काम से मुक्त हो गया हूं और दक्षिण भारत भ्रमण कर रहा हूं।[43] 24 सितंबर, 46 को उन्होंने लिखा—मि. उदयशंकर के यहां अब मैं नहीं हूं। उनकी 'कल्पना' का शूटिंग भी अक्टूबर तक समाप्त हो जाएगा।[44]

इसके बाद वे बंबई, मद्रास और वहां से प्राचीन भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि के अध्ययन के लिए पाण्डिचेरी गये।

कुंवर सुरेश सिंह की प्रकाशन योजना

कुंवर सुरेश सिंह की प्रारंभ से ही साहित्य में रुचि थी। पत्रकारिता में पहल करने के बाद उन्होंने अपना प्रकाशन शुरू करने की सोची और योजना का प्रारूप पंतजी के पास भेजा। पंत जी ने उन्हें सुझाव देते हुए लिखा—आपकी योजना खूब फूले-फल, मेरी हार्दिक कामना है। प्रकाशन का काम ठीक प्रकार से चलाने के लिए आपको बहुत सतर्क रहना पड़ेगा। काम भी नियमित रूप से करना होगा। क्योंकि अब कंपटीशन के लिए क्षेत्र खुल जाएगा और बुद्धिमत्ता एवं सहयोग के अलावा कार्य तत्परता की भी बड़ी आवश्यकता है।

9 अक्टूबर, 46 के पत्र में उन्होंने विस्तार से लिखा—आपकी योजना मैं देख चुका। मुझे पसंद भी है। पर मैं सोचता हूं वह बहुत बड़ी है और व्यावसायिक दृष्टि से उतनी अच्छी नहीं। यद्यपि वह हमारे साहित्य के कई आवश्यक अंगों की पूर्ति करती है। 'बाल विभाग' मुझे पसंद है—हालांकि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आपको पुस्तकें थोड़ी प्रारंभ में निकालनी चाहिए। लेकिन सब स्टैंडर्ड। बच्चों की पुस्तकें रंगीन सचित्र जैसी इंग्लिश में हैं, उस स्टैंडर्ड की। फैंसी और चाइल्ड साइकालॉजी का जिनमें समत्व हो।

उन्होंने योजना पर गंभीर विचार करते हुए अपने सुझाव दिये। उन्होंने कहा–योजना के कुछ अंग व्यापार की दृष्टि से मुझे पसंद है। उन्होंने तीन सुझाव दिये जिनके अनुसार नौबुल पुरस्कार विजेता तथा वर्ल्ड क्लासिक्स के अनुवाद-लेखकों को अच्छा चुनिये, अच्छा ये कीजिये, चुनी हुई कविताएं/कहानियां। द वर्ल्ड लाइब्रेरी आफ द वेस्ट बुक्स के ढंग की बड़ी-बड़ी पुस्तकों का संक्षिप्त रोचक सार। आपकी लाइब्रेरी में इस सिरीज के कुछ वाल्यूमस हैं, हिंदी के प्राचीन/मध्यकालीन विख्यात कवियों की रचनाओं के संपादित संस्करण साथ ही अंग्रेजी के उत्तम नाटकों का हिंदी रूपांतर आदि।

अंत में उन्होंने लिखा–और भी मैं यथासंभव आपको सजेशंस भेजूंगा। मेरा मुख्य अभिप्राय यह है कि आप थोड़ी चुनी हुई ऐसी पुस्तकों पर मनी इंवेस्ट करें जो एक साथ ही बिक सकें और जो आवश्यक भी हों। बायोलाजी, साइकोलोजी, फिलासफी आदि बहुत कम बिकती हैं, फोटोग्राफी आदि भी अधिक नहीं बिकती। उनमें रुपया बहुत खर्च होता है। वैसे आप और लोगों की भी राय ले लें पर योजना की अधिकांश पुस्तकों में अवश्य घाटा आएगा। उन्होंने लिखा–पहली जरूरी चीज है सेलेक्शन्स ऑफ बुक्स, दूसरी नीट ब्यूटीफुल स्टैंडर्ड प्रिंटिंग, तीसरी और बहुत जरूरी आर्ट आफ एडवरटिजमेंट एंड पुश।

इस अंश से यह स्पष्ट है कि पंत को प्रकाशन व्यवसाय का कितना गहरा अनुभव था। वे कल्पना में ऐसे नहीं उड़ते थे जिससे यथार्थ की जमीन छूट जाय। जीवन और जीने के लिए आर्थिक दृढ़ता आवश्यक है और उसमें व्यावहारिक ज्ञान सदा सहायक होता है। कुंवर सुरेश सिंह की इस योजना के संबंध में बाद के पत्रों में कुछ नहीं मिलता है।

दक्षिण से लौटने के बाद पंत जी आकाशवाणी से जुड़ गये। फिर वे इसके कार्यक्रमों में बुरी तरह व्यस्त हो गये। उन्हें कभी-कभी दिल्ली और लखनऊ भी जाना पड़ता था। उन्होंने 17/3/50 के पत्र में लिखा–मुझे तो ऑल इंडिया रेडियो से सम्बद्ध हो जाने के कारण शायद यहीं रहना पड़ेगा। हिंदी के सब स्टेशन विशेषतः लखनऊ, पटना, दिल्ली, प्रयाग, जलंधर मेरे निरीक्षण में हैं। बीच-बीच में इधर-उधर भी जाना पड़ता है। फरवरी में दिल्ली गया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मासान्त तक लखनऊ जाऊंगा।[15]

पंत जी के प्रयास इलाहाबाद तथा आकाशवाणी के अन्य केंद्रों से ग्राम-मुखी कार्यक्रमों की शुरूआत हुई और वे जिस 'लोकायतन' संस्था की स्थापना करना चाहते थे उसी नाम से आकाशवाणी से एक कार्यक्रम भी प्रारंभ हो गया। ग्राम-मुखी कार्यक्रम के लिए वे कितने चिंतित रहते थे इस संदर्भ में उन्होंने एक पत्र कुंवर सुरेश सिंह को लिखा—यदि आप 'किसान' की समूची फाइल भिजवा दें तो ए. आई. आर. उसके लिए आभारी होगा, मुझे भी बड़ी प्रसन्नता होगी, हम ग्राम पंचायत में उसका अधिकाधिक उपयोग कर सकें।[16]

जब कोई आकस्मिक घटना हो जाती है या विशेष त्योहारों पर आकाशवाणी की व्यस्तता बढ़ जाती है। पंत जी ने अपने उसी पत्र में लिखा—सरदार पटेल साहब की मृत्यु के कारण हम लोगों का कार्य बहुत बढ़ गया था। सब प्रोग्राम बदलने पड़े थे। उनके अस्थि विसर्जन कें लिए भी पहले से प्रबंध करना पड़ा था। यहां से रनिंग कमेंट्री हुई थी जो दिल्ली से भी रिले हुई थी। इस कारण सब छुट्टी-बुट्टी समाप्त हो गई। फिर उन्होंने लिखा—ए. आई. आर. को आप पोस्ट आफिस डिपार्टमेंट का बड़ा भाई ही समझिये। यहां उत्सवों, रविवारों, तिथि-त्योहारों पर और भी कार्य बढ़ जाता है जब और विभागों में छुट्टी रहती है। होली में मथुरा जाना है आफिस के काम से रिकार्डिंग करवाने। एस. डी. भी जा रहे हैं। 27 ता. का जालंधर उसके बाद एप्रिल, मई, जून के टाक शिड्यूल्स तैयार होंगे। (16/3/51)[47]

इससे आकाशवाणी के साथ पंतजी की प्रतिबद्धता, व्यस्तता, और कार्य के प्रति निष्ठा दोनों का पता चलता है। लोग पंतजी को स्वप्नदर्शी समझते थे। जिनका काम कल्पना की दुनिया में विचरण था और रोजी-रोटी के लिए जो कुछ नहीं करते थे। उनके पत्रों से उनके व्यवहारवादी जीवन की पुष्टि होती है।

पंतजी लोगों के काम भी करवा दिया करते थे। उनके यहां एक पोस्टमेन था जिसकी जमीन कालाकांकर में थी। वह रहने वाला भी वहीं का था। उसके जमीन संबंधी मामले को सुलझाने के लिए पंतजी ने कई बार सुरेश सिंह को लिखा। (5/1/52)।

उन्होंने 10 जून, 52 को एक पत्र में लिखा—आपके पास इस पत्र के साथ पोस्टमेन की जमीन के बारे में विस्तृत विवरण भेज रहा हूं। यदि आप इस गरीब का कुछ हित कर सकें तो बड़ा अच्छा हो।[48]

निजी पत्रों की विशेषता उसमें व्यक्तिगत बातों का उल्लेख और आत्मीय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जनों का विवरण होता है। पंतजी के पत्रों में इस तरह के उल्लेख बहुत है। यही उल्लेख उनके पत्रों को सरस बनाते हैं। एक पत्र में उन्होंने लिखा—कालाकांकर में जामुन बहुत होते हैं, अब उनका मौसम भी आ रहा है। आप मेरे लिए 3/4 सेर जामुन के बीज सुखाकर इकट्ठा करवा दें। तो बड़ी कृपा होगी, डायबिटीज के लिए जामुन के बीजों का चूर्ण अत्यंत लाभदायक सिद्ध होता है। जुलाई में कभी मैं उन्हें आपके यहां से मंगवा लूंगा।[49]

19 अक्टूबर, 1949 को उन्होंने लिखा—अगर आप मेरे लिए वहां गांव से 5/10 सेर अच्छा घी किसी से भेजवा सकें तो बड़ी कृपा हो। घी अच्छा हो चाहे जो भाव हो। यहां 2.5 छटांक का शायद मिलता है पर उसमें दुनिया भर की चीजें मिली होती हैं। डालडा खाने से स्वास्थ्य खराब हो गया है। घी तो पृथ्वी पर नगरों में दुर्लभ है। आप कुछ प्रबंध करवा सकें तो उपकृत रहूं।

लेकिन एक पत्र में तो उन्होंने सोमा के लिए एक सेर लखनऊ की चिकनी सुपारी जो काली तथा चपटी होती है—लाने को लिखा। उसके लिए एक जोड़ा 3.5 या 3 साइज का ऊंची एड़ी का वाटा का विद आपेन वर्क सैंडिल खरीद कर भिजवाने को लिखा।[50]

असल में इन व्यक्तिगत कामों के उल्लेख से ये पत्र अत्यंत निजी बन गये हैं जो इस बात के द्योतक हैं कि ये कभी भी छपाने की गरज से नहीं लिखे गये, इसीलिए इनमें जो कुछ लिखा गया है वह सच है और कवि के सच्चे, मानवीय रूप को व्यक्त करता है। पंत के इस रूप पर किसी प्रकार का मुलम्मा नहीं है। उन्हें इसी रूप में देखा जाना चाहिए। और उनका यही रूप इन पत्रों के तमाम आत्मीय संबोधनों में बिखरा पड़ा है।

पंत के ये पत्र अत्यंत आत्मीयतापूर्ण हैं। इनमें एक सहनशील व्यक्ति के दर्शन होते हैं। वे स्नेह/सम्मान/आत्मीयतापूर्ण संबोधन-अभिवादन करना कभी नहीं भूलते। स्नेही मित्रों की बराबर खोज-खबर लेते हैं। जहां उत्तर देने या पत्र लिखने में देर होती है वहां तुरंत क्षमा मांगते हैं। वे कभी कोई ऐसी बात नहीं लिखते जिससे किसी को चोट पहुंचे।

उनके संबोधनों के कई रूप हैं—प्रिय सुरेश सिंह जी, नमस्ते। आपका कृपा पत्र मिला बड़ी प्रसन्नता हुई। 22 जुलाई, 29), प्रियवर सुरेश सिंह जी, आपका कृपा पत्र कल संध्या के समय मिला, बड़ी प्रसन्नता हुई (8/5/31)। प्रियवर सुरेश सिंह जी, आपका अत्यन्त कृपा पूर्ण पत्र पाकर मैं बड़ा प्रसन्न हुआ। (2 जुलाई 31), प्रिय भाई सुरेश सिंह जी। परम प्रिय भाई (18/5/34), प्रिय मिसेज

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सुरेश सिंह (27 मार्च, 41), प्रिय बहिन (14/4/41), उसके बाद वे अपने पत्रों में सुरेश दंपत्ति को यही आत्मीयता भरा संबोधन देते रहे।

पत्रों में स्नेही जनों को अभिवादन या उन्हें स्मरण करना वे कभी नहीं भूलते। श्री मिसेज सुरेश सिंह को बहुत-बहुत स्नेह पूर्वक नमस्ते कह दीजिएगा (22/10/38), आशा है आप सकुशल हैं। अशोक को प्यार (15/10/38), मिसेज सुरेश सिंह, शिरीष स्वस्थ होंगे। दोनों को सस्नेह नमस्ते। मां साहब और रानी साहिबा से मेरा नमस्ते कहिएगा। श्री दीवान साहब से भी। आशा है आप सपरिवार सानंद हैं। मैं प्रसन्न हूं। आपको सपरिवार होली की शुभ कामनाएं भेजता हूं।

संदर्भ

1. पंत जी और कालाकांकर, पृ. 18
2. वही, पृ. 56
3. वही, पृ. 82
4. वही, पृ. 86
5. वही, पृ. 86
6. वही, पृ. 87
7. वही, पृ. 88
8. वही, पृ. 103
9. वही, पृ. 112
10. वही, पृ. 115
11. सुमित्रानंदन पंत जीवन और साहित्य, भाग-1 पृ. 401
12. साहित्यधारा, प्रकाशचंद गुप्त, पृ. 21
13. वही
14. वही
15. पंत जी और कालाकांकर, पृ. 121
16. वही, पृ. 121
17. वही, पृ. 123
18. वही, पृ. 124
19. वही, पृ. 22
20. श्री सुमित्रानंदन पंत : स्मृति चित्र, पृ. 125

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

21. पंत जी और कालाकांकर, पृ. 221
22. वही, पृ. 301
23. वही, पृ. 303
24. वही, पृ. 305
25. वही, पृ. 326
26. वही, पृ. 179-180
27. वही, पृ. 182
28. वही, पृ. 190
29. वही, पृ. 193
30. वही, पृ. 216
31. वही, पृ. 190-191
32. वही, पृ. 194
33. वही, पृ. 196
34. वही, पृ. 197
35. वही, पृ. 200
36. वही, पृ. 202
37. वही, पृ. 204
38. वही, पृ. 207
39. वही, पृ. 208
40. वही, पृ. 209
41. वही
42. वही, पृ. 210
43. वही, पृ. 210
44. वही, पृ. 211
45. वही, पृ. 227
46. वही, पृ. 228
47. वही, पृ. 14
48. वही, पृ. 233
49. वही, पृ. 234
50. वही, पृ. 244
51. वही, पृ. 119

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंत के पत्रों की भाषा

पंत के पत्रों की भाषा उनके गद्य की भाषा से भिन्न है। उनका गद्य उनके उपन्यास उनकी 5 कहानियों और काव्य ग्रंथों की भूमिकाओं तथा समीक्षापरक निबन्धों में मिलता है। वह गद्य रचनात्मक गद्य है। उसमें कसाव है और है शब्दों का रचनात्मक उपयोग। पंत के पत्रों का गद्य इस प्रकार का नहीं है। यह गद्य एक सहज, सरल मित्र द्वारा एक मित्र को लिखी गईं चिट्ठियों का गद्य है। फिर भी एक कवि और साहित्यकार द्वारा लिखा गया गद्य है। इसलिए उसकी कुछ विशिष्टताएं तो हैं ही।

खिचड़ी भाषा

पंत के पत्र पढ़ते ही एक बात विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करती है और वह है मुक्त हस्त से अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग। उन्होंने एक पत्र में ऑक्सफोर्ड की कान्साइज डिक्शनरी प्रयाग भेज देने के लिए कुंवर सुरेश सिंह को लिखा था। उन्होंने स्वीकारा था उनके प्रयोग का अभ्यास पड़ गया है। कालाकांकर उसके पहले और उसके बाद पंत जी ने अंग्रेजी साहित्य और पाश्चात्य विचारकों का अंग्रेजी भाषा के माध्यम से गहन अध्ययन किया था। जिस भाषा को हम खूब पढ़ते हैं फिर हमारी सोच और उसकी शब्दावली हमारे मन में चक्कर काटने लगती है। हो सकता है इन पत्रों में अंग्रेजी शब्दावली के प्रयोग का कारण यही हो किंतु उनका कोई पत्र ऐसा नहीं है जिसमें एक दो अंग्रेजी के शब्द, मुहावरे, वाक्यांश नहीं। इतना अवश्य है इन्हें पंत ने देवनागरी लिपि मे ही लिखा है। वैसे इस संकलन में कुछ पत्र अंग्रेजी के भी हैं।

पंत के पत्रों में 'स्टडीज, डिग्री, प्योर लिटरेरी राइटिंग्स, पेइंग, प्रेस वर्क, स्क्वीजिंग टाइप, कान्स्टीट्यूशन, लेस टैक्सिंग, एल्वो रूम, हैजर्ड अटेम्पटस, सैटिस्फेक्शन, फिजिकली मेंटली अनफिट, नेटिवस्टेट्स एटमॉसफियर, कान्जीनियाल,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
विंटर, आर्डिनी मिडिल क्लास लिविंग, वेजेज, काम एंड क्वाइट रूम, क्लियर, फ्रैंकली, क्विकेसवे, टर्म्स डिक्टेट, नैसेसिटी, इमोशन, टच, पर्सनल लेटर, ट्रीट, हेल्थ, लाइफ, मैटीरियल नीड्स, सैटिसफैक्शन, पोजीशन प्लेजेंट।

उपर्युक्त शब्दावली के पहले दो शब्द स्टडीज और डिग्री को छोड़कर शेष सारे शब्द, शब्द गुच्छ या वाक्यबंध उनके एक ही पत्र से लिए गए हैं।[1] पंत भी इसके प्रति सचेत थे। इसलिए उन्होंने इसी पत्र के अंत में लिखा–इस हिंदी, अंग्रेजी की खिचड़ी के लिए क्षमाप्रार्थी हूं। और कहना न होगा आगे चलकर अंग्रेजी शब्द प्रयोग की यह बहुलता कम होती गई और वे हिंदी की सरल शब्दावली का ही प्रयोग करने लगे। अंग्रेजी शब्दों का वे वहीं प्रयोग करते थे जहां विषय वस्तु का मांग के अनुरूप अंग्रेजी शब्द प्रयोग के बिना उनका काम नहीं चलता था।

अगले पत्र में उन्होंने–इसेन्शली पोयट, स्कॉलर, स्कीमड्री, लिटरेचर हिस्टारिकली, अप्रोच, फिलासोफिकल स्टेंड प्वाइंट, टेम्परामेंट, डिपेंड, स्टैंड प्वाइंट्स, क्लॉक, ट्यूटरशिप, इक्सपेन्सिव हैबिट, सिटी लाइफ, माइंड, रेजिस्टैंस, सैरीन प्लेस, हैंडराइटिंग, लास्ट स्टेशन, कांवेंस शब्दों का प्रयोग किया। इसमें अंग्रेजी की दो कहावतों का भी उन्होंने प्रयोग किया था। इफ यू वांट वांट टु इंक्लेस्प द ट्रूथ लेट पास द वर्ड, फालोद थॉट, द थॉट, तथा इट अज द स्पिरिट आफ मैन इन हिम रेट नोयथ मेन।

किंतु तीन चार पत्रों के बाद यह बहुलता की प्रवृत्ति कम हो गयी। इस संग्रह में ऐसा कोई पत्र नहीं है जिसमें अंग्रेजी का कोई-न-कोई शब्द न हो।

पंत के इन पत्रों का गद्य सहज, बोलचाल का प्रवाह पूर्ण गद्य है। इनमें कुछ पत्रों को छोड़कर कहीं भी गंभीर चिंतन का बोझिलपन नहीं है। और जहां चिंतन है भी तो वहां की भाषा अत्यंत सरल है। शब्द प्रयोग से पंत ने इन पत्रों में किसी को आतंकित या अपनी विद्वता बघारने का प्रयास नहीं किया है इसलिए पहली दृष्टि में ये पत्र बिलकुल असाहित्यिक लगते हैं किंतु पंत के व्यक्तित्व और उनके मन को समझने के लिए ये पत्र बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

पंत के इन पत्रों की शब्दावली एकदम संस्कृत तत्सम न होकर तद्भव और चलती हुई बोली पर आधारित है। वाक्य सर्वत्र छोटे-छोटे और प्रवाह पूर्ण हैं। एक दो जगहों को छोड़कर इन पत्रों में भावना या आवेश की छलकन कहीं नहीं है। जब पंत अपने आर्थिक संघर्ष या कालाकांकर छोड़कर प्रयाग जाते समय उठे द्वंद्व को व्यक्त करते हैं उन्हीं क्षणों को छोड़कर उनकी भावुकता का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहीं पता नहीं चलता है। वे अपने सुख-दुख और अपनी भावनाओं को भी बड़े संयत ढंग से व्यक्त करते हैं। इन पत्रों में किसी पर आक्षेप नहीं है। पंत का शील सर्वत्र गंगा की तरह निर्मल है। एक सहज पढ़ा-लिखा मनुष्य कैसा गद्य लिख सकता है इन पत्रों से यही विदित होता है।

संस्कृत तत्सम शब्दावली

प्रस्थान, निर्धारित, स्थगित, आजीविका, उपक्रम, स्नेहभाजन, पुनरुज्जीवित, सम्मति, क्षति, स्नेहार्दिक, अंतरतमहृदय, प्रतिघात, तीव्र, अवसान, सुकुमार अवस्था, किरण, कष्ट-सहिष्णु, स्पष्टतः, कल्प, त्रिकालदर्शिता, शैफाली, फलीभूत, अतिशयोक्ति, लोकायतन, लोकायन, लोक चेतना आदि।

किंतु जैसे-जैसे पंत बाहर के कार्यों में संलग्न होते गए उनके इन पत्रों ही भाषा अत्यंत बोलबाल की होती गयी।

बोल चाल के शब्द

मार्फत, चिंता, दुख, चीजें, धूप, पानी सनसनी, दुरुस्त, बस्ती, दुहरी, जान-बूझकर, दिक्कत, मुसीबतों, फुड़िया अच्छी, मजे, रोज, दिक्कत, रत्तीभर, खास, बेहद पसंद, मुलाकात, काली, चपटी, चुकाना, सूना-सूना, सुबह, वक्त, काफी, साधारण, बातें, सुविधाजनक, तिलभर का अंतर, पूछना, है, जी, ऊब, फायदा, एकान्त, छपवा, चक्कर आदि।

प्रवाहपूर्ण वाक्य रचना

पंत के पत्रों का गद्य प्रवाहपूर्ण वाक्य रचना से संपन्न है। इनमें कहीं भी अटपटापन या उक्ति का वैचित्र्य नहीं मिलता है। ये पत्र घरेलू व्यक्तियों को लिखे गए पत्रों की तरह हैं जिसमें किसी प्रकार का दुराव-छिपाव या औपचारिकता नहीं है। पत्रों में शिष्टाचार तो है किंतु उलझन/अस्पष्ट शब्दावली या घुमावदार वाक्यों द्वारा कहीं कथ्य को छिपाने की चेष्टा नहीं की गयी है इसलिए इन पत्रों के गद्य में एक वाक्य से दूसरे वाक्य के बीच, एक शब्द गुच्छ से दूसरे शब्द गुच्छ के बीच या दो वाक्यों में/वाक्य बैंधों में किसी तरह का तनाव नहीं है। वाक्यों की यह सरलता पंत के सरल/निश्छलपन को व्यक्त करती है। उन्हें जो लिखना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होता है वे निःसंकोच लिख देते हैं।

इस पूरे पत्र-संग्रह में सिर्फ दो पत्र ऐसे हैं जो पंत के मन के थोड़े तनाव को व्यक्त करते हैं वे भी पूरे पत्र नहीं। उनका सिर्फ एक-एक वाक्य। एक तो शांति प्रिय जी के संबंध में लिखा गया पत्र। दूसरे पत्र छपवाने के डॉ. रामविलास शर्मा के संदर्भ को लेकर लिखा गया पत्र। अन्यथा सर्वत्र उनके पत्रों के वाक्य एक दम सरल तनाव रहित हैं। उनमें कहीं आवर्त्त/घुमड़न या परतें नहीं हैं। दो-चार उदाहरणों से मेरी बात स्पष्ट हो जायेगी।

आपका पत्र आज सुबह मिला, हार्दिक धन्यवाद। आशा है आप कालाकांकर पहुंच गई होंगी। 'रूपाभ' कल सुबह तक छप जाएगा। परसों तक तैयार भी हो जाएगा (29/5/38)। इस 'प्रयाग' (नौकर) से मैं परेशान आ गया हूं, आप कृपा कर मेरे आने तक मेरे लिए कोई दूसरा नौकर तलाश दें, बड़ा कृतज्ञ हूंगा। नौकर इतना बुड्ढा न हो, ईमानदार हो, रात को यहां सो सके (21/8/38)। मैं और सोमा सकुशल हैं। आप किसी प्रकार की चिंता न कीजिएगा (22/10/38)।

भाई, मेरा जी कालाकांकर वापस आने को अभी नहीं करता है। क्या आप मुझे समझ सकेंगे। आपको मैं बहुत-बहुत प्यार करता हूं। मेरे कपड़े, चादर, तौलिए, छाता, फाउंटेनपेन अवश्य किसी से भेजवा दीजिएगा। मुझे इन सबके बिना तकलीफ है। कपड़े मेरे मेज के ड्राअर्य में पड़े हैं और काले वाले टीन के ट्रंक में। चाभी भेज रहा हूं (1/4/40)।

यह जान कर दुःखी हूं कि कुंवर साहब काफी दुर्बल हो गए हैं और उन्हें 5वें 6वें दर्द हो जाता है। आशा है, जल्दी ही उन्हें छुट्टी जेल से मिल जाएगी। क्या मई तक छोड़ दिये जाएंगे। ऐसा हो जाता तो बड़ा अच्छा था। अब के बहुत ही गर्मी है। इलाहाबाद तो नरक बन जाता है (26/4/41)।

आप लोग अस्वस्थ रहे और आपके रुपये भी चोरी चले गये, जानकर दुःख हुआ। मैं भी इधर अनेक संकटों से गुजरा हूं। 2 अक्टूबर को मुझे दुबारा हार्ट अटैक हो गया था। इधर 25 नवंबर को शांता गिर पड़ी और उसकी भी कैप के पांच टुकड़े हो गए—बड़ा कष्ट उसे रहा (7/12/73)।

आपका स्नेह सिंचित पत्र सोमवार को सवेरे मिला। ऐसी छोटी-मोटी बातों के लिए इतनी अधिक भाव-प्रबलता क्या ठीक है कि आंखों में आंसू भर गये। मैं भला किस योग्य हूं। आपके स्नेह के ही नहीं, गहरी कृतज्ञता के पाश में भी बंधा हूं। उस रोज आपसे भेंट हो सकी, बड़ा अच्छा लगा। शांता को तो अभी 2-3 महीने तख्त पर पड़ा रहना है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
डॉ. नागर को याद कर दें। वे अभी वैसे ही फुर्तीले होंगे। अब के कालाकांकर आने पर उन्हें उनके भोलेपन, सदाशयता और फुर्ती तथा संगीत प्रेम के लिए भरी सभा में मान-पत्र भेंट करने की योजना बनाएंगे। (19/12/73)।

डॉ. रामविलास मेरे पत्र छपाना चाहते हैं, इसमें कोई बुराई नहीं। डॉ. रामविलास ने मुझे इस बारे में नहीं लिखा, उन्हें पूछना तो चाहिए ही था। आप चाहें तो उन्हें लिख दें कि पंत जी से भी पूछ लें, देखें क्या कहते हैं। वैसे मुझे प्रसन्नता ही होगी कि आपको लिखे मेरे पत्र साहित्य के अंग बन जायं। (18/5/76)।

उपर्युक्त अंशों के वाक्य स्पष्ट, प्रवाहपूर्ण और प्रसार में छोटे हैं। उन्होंने लंबे-लंबे वाक्य भी लिखे हैं और इन पत्रों की भाषा के अनुशीलन से जहां एक बात मेरे सामने आई है कि पंतजी अंग्रेजी शब्दावली प्रयुक्त करने के अभ्यस्त हैं। वहीं यह बात भी स्पष्ट होती है कि इन पत्रों की वाक्यरचना पर अंग्रेजी वाक्य रचना का पर्याप्त प्रभाव है।

आप लोग अगर यहां सितंबर में आयें तो आपके रहने का प्रबंध मैं स्वयं बिना किसी कठिनाई के कर सकूंगा। तब आप मेरे चाचा पं. हंसादत्त जी के अपर फ्लैट के किसी विंग में रह सकते हैं। तब नरेंद्र (उनका लड़का) 10 जुलाई को मेरठ चला जावेगा, जहां वह कालेज में है (19/4/43)।

उनके पत्रों में अंग्रेजी वाक्य-रचना के आधार पर बने संयुक्त और मिश्रित अनेक वाक्य हैं। उनके पूरे पत्रों की वाक्य रचना का इस दृष्टि से अनुशीलन रोचक होगा किंतु वह मेरे खोज-विषय की सीमा की मुख्य धारा में नहीं आता है।

पंत जी मौसम के प्रति बड़े संवेदनशील थे। वातावरण/परिवेश के विस्तृत चित्र तो उनके पत्रों में नहीं मिलते किंतु छोटे-छोटे वाक्यों द्वारा मौसम के प्रति उनकी प्रतिक्रिया उपलब्ध होती है।

पहाड़ में भी अब के गर्मी पड़ रही है। यद्यपि नैनीताल में ठंडक ही मिलेगी। प्लेन्स में तो अत्यधिक मात्रा में पड़ रही है सुनता हूं (8/5/31)।

यहां दो-एक रोज से पानी बरस रहा है। इसलिए खूब प्लेजेंट लगता है। (2/7/31)। अभी कालाकांकर में बहुत गर्मी है। बिजनौर में तो गर्मी है ही नहीं—बड़ा ही प्लेजेंट रहता है। (26/5/32) पंत जी को वर्षात का मौसम बहुत अच्छा लगता था। वे 30 अगस्त, 33 के पत्र में कालाकांकर से लिखते हैं—आजकल यहां बहुत पानी बरस रहा है। अभी-अभी धूप और पानी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साथ-साथ थे। बहुत ही सुंदर लग रहा था (वही, पृ. 89)।

अल्मोड़ा रेंस में सबसे प्लेजेंट हिल स्टेशन समझा जाता है। सितंबर का मंथ वहां का आइडियल मंथ माना जाता है। (23/5/34)। एक पत्र में वे लिखते हैं—लैंसडाउन में पहली बार अबके आया। यहां बड़ा ही सुहावना लगता है। ठंडा काफी है। कल पानी भी बरसा था। जून भर हम यहीं रहेंगे। (3 जून, 34)। लेकिन कभी-कभी वर्षात से वे ऊब जाते थे। अल्मोड़ा से उन्होंने लिखा—यहां बेहद पानी इस बीच बरसा, जी ऊब गया (25 अगस्त, 34)।

मैं यहां प्रसन्न हूं। हाल में यहीं करीब 2.5 इंच का स्नोफाल हुआ है, इससे सर्दी काफी बढ़ गयी है और नित्य ही बदली रहती है। सूर्य महाराज के दर्शन दुर्लभ ही से हो गये हैं। अबके कई साल बाद—दस-बारह साल बाद स्नोज देखने को मिले। (अल्मोड़ा-5 जनवरी, 35)।

पंत जी को गर्मी बरदास्त नहीं थी। गर्मी वहां (कालाकांकर) अवश्य होगी, यहां भी पानी नहीं बरस रहा है (अल्मोड़ा-1 जून, 35)। और 7 अगस्त, 35 के पत्र में वे लिखते हैं—यहां अत्यंत रमणीय अब होने लगा है। तब तक और भी हो जावेगा (वही, पृ. 16)। 28 जुलाई, 37 को वे प्रयाग से लिखते हैं—मौसम यहां सुहावना है, कल परसों खूब पानी बरसा। आज भी बादल हैं (वही, पृ. 129)। पहाड़ की लाइफ का पेज मेरे सामने छुटपन ही से खुला सा है, यहां दूसरे ही तरह के रिएक्स्पांस होते हैं (11/5/40)।

इलाहाबाद से उन्होंने लिखा—यहां तो अब गर्मी बढ़ती जा रही है। हमारी कॉटेज चारों ओर से घिरी होने के कारण रात को बहुत बेचैनी गर्मी के सबब से होती है। सोचता हूं कि पहाड़ चला जाऊं। जुलाई में वापस आ जाऊंगा (28/4/41)।

अबके अल्मोड़ा में मौसम अच्छा है। बीच में पानी पड़ने से गर्मी का पता भी नहीं चलता (22/4/43)। आजकल कुंभ के कारण प्रयाग, बंबई सा जन संकुल लगता है (वही, पृ. 235)। यहां आजकल बड़ा अच्छा मौसम है। खूब पानी रहा है। वहां भी मौसम सुहावना ही होगा और आप सब लोग प्रसन्न तथा सकुशल होंगे (इलाहाबाद 26/7/58)। यहीं से 25 अगस्त, 59 का एक और पत्र है जिसमें बरसात का चित्रण है—यहाँ खूब ही पानी बरसा, टैगोर टाउन के मार्ग जलमग्न भी रहे। अभी भी बदली घिरी है (वही, पृ. 260)। इधर मौसम भी बड़ा खराब रहा है, अब भी कुछ ठीक नहीं है। संभवतः अक्टूबर से सुधार हो (वही, पृ. 267)। 20/4/67 के पत्र में वे लिखते हैं—यहां एक सप्ताह से लगातार पानी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बरस रहा है। सूरज के तो दर्शन ही नहीं होते। दिल्ली में तो बहुत पानी था। पता नहीं लखनऊ में क्या हाल है (इलाहाबाद)। ऊपर संकेत किया गया है कि पंत जी गर्मी से बहुत त्रस्त रहते थे। उन्होंने लिखा–मौसम यहां कुछ भी अच्छा नहीं है, बहुत गर्मी है, पानी बरसता तो है पर जी खोलकर नहीं (वही, पृ. 288 इलाहाबाद)। मौसम ठीक होने पर समय की सूचना दे सकूंगा। अभी तो बड़ी ठंड है। आज नहान के कारण और भी है (15/1/68)।

2 जनवरी, 69 को उन्होंने इलाहाबाद से लिखा–इधर यहां बड़ी सर्दी पड़ी। कल अमावस का स्नान भी हो गया। अब के वसंत पंचमी जल्दी ही आ रही है। तब से निराला जन्म दिवस के तेज के प्रभाव से आशा है अवश्य मौसम में कुछ गर्मी आ सकेगी (वही, पृ. 293)। यहां पानी न बरसने से काफी गर्मी है। मौसम और ठीक हो तो वहां अवश्य आऊंगा। तब कालाकांकर और भी हरा भरा रहेगा (19-7-70)। इधर तीन-चार दिन से पानी बरसना शुरू हुआ है। अभी भी बरस रहा है। प्रयाग में अधिकतर अगस्त में ही बरसता है। अभी तो वहां भी गर्मी होगी। ऋतु बदलने पर अवश्य वहां आने का कार्यक्रम बनाऊंगा (अगस्त, 70 इलाहाबाद)। यहां तो अब काफी गर्मी पड़ने लगी है। हमारा मकान भी रेल के डिब्बे सा है, तप जाता है। गर्मी तो वहां भी होगी ही (16-5-75)। जब बिजली रहती है कूलर से काम चल जाता है। वैसे इधर अधिकतर रहती ही है (12/6/76)।

कुछ पत्रों में पंत जी ने देश राजनैतिक मौसम पर भी टिप्पणियां की हैं। समाचार पत्रों से लाल साहब के केस के समाचार मुझे मिल गये थे। बड़ा आघात मन को लगा, पर विपत्ति के समय धैर्य ही एक मात्र दवा है। न्यायालयों में तो ठीक गलत बयानों के अनुसार काला-सफेद और सफेद काला होता रहता है। आशा है आप लोग हाईकोर्ट में अपील करेंगे (7/3/65 इलाहाबाद)। दूसरे पत्र में पुनः लिखा–न्यायालयों की दशा देखकर तो निश्चय ही दुःख होता है। वहां काला-सफेद और सफेद काला होता रहता है। यह तो सभी कहते हैं। आपने जिस धीरज से यह सब अत्याचार सहा है, उसी धीरज से आगे कोर्ट में अपील अवश्य कर लीजिए। मुझे विश्वास है, वहां न्याय होने की अधिक संभावना है (16-4-65)।

यह पत्र इस बात की ओर संकेत करता है कि किस प्रकार राजनैतिक प्रतिद्वन्द्विता से झूठे केस बनाये जाते हैं और व्यक्तियों को परेशान किया जाता है। एक पत्र में उन्होंने हिंदी की दुर्दशा पर प्रकाश डाला–श्रीमान् व्यास जी तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिवंगत हो गये (व्रज मोहन व्यास)। वैसे इधर अनेक साहित्यकार जाते रहे। हिंदी पर सरकारी, गैर सरकारी तौर से भी कुछ बुरी दशा आयी हुई है (7/5/65)। अगले पत्र में देश दशा पर चिंता–किसी प्रकार की चिंता न कीजिए। बहुत कुछ ईश्वराधीन होता है। समय पर सब कुछ ठीक ही हो जावेगा, ऐसी आशा है। देश की जैसी स्थिति है उसमें सभी कुछ संभव है। सदियों की मध्ययुगीन हमारी प्रवृत्तियां बाहर निकल आयी हैं। पता नहीं कब सुधार होगा (26/5/65)।

पाकिस्तान से युद्ध विराम को पंत जी ने भी अनेक देश हितैषियों की तरह शंका की दृष्टि से देखा था–युद्ध विराम तो ऐसा ही धोखा जान पड़ता है। आगे भी अनेक संकटों का सामना देश को करना है (30/9/65)।

देश में जो कुछ घटता था पंत जी के मन पर उसका प्रभाव पड़ता था। वे अपने में मग्न कवि नहीं थे उन्हें देश और समाज से पूर्ण सरोकार था। उन्होंने 14-2-66 के पत्र में लिखा–इधर वर्षारंभ बड़ा ही अशुभ होने के कारण मन बड़ा अस्त-व्यस्त रहा। श्री शास्त्री जी तथा डॉ. भावे की मृत्यु बहुत ही अप्रत्याशित तथा दुःखद हुई। वैसे भी देश बड़े संकट से गुजर रहा है। आशा है, इंदिरा जी यथाशक्ति देश का संचालन समुचित दिशा में करेंगी (वही, पृ. 280)। देश के संकट पर उन्होंने पुनः लिखा–

उत्तर प्रदेश में तो नान कांग्रेस मिनिस्ट्री बनने के समाचार सुनाई दे रहे हैं। देखें नयी मिनिस्ट्री लोगों का असंतोष कहां तक मिटा सकेगी। वैसे देश संकट की स्थिति से गुजर रहा है (3/4/67)। लाल साहब की रूस के अस्पताल में मृत्यु हो गयी थी। उन्होंने स्वेतलाना स्टालिन की बेटी से विवाह किया था। वे भारत में शरण लेने आई थीं। इस पर पंत जी ने लिखा। स्वेतलाना जी आगे क्या करेंगी, इस पर बहुत कुछ निर्भर करता है। यहां तो छागला के कमानों से ज्ञात होता है कि उन्होंने भारत में रहने के लिए आश्रय की मांग नहीं की थी, पता नहीं ये सब राजनीति के चक्कर हैं (वही, पृ. 285)।

इलाहाबाद में सांप्रदायिक तनाव कभी-कभी उत्पन्न हो ही जाता है। 21/3/68 को उन्होंने लिखा–यहां होली के बाद सांप्रदायिक दंगा तथा तनाव चल रहा है। कल इंदिरा जी भी आई थीं। अभी चल ही रहा है। 7 अप्रैल को मोहर्रम भी है। लोगों का दिमाग दुरुस्त नहीं रह गया है (वही, पृ. 289)।

आज राजा सहाब के केंद्रीय कैबिनेट से त्यागपत्र देने की बात पत्रों में पढ़कर दुःख हुआ। पता नहीं हमारे देश का क्या होनेवाला है और इंदिरा जी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
क्या करने जा रही हैं।

आज शाम को संभवतः रेडियो से पता चलेगा कि नयी कैबिनेट में कौन लोग लिए गए हैं और उनका क्या नया रूप बना है (वही, पृ. 301-302)।

ग्रामीण अस्पतालों में आज भी अच्छे डॉक्टर और नर्स जाना नहीं चाहते हैं, इस पर पंत जी की टिप्पणी देखिए—हमारे देश की अभी वही दशा है। सामाजिक या राष्ट्रीय आत्मा का लोगों में एकदम अभाव है (वही, पृ. 302)।

नागरिक सुविधाओं की आदत पड़ जाने से लोग गांवों में आने से हिचकिचाते हैं (वही, पृ. 305)। आजकल इंदिरा जी यहां हैं। आनंदभवन कल नेहरू ट्रस्ट को भेंट कर दिया गया (वही, पृ. 306)।

1971 में बंगला देश युद्ध में विजय के बाद देश में चुनाव हुए। राजा दिनेश सिंह जी भी खड़े हुए थे। कुंवर सुरेश सिंह को चुनावों में खूब काम करना पड़ा था। राजा दिनेश सिंह जीत गये थे किंतु कैबिनेट के प्रथम मंत्रिमंडल में नहीं लिए गए थे इस पर पंत जी की टिप्पणी—आगे चलकर शायद किसी और रूप में ले लें। एंबेसेडर बनाकर या एंबेसीज में किसी और मुख्य रूप में या गवर्नर के रूप में इनमें से कई लोग, मैं सोचता हूं लिए जाएंगे (पृ. 307)।

उन्होंने इंदिरा जी की सफलता पर लिखा—चुनाव में इंदिरा जी की विजय आशातीत रही। यह अच्छा ही हुआ कि एक सशक्त केंद्र हो गया जिससे देश की गतिविधियों में स्थायित्व आ सकेगा (वही, पृ. 307)।

1975 में एमर्जेंसी लगी उसके बाद जैसा वातावरण बना उसमें जे. पी. और विनोबा भावे जिस प्रकार एक-दूसरे से दूर जा पड़े उस पर टिप्पणी महत्त्वपूर्ण है। इधर सर्वोदय नेता जी ने एक समस्या खड़ी कर दी है, देखें क्या होता है (12/6/76)। प्रयाग विश्वविद्यालय की परीक्षाएं जुलाई में होने वाली हैं, पता नहीं हो पाएंगी या नहीं। कठिन स्थिति है (वही, पृ. 325)।

इस प्रकार इन पत्रों से पंत के मन के विविध गवाक्षों की झांकी मिलती है। उनकी भाषा के साथ-साथ उनके सोच से भी हम परिचित हो जाते हैं।

संदर्भ

1. पंत जी और कालाकांकार, पृ. 83 (2/7/31)।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंत की रचनाएँ और उनकी रचना-भूमि
कालाकांकर

पंत 1931 से 1940 तक कालाकांकर रहे। कालाकांकर के परिवेश ने उनके रचनाशील मन को गंभीर भाव से प्रभावित किया। वहां वे स्वप्न और कल्पना के धरातल से उतरकर ग्राम्य मुखी चेतना के प्रति समर्पित हुए। कालाकांकर के प्राकृतिक परिवेश ने उन्हें पहाड़ी परिवेश की तुलना में भिन्न संवेदनाएं दीं। 'नक्षत्र' का एकांत वहां का पलाश-वन, बाग-बगीचे, पक्षी, वहां के प्राणी और सबसे बढ़कर नित्य प्रभावित पुण्य तो था गंगा इस कवि के मन को अगणित/बिम्बों/प्रतीकों/शब्दों/प्रेरणाओं से भरती रहीं। पंत ने अपने पत्रों में कालाकांकर और विशेष रूप से अपनी कुटिया 'नक्षत्र' को बड़े भरे शब्दों में याद किया है।

कालाकांकर ने उनकी जिन-जिन रचनाओं में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप ग्रहण किया है इसका उल्लेख पंत ने अपनी काव्य भूमिकाओं में स्पष्ट रूप से किया है। रचना प्रक्रिया और परिवेश का मनोवैज्ञानिक संबंध होता है। कालाकांकर के परिवेश ने पंत की रचनात्मक चेतना को कहां तक उद्वेलित किया इसका अनुशीलन परिवेश और पंत के संबंध को जानने की दृष्टि से उपयोगी है।

पंत ने कालाकांकर की अनुभूतियों को अपने जिन काव्य ग्रंथों में गूंथा है उनका संकेत उन्होंने अपने पत्रों में किया। कालाकांकर निवास काल में पंत जी ने 'गुंज्जन' (18 मार्च, 1932), 'ज्योत्स्ना' (1934), 'युगांत' (1936), 'युगवाणी' (1939) और 'ग्राम्या' (1940) काव्य ग्रंथ का प्रणयन किया जो लोग ऐसा समझते हैं कि पंत ने ग्रामीण जीवन का चित्रण अपने किताबी ज्ञान के आधार पर किया वे शायद उनके कालाकांकर निवास काल से परिचित नहीं हैं। कालाकांकर का परिवेश कैसा था इसका चित्रण कुंवर सुरेश सिंह, पंत की जीवनी कार शांता जोशी और स्वयं पंत जी ने अपनी भूमिकाओं में किया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काव्य सृजन की दृष्टि से जिस प्रकार वे पहाड़ी परिवेश के प्रति कृतज्ञ हैं उसी प्रकार वे कालाकांकर के ग्रामीण परिवेश से भी उपकृत हैं।

कुंवर सुरेश सिंह ने लिखा है–

मेरा ऐसा विश्वास है कि पंत जी भले ही अपनी काव्य पुस्तकों की रचना प्रयाग या और किसी स्थान में रहकर कर लेते, लेकिन उनकी 'ग्राम्या' ग्रामीण जीवन की जिस पृष्ठभूमि पर उतरी है वह कालाकांकर में ही संभव था।

हमारी प्रार्थना को स्वीकार करके जब श्री सुमित्रानंदन पंत ने कालाकांकर में रहना स्वीकार किया तो उन्होंने निवास के लिए गांव की उत्तर की ओर पलाश वन में एक ऊंचे टीले पर बने हुए एक छोटे से बंगले को चुना। वहां एकांत प्राकृतिक शोभा और शांत वातावरण उन्हें चिंतन मनन और काव्य साधना के लिए बहुत उपयुक्त लगा। उस काटेज का नाम उन्होंने 'नक्षत्र' रखा और वे उसमें रहने लगे। आज भी गांव के लोग उसे पंत जी की कुटिया कहते हैं।

पहले मैं अपना मकान उसी पलाशवन में बनवाना चाहता था। भवन निर्माण का कार्य देखने के लिए यह बंगला पहले ही बनवा लिया था जो मकान बन जाने पर मेहमानों के काम आता था। लेकिन, फिर मैंने अपना मकान गंगा-तट पर बनवाया और यह बंगला पलाशवन में बेकार पड़ा रहा। तब कौन जानता था कि इसमें हमारी भाषा का युगांतर कारी कवि दस ग्यारह वर्षों तक काव्य रचना करके इसे इतना प्रसिद्ध बना देगा।

सुरेश सिंह आगे लिखते हैं–इस 'नक्षत्र' में बैठकर पंत जी काव्य-साधना में तल्लीन रहते थे। ऐसा एकांत वास नहीं था कि वे जन-मानस से दूर हो गए हों। प्रतिदिन 'नक्षत्र' के नीचे ही प्रताषहार होकर लोगों का तांता-सा लगा रहता था। नहान तथा अन्य पर्वों में तो नीचे की सड़क यात्रियों से भरी रहती थी, जो 'नक्षत्र' से चींटियों की पंक्ति सी लगती थी।[1]

कालाकांकर को पूरे परिवेश ने पंत जी की रचनाओं में कौन-सा रूप धारण किया, उनके रचनात्मक चित्त ने वहां ग्रहीत अनुभूतियों को किस तरह चित्रित किया इसका अध्ययन विस्तृत और सूक्ष्म प्रयास चाहता है। मेरा अनुशीलन तो यहां रहते समय उन्होंने जिन कृतियों की रचना की है उन्हीं में कालाकांकर के ग्रामीण परिवेश को खोजना है।

परिवेश दो रूपों में प्रतिफलित होता है। एक तो सीधे-सीधे विषय वस्तु और पृष्ठभूमि के रूप में दूसरे उस परिवेश ने रचनाकार के मन में जो शांति, संतुलन उत्पन्न किया है उस चित्र से छनित रचनाओं और विचारों के रूप में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
परिवेश में बाह्य प्रकृति और वहां का जनसमूह भी आ जाता है। कालाकांकर पंत जी की रचनाओं में इन सब रूपों में प्रतिफलित हुआ है।

कालाकांकर के परिवेश को अपने निवास 'नक्षत्र' से पंत किस प्रकार देखते थे इसका चित्रण सुश्री शांति जोशी ने विस्तार से किया है–

'नक्षत्र' के चारों ओर का एकांत, प्राकृतिक शोभा तथा प्रकृति के सहचरों का सहवास पंत के आत्मलीन स्वभाव के अनुकूल था। बरामदे या खिड़कियों से खड़े होकर दूर अंतरिक्ष में दृष्टि जाती गोधूली में स्तब्ध आम्रवन सोया दीखता। पूर्णिमा का चाँद न केवल अपनी संपूर्णता में मुस्करा कर दिन का भ्रम उत्पन्न कर देता। वानृतृण, तरुभी उसके शुभ्र रजत प्रकाश से दीप्त हो उठते। 'नक्षत्र' के चारों ओर ऊपर नीचे सर्वत्र प्रकृति ही थी ताड़ के दो यमज से मनोहर पेड़ आम्र वन, पलाश वन, कटहल, कचनार, अमरूद, नीम आदि के वृक्ष और पास ही गंगा की जलधारा। यह सब प्रकृति ही के तो अलंकार थे। पेड़ों पर चहकते हुए अनेक प्रकार के पक्षी और हरितधरा के ऊपर नीलाकाश की दशन पंक्ति से खिलखिलाते तारे। पंत के प्रकृति प्रेमी मन को विश्राम मिल गया।[2]

पंत ने अपनी जीवनी कार सुश्री शांति जोशी को एक भेंट वार्ता में बताया–सन् 31 से 34 की गर्मियों के पहले तक मैंने वहां 'गुंजन' तथा 'ज्योत्स्ना' नामक अपनी दो कृतियां लिखीं। कालाकांकर प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से अत्यंत मनोरम एकांत ग्राम है। गंगा का किनारा पलाश का वन, एकांत भीटा...घर का सा सहज स्नेहपूर्ण सभी कुछ, वहां मेरे लिए आकर्षक था।... कालाकांकर का नौका विहार पिकनिक, साहित्यिक आयोजन भ्रमण आदि सब मेरे लिए विशेष आकर्षण थे जो एकांत अकेले कक्ष में रात-दिन लिखने-पढ़ने की एकस्वरता के भार को हल्का करने में सहायक होते थे।...कालाकांकर में मुझे इतना एकांत मिला कि वहां अध्ययन मनन-चिंतन रुचि या स्वभाव के अतिरिक्त एक अनिवार्य आवश्यकता भी बन गया। पुस्तकें मैं यदा कदा प्रयाग लखनऊ जाकर मित्रों तथा पुस्तकालयों से बटोर लाता था। और गांव अखंड एकांत में विचारों की तह तक पहुंचने का प्रयास करता था।

कालाकांकर रहते समय पंत के मन में चलने वाला वैचारिक संघर्ष एक प्रकार का संतुलन खोज रहा था। उसमें इस अध्ययन से बड़ी सहायता मिली। उन्होंने शांति जोशी को बताया–वहां मेरे मन की प्रवृत्तियों का संघर्ष भी मेरे भीतर चलता रहता था और मैं अपने में, दर्शन-चिंतन आदि सब प्रकार की सहायता से, एक संतुलित दृष्टिकोण जीवन के प्रति उपलब्ध करना चाहता था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
इस प्रकार की उपलब्धि की खोज के लिए गांधी जी का व्यक्तित्व उनका युग, स्वामी रामकृष्ण परमहंस तथा विवेकानंद के आविर्भाव के कारण होने वाले भारतीय दार्शनिक जागरण की चेतना ही उत्तरदायी थी। एक आत्म संतुलित, ऊर्ध्व, कर्म सक्रिय व्यक्तित्व के अतिरिक्त और किसी प्रकार के जीवन या व्यक्तित्व की कल्पना छोटी-सी एवं हेय लगती थी। अतः 'गुंजन' तथा 'ज्योत्स्ना' के विचार जगत में भी मेरी इस प्रकार की साधना के स्वर परिलक्षित होते हैं।[3]

'गुंजन' कवि की कालाकांकर निवास काल की पहली कृति है। यह कवि का उल्लास गान है। वह जनजीवन को उल्लासित देखना चाहता है और सुख-दुख के सम्मिलित गीत गाता है।[4] 'गुंजन' की अवतरण प्रक्रिया करते हुए पंत ने लिखा है : 'नक्षत्र' जंगल के छोर पर गंगा किनारे ऊंचे भीटे पर बनी एक छोटी-सी काटेज थी, जिसे मैंने अपने रहने के लिए चुना था। कालाकांकर में मुझे मानसिक स्वास्थ्य लाभ हुआ। उन दिनों मेरे मन में जो संघर्ष चल रहा था उसका आभास थोड़ा-बहुत 'गुंजन' की रचनाओं तथा 'ज्योत्स्ना' के रूप में मिलता है। 'गुंजन' में मेरी व्यक्तिगत साधना के प्रगीत हैं–

तप रे मधुर-मधुर मन।
विश्व वेदना में तप प्रतिपल, जगजीवन की ज्वाला में गल?
बन अकलुष उज्ज्वल ओ कोमल, तप के विधुर विधुर मन।

अकलुष, उज्ज्वल और कोमल ये तीन गुण तब मेरे मन में बाइबिल की पवित्रता उपनिषदों के प्रकाश तथा कविता संबंधी कलाप्रेम के प्रतीक रहे। 'गुंजन' में 'सम दुःख सुखे कृत्वा' के द्योतक मेरी आत्म साधना के अनेक छोटे-छोटे प्रगीत हैं, जिनमें मैंने मानसिक द्वंद्वों में संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न किया है। उनमें विश्व जीवन के लिए आत्म त्याग तथा प्रेम का संदेश निहित है। समतल जीवन के व्यक्तिगत संघर्ष से गुंठित न हो कर उसका समाधान विश्व-स्तर पर तथा ऊर्ध्व स्तर पर खोजने की मेरी प्रवृत्ति पहले से ही रही है।[5]

पंत का जो वैचारिक संघर्ष था उसकी अभिव्यक्ति गुंजन में हुई। उस संघर्ष की द्योतक इस संकलन में कई कविताएं हैं। किंतु कुछ कविताएं ऐसी भी हैं जिनमें कालाकांकर के परिवेश का प्रत्यक्ष रूप से चित्रण है। इस प्रकार की रचनाएं 'नौका विहार', 'एकतारा' के अलावा 'गुंजन', 'शांत सरोवर', 'खिलती मधु की नव कलियां', 'गाता खग विहग विहग', 'चाँदनी', 'मानव', 'झर गयी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कली', 'मधुवन', 'जग के उर्वर आँगन में', 'विहग के प्रति', 'चाँदनी' आदि हैं। इनमें एकतारा, नौका बिहार, गुंजन, मधुवन, चाँदनी कविताएं विवेचनीय हैं।

कालाकांकर में पंत जी का जीवन-क्रम किस प्रकार रहता था इसका विवरण कुंवर सुरेश सिंह ने इस प्रकार दिया है—श्री पंत जी जब कालाकांकर में थे तो वे सबेरे की चाय और दिन का भोजन तो नक्षत्र ही में करते थे जो मेरी कोठी के लगभग तीन फलांग की दूरी पर है, लेकिन वे शाम को चाय के समय मेरे पास आ जाते थे और रात का खाना खाकर सोने के लिए नक्षत्र में जाते थे।

जिस समय वे कोई पुस्तक प्रारंभ करते थे, उस समय वे उसमें ऐसा डूब जाते थे कि प्रायः दो-दो चार-चार दिन नक्षत्र में ही बिता देते थे। लेकिन ऐसा कम ही होता था। साधारणतया तो रोज शाम को अपनी उस दिन की लिखी हुई रचना अपने साथ लाते थे और हम लोगों को उसको सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो जाता था।[6]

उन्होंने 'नौका बिहार' कविता का विवरण देते हुए लिखा है—उनकी बहु चर्चित नौका बिहार कविता जिस दिन लिखी गई उस दिन हम लोगों ने सारा दिन और रात नाव पर ही बिताया था। 'एकतारा' भी एक दिन संध्या के समय रात्रि-भर के लिए नौका विहार के समय लिखी गयी। हम लोग संध्याकाल में ही नाव में बैठकर चल पड़े थे और क्षितिज के पास ज्योतिपूर्ण शुक्र को देखकर पंत जी की काव्यकला ने इस सुंदर रचना को जन्म दिया।

इसी प्रकार 'जीवन की चंचल सरिता में फेंकी मैंने मन की जाली' शीर्षक कविता उन्होंने उस दिन लिखी, जब हम लोगों ने एक बार नाव पर घूमते समय जाल से मछलियां पकड़ी थीं। हम लोगों ने मछलियां पकड़ कर साधारण मनोरंजन ही किया था, लेकिन एक युगदृष्टा कवि की पैनी दृष्टि ने उनका दूसरा ही स्वरूप देखा था। एक साधारण व्यक्ति और एक कवि की नजर में यही तो अंतर होता है।[7]

'गुंजन' में संकलित यदि इन रचनाओं के परिवेश प्राकृतिक उपकरणों का विश्लेषण किया जाय तो मेरी बात पुष्ट हो जाएगी। 'नौका विहार' कविता को लिया जाये। इसका पूरा परिवेश कालाकांकर राजभवन और नक्षत्र के पास बहती हुई गंगा का है। चाँदनी रात पंत को बहुत सुंदर लगती थी और फिर शुभ्र तो था गंगा वैसी ही बिछी हुई सिकता राशि-चाँदनी का गंगा में प्रतिबिंब डांडों का चलना, फेन, मुक्ताहार, तारे आदि का उल्लेख सब जैसे सजीव हो उठे हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूरी कविता में 6 बंध हैं पहली में चाँदनी, गंगा और चाँदनी रेत का मिला- जुला वर्णन है, गंगा पर नारी रूप का आरोप है। पंत ने नौका विहार किया था तो कुंवर सुरेश सिंह के साथ उनकी पत्नी प्रकाशवती भी थी और अन्य लोग थी। वे इसीलिए इस कविता में पंत ने 'हम' शब्द का प्रयोग किया है। हम चले नाव लेकर सत्वर। पहले बंध में गंगा/चाँदनी/लहरें/रेत का तटस्थ नाव से चित्र उकेरा गया है। दूसरे बंध में कवि गंगा के बीच से सारा दृश्य देखता है इसमें नाव का धीरे-धीरे चलना, पाल, लंगर, तट दूर छूटते जाना—चलते-चलते कालाकांकर के राजभवन के पास से गुजरना कवि लिखता है—कालाकांकर व राजभवन सोया जल में निश्चित प्रमन।

प्रमन/पलकों में वैभव-स्वप्न सघन। कालाकांकर की गंगा/नौका विहार/तारे/चाँदनी/रजत पुलिन/ रेत आदि को कवि ने किस प्रकार रचना में ढाला है यह नौका विहार देखने से पता चलता है। शुभ्र, दशमी का तिर्थक राशि, चाँदनी का कगार, दूरस्थ तीर, क्षितिज की विटप पंक्ति, द्वीप, पक्षी का उड़ना, लहरें, रश्मियां सबने देखी थी किंतु उनमें मुग्धा का अवगुंठित मुख, चाँदनी का कगार जैसे चाँदनी से ही बना हो, तीर जैसे गंगा का कृश कटि प्रदेश हो जिसे छूने को अधीर हैं तीनों किनारे, क्षितिज की विटप भाल, भूरेखा और विशालाकाश अपलक नयन जैसा कवि को ही दिखाई दिया। अंत में कवि ने नौका विहार को जो वैचारिक रूप दिया है वह उस समय उसके मन में चलने वाले वैचारिक ऊहांपोह का द्योतक है। धारा की शाश्वत गति शास्त्र स्रोत और इधर-उधर चलने वाले अनवरत नौका उतराई को लक्ष्य की कवि को जन्म मृत्यु की तटों पर के बीच चलने वाले जीवन व्यापार की स्मृति हो आती है।

नौका विहार में इतनी जीवंतता आ ही नहीं सकती थी यदि पंत ने वहां नौका विहार न किया होता।

इसी तरह एकतारा का परिवेश है।

'इकतारा' कविता का केंद्रीय सुर विषाद और करुणा मंडित है। इसमें सहज उल्लास नहीं है। इसमें कवि के मन में चलने वाले मंथन से उत्पन्न करुणा की झंकृति है। प्रारंभ से ही सब कुछ लीन होता हुआ, खोता हुआ, डूबाता हुआ, कुम्हलाता हुआ, अंर्तधान होता हुआ दिखाया गया है। एक अंधेरा है निराशा का—अभाव का इसलिए कवि अपनापन खोजता है और पाता है— दुर्लभ रे दुर्लभ अपनापन।

फिर आकांक्षा, चाह का उद्वेलन उसे अशांत किये रहता है। पूरी कविता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
विवेक के प्रकाश और असंग के सुख में समाप्त होती है। इस केंद्रीय विचार को उभारने के लिए कवि ने अपने परिवेश से शब्दावली ही नहीं ली है बल्कि पूरा चित्र ही उससे ले लिया है—ग्रामान्त नीरव प्रशांति में डूबा निखिल वन/खग कूजन/धूलहीन गोपथ धूसर भुजंग की तरह क्षीण रास्ता। भुजंग इसलिए क्योंकि कालाकांकर में बहुत सांप निकलते थे इसका उल्लेख उन्होंने अपने एक पत्र में भी किया। झींगुर का स्वर, लीन होता सांध्य स्वर्णिम गंगा के जल में डूबता सूर्य का बिम्ब, श्यामल तरुवन और पश्चिमी नभ में शुक्र तारा फिर उसकी झलमलाती गंगा में छवि—और उसके कारण कवि के मन में कौंध-कौंध जाती आकांक्षा—अपनापन खोजने की चाह, एकाकीपन का दुःसह बोझ घिरते अंधेरे की तरह—इसका मौन भार एकाकीपन कचोटन कवि को यहां तक कहने को बाध्य करती है कि संसार में अपनापन कितना दुर्लभ है। इस बोध से उत्पन्न आनंद फिर अंधेरा भी कवि को गुंजन की तरह लगने लगता है जैसे भोर की गुंजार हो।

एक और कविता है 'जीवन की चंचल सरिता में फेंकी मैंने मन की जाली'—इस कविता को लिखने की प्रेरणा उस दिन मिली थी जब कुंवर सुरेश सिंह नाव पर मछलियों का शिकार कर रहे थे और वहां पंत जी बैठे हुए थे। कहां मछली फंसाने के लिए जाल फैलाना और कहां मन की जाली द्वारा भावों की मछलियां फंसाना। गुंजन की सुख-दुख की मधुर मिलन से यह जीवन हो परिपूरन—मानव जग में बंट जाय दुख-सुख दो औ सुख दुख से। जग जीवन में है सुख दुख/सुख-दुख में है जग-जीवन/जीवन बोलता लहर-लहर से हँस खेल खेल रे नाविक। कुसुमों के जीवन का पल। हँसता ही जग में देखा, सुंदर विश्वासों ही से बनता रे सुखमय-जीवन, विहग-विहग फिर चहक उठे थे पुंज-पुंज/अथवा जग के दूबर आँगन में बरसो ज्योतिर्मय जीवन। आदि कविता के माध्यम से कवि के दूबर आंगन में उसकी मंगल कामना व्यक्त हुई है।

कालाकांकर निवास काल की दूसरी कृति 'ज्योत्स्ना' है जिसमें कवि ने आंतरिक और वाह्य क्रांति का स्रोत एक ही है इस विचार का रूपक द्वारा प्रतिपादन किया है। उन्होंने इस संदर्भ में लिखा है—'ज्योत्स्ना' में मैंने अपने विश्व-जीवन के स्वप्न को अवतरित करने की चेष्टा की है। उस समय मेरे मन में जो राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा लोकजीवन संबंधी धारणाएं थीं तथा जो मनोवैज्ञानिक आध्यात्मिक आदर्श मुझे आकृष्ट करते थे उन्हें मैंने इस नाट्य रूपक के स्वरूप में उपस्थित करने का प्रयत्न किया है। कल्पना प्रधान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होने के कारण संभवतः 'ज्योत्स्ना' की ओर कम लोगों का ध्यान गया है। वह मेरी तब की सौंदर्य शिल्प की साधना का भी सम्यक् निदर्शन है।

'गुंजन' और 'ज्योत्स्ना' पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने लिखा है कि इनमें मेरे विगत वर्षों की प्रयाग की जीवन साधना ही वास्तव में वाणी पायी है। उनमें कालाकांकर का इतना ही योगदान है कि वहां मुझे उन विचारों तथा भावनाओं को पुस्तक रूप में प्रणयन करने का अवकाश मिल सका।[8]

इस संदर्भ में पंत ने लिखा है कि मेरे साहित्यिक जीवन में भीतरी क्षमता, तत्परता से बाहरी परिस्थितियों से संबंधित बाधाएं तथा कठिनाइयां अधिक रही हैं। जिनके कारण मेरा कृतित्व अधिक पुष्कल नहीं हो सका। 'ज्योत्स्ना' में पंत की मंगलमय दृष्टि का प्रकाश है। वे पृथ्वी को स्वर्ग से बढ़कर समझते हैं—न्यौछावर स्वर्ग इसी भू-पर। देवता यही मानव शोभन जीवन उनके लिए नित्य उत्सव, नित्य वसंत हो गया—जीवन शाश्वत बसंत। अगठित कलि कुसुम वृन्त। वे मानव समानता के गीत गाने लगे—गूंजे जय ध्वनि से आसमान। सब मानव-मानव हैं समान। वे जीवन के आतप में सबको जागने को कहते हैं—जागो, जीवन के आतप में/आओ हिल-मिल खेलें जी भर।

पंत के कवि जीवन का विकास फूलों की सेज पर नहीं हुआ था। उन्हें भी कई प्रकार के संघर्षों से गुजरना पड़ा था। इसका संकेत उन्होंने इस तरह किया है—पिता जी का संरक्षण हट जाने के कारण मुझे अपने को बिलकुल ही भिन्न जीवन परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार करना पड़ा जिनके अनुरूप मन को ढालना श्रम साध्य तथा कठिन प्रतीत हुआ और उन नवीन परिस्थितियों से ऊपर उठने में समय भी लगा। इस बार कालाकांकर में प्रायः दो वर्ष तक रहने के बाद मैं फिर अल्मोड़ा चला गया। वहां मुझे मार्क्स तथा फ्रायड को पढ़ने का विशेष अवसर मिला और अपने भाई से मार्क्स का आर्थिक पक्ष समझने में भी सहायता मिली। (वही, 160)

अपने उस काल के वैचारिक संघर्ष और भावना जगत् को पंत ने युगांत में व्यक्त किया है। मध्यकालीन रूढ़िग्रस्त धारणाओं को बदलने की छटपटाहट भी इस काल की रचनाओं में मिलती है। वे इस समय विश्वासों/विचारों/भावनाओं के कवि अधिक हो गये हैं। युगांत में कालाकांकर का परिवेश अपने भिन्न रूप में ही व्यक्त हुआ है।

कुंवर सुरेश सिंह के अनुसार 'युगांत' में कवि सामंतवाद और पूंजीवाद युगों का अंत स्पष्ट रूप से दिखाता है। उसके दृष्टिकोण में एक परिवर्तन हम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देखते हैं। वह मनुष्य के उदात्त जीवन को प्रकृति की भांति प्रफुल्लित देखना चाहता है। रूढ़िवादिता और प्राचीनता को, मानव समाज में सभ्यता और संस्कृति का भ्रम जाल फैलाकर दासता की ओर ले जाने का आरोप लगा कर उसके विनाश के गीत गाता है।[9] 'द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र' तथा 'गा कोकिल बरसा पाव कण' पंक्तियों में इसी का आह्वान है।

'युगांत' में कालाकांकर की प्रकृति और परिवेश खुले रूप में चित्रित हुआ है जिसकी पूर्ण परिणति 'ग्राम्या' में होती है।

'युगांत' की 13वीं कविता में ग्रामीण परिवेश का जीवंत और यथार्थ चित्र है। इस रेखाचित्र की सहज कला शिल्पी की निपुणता से अधिक करुणा प्रसूत है–

बाँसों का झुरमुट–
संध्या का झुरपुट-
है चहक रहीं चिड़ियाँ–
टी-वी-टी-टुट्-टुट्।

चिड़ियों की टी-वी-टी-टुट्-टुट् के बहाने कवि श्रमजर्जर विधुर चराचर पर स्नेह वेदना सने गीत गाकर मधुर-स्वप्नों की बरसा करना चाहता है। कुछ श्रमजीवी डगमग डग धरते हुए अपने घर का रास्ता नाप रहे हैं। उनके लिए जीवन बोझल है। इसलिए उनके कदम भी बोझीले हैं। कवि सोचता है, क्या मेरे गीतों से इनके जीवन में प्रभात हो सकेगा। कवि दीन, हीन, पीड़ित, निर्बल का जीवन संबल बनना चाहता है। उसे जीवन में इतना दिखाई देता है कि स्वर्णिम किरण भी उसमें खो गई है। उसके काव्य में ये अनुभूतियां कालाकांकर के परिवेश ने दीं।

'युगांत' में कवि अपनी रोमांटिक भावनाएं नहीं भूला है। आज रहने दो 'प्रिय गृह काज' के स्वर में उसने लिखा–मंजरित आम्र वन छाया में। हम प्रिये मिले थे प्रथम बार। ऊपर हरीतिमा नभ गुंजित। नीचे चंद्रासय छना स्फार। तुम मुग्धा थीं। अति भाव प्रवण। उकसे थे अंगियों से उरोज। इस कविता पर कुंवर सुरेश सिंह ने टिप्पणी करते हुए लिखा है–

"श्री पंत जी ने जब यह कविता लिखी तो मैंने इसकी बहुत तारीफ की और कहा–'पंत जी आपने नक्षत्र' के नीचे आम्रवाटिका लगाने का मेरा परिश्रम सफल कर दिया। इस अमर कविता को लिखकर। न इन वृक्षों में आम के टिकोरे आते और न आपको यह उपमा सूझती। बहुत ही सुंदर और जीवंत उपमा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तलाशी आपने। पंत जी मुस्कुराकर रह गये।[10]

'युगांत' की कई अन्य कविताओं में ग्रामीण परिवेश मुखर है—वह विजन चाँदनी की घाटी/छायी मृदुवन तरु गन्ध जहां/नींबू आडू के मुकुलों के। मद से मलयानिल लदा वहां।[11] नीली, पीली औ चटकीली। पैसों की प्रिय पंखड़ियां खोल। प्रियतिली। फूल-सी ही फूली। तुम किस सुख में हो रही डोल।[12]

'बापू के प्रति ताज' तथा 'मानव तुम सबसे सुंदरतम' कविताओं में उसका यथार्थ प्रगतिशील चिंतन व्यक्त हुआ है। ये तीनों वैचारिक दृष्टि से उसके मानसिक परिवर्तन की द्योतक हैं। अपनी इन तीनों कृतियों के बारे में पंत जी ने लिखा है—'गुंजन' और ज्योत्स्ना' में मेरी सौंदर्य कल्पना क्रमशः आत्मकल्याण और विश्व मंगल की भावना को अभिव्यक्त करने के लिए उपादान की तरह प्रयुक्त हुई है।

बाद की रचनाओं में मेरे हृदय का आकर्षण मानव-जगत की ओर अधिक प्रकट होता है। 'ज्योत्स्ना' तक मेरे सौंदर्य बोध की भावना मेरे ऐन्द्रिय हृदय को प्रभावित करती रही है। तब तक मैं भावना से ही जगत् का परिचय प्राप्त करता रहा, उसके बाद मैं बुद्धि से भी संसार को समझने की चेष्टा करने लगा हूं। अपनी भावना की सहज दृष्टि खो बैठने के कारण या उसके दब जाने के कारण मैंने 'युगांत' में लिखा है। यह कहा जा सकता है कि यहां से मेरी काव्य साधना का दूसरा युग आरंभ होता है। जीवन के प्रति एक अंतर्विश्वास मेरी बुद्धि को अज्ञात रूप से परिचालित करने लगा और दिशा भ्रम के क्षणों में प्रकाश स्तंभ का काम देने लगा।[13]

गृह-जीवन के मोह, पारिवारिक जीवन के बंधन तथा स्नेह लम्पोषण से मुक्त, मैं उन दिनों हाड मांस के मनुष्य से अधिक विश्वासों, विचारों और भावनाओं के सम्पुंजन के रूप में जीवित रहने लगा। मेरा मन युग-जीवन की गतिविधि तथा मानव दायित्व एवं पूर्ण मूल्यों के प्रति तब से निरंतर प्रबुद्ध रहा। इसके प्रमाण 'पल्लव' के बाद की मेरी रचनाओं में पग-पग पर मिलते हैं। प्रकृति के मुख से उनका ध्यान मानव मुख की ओर जाने लगा।[14]

'युगवाणी' और 'ग्राम्या' पंत की दो रचनाओं में कालाकांकर का ग्रामीण परिवेश और ग्राम्य श्री अपनी पूर्ण सुंदरता और विश्री के साथ सांस ले रही है। अल्मोड़ा से लौटकर पुनः पंत कालाकांकर आ गये। इस बार का निवास काल उनके लिए अधिक सृजनशील रहा। यहां ग्रामवासियों के साथ रहकर और उनसे घुल-मिलकर उन्होंने जीवन को और उनके सुख-दुख को भली-भांति समझा।[15]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उन्होंने स्वयं लिखा है :

'युगवाणी' तथा 'ग्राम्या' की रचना मेरे कालाकांकर के दूसरे निवासकाल में हुई। सन् 1936 के जाड़ों में मैं फिर कालाकांकर चला गया और तब से सन् 40 तक अधिकतर वहीं रहा। इस युग में ग्राम जीवन के वातावरण तथा रहन-सहन का निरीक्षण परीक्षण मैं अधिक अच्छी तरह कर सका और अपने आर्थिक, राजनैतिक विचारों तथा भावना और कवि-कल्पना की पृष्ठभूमि में उसे ग्रहण कर उसके पुनर्निर्माण की संभावनाओं पर विचार करने लगा। कोमल कंठ से बोलने वाली आम्र मंजरियों से सुनहरी अंग संवारने वाली, असीम शोभामयी गांवों की प्राकृतिक श्री, मौननिरभ्र विस्मय भरे नील आकाश के नीचे अपने मातृ-अंक में युगों के घोर कुरूप जघन्य दारिद्रय को लिए जैसे नतमस्तक बैठी थी।

तीस कोटि संतान नग्न तन, अर्ध क्षुधित, शोभित निरस्मजन
मूढ़ असभ्य अशिक्षित निर्धन—नतमस्तक तरु तल निवासिनी।

गांवों की दुरवस्था से पीड़ित पंत लिखते हैं—कालाकांकर में मेरे सौंदर्य प्रेमी हृदय को गांवों की अत्यंत दयनीय दुरवस्था का दृश्य देखकर अनेक बार कठोर आघात भी लगे हैं और मेरा विचार-जगत् क्षुब्ध तथा विचलित होता रहा है :

सुलभ यहां रे कवि को जग में युग का नहीं सत्यशिव सुंदर।
कंप कंप उठते उसके उर की व्यथा-विमूच्छित वीणा के स्वर।

अथवा

आता मौन प्रभात अकेला, संध्या भरी उदासी,
यहां घूमती दोपहरी में स्वप्नों की छाया सी।
प्रकृति थाम यह तृण-तृण, कण-कण यहां प्रफुल्लित जीवित,
यहां अकेला मानव हीरे, चिर विषण्ण, जीवन-मृत।[16]

कालाकांकर और युगवाणी-ग्राम्या के संदर्भ में उन्होंने अन्यत्र लिखा है—प्रकृति निरीक्षण, अध्ययन तथा ग्राम-जीवन की विपन्नता का विश्लेषण, कालाकांकर के निवास काल के ये मेरे प्रमुख जीवन-अवलम्ब रहे हैं। सन् 36 से 40 तक मैंने अपना अधिकांश समय केवल पठन-पाठन, चिंतन तथा सृजन को ही दिया है।[17] इस काल में कवि बौद्धिक यंत्र मात्र रहा। विश्व-साहित्य, आधुनिक काव्य तथा पूर्व पश्चिम की प्राचीन नवीन विचारधाराओं से वह जितना ग्रहण कर सकता था करने का प्रयास किया है। कालाकांकर के एकांत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अरण्य भीड़ में छिपकर उसने भारतीय संस्कृति में प्रविष्ट अनेकांत विचार सरणियों का भी गंभीर मनन किया और उसे मानव चेतना के भावी नवीन विकास का भी आभास मिला जिसे उसने 'ज्योत्स्ना', 'युगवाणी' तथा 'ग्राम्या' में वाणी दी है। 'युगवाणी' में प्रकृति संबंधी रचनाओं में प्रत्यक्ष रूप से और अप्रत्यक्ष रूप से विचारपूर्ण कविताओं में कालाकांकर का परिवेश व्याप्त है। पंत ने स्वयं लिखा है : पत्ते की मांसल हरियाली को जब कीड़े चाट जाते हैं, उसकी सूक्ष्म स्नायुओं से बनी हुई हथेली का कला-विन्यास जिस प्रकार देखने वालों को आश्चर्यचकित कर देता है उसी प्रकार की मिलती-जुलती हुई सौंदर्य संक्रांति की झांकी आप 'युगवाणी' में भी पायेंगे। तब आप सहज ही 'युगवाणी' के स्वरों में कह उठेंगे।[18]

सदियों से आया मानव जग में यह पतझर।
और,
जीवन वसंत तुम, पतझर बन नित आती।
अपरूप, चतुर्दिक, सुंदरता बरसाती।[19]

'युगवाणी' की 'पुण्यप्रसू' कविता ग्राम्य प्रकृति भी दृष्टि से हमारा ध्यान आकर्षित करती है। इसमें केवल 'गगन' ताकने वालों का ध्यान 'पुण्यप्रसू' धरा के यथार्थ सहज सौंदर्य की ओर आकर्षित किया गया है। देखो भू का। हरित मरित। पल्लवित मर्मरित। कूजित गुंजित कुसुमित भू को। कोमल चंचल/शाद्वल/अंचल/कल कल/छल छल/चल/चल निर्मल/कुसुम खचित मारुत सुरमित/खग कुल कूजित/प्रिय पशु मुखरित आदि।

'दो लड़के', 'गंगा की सांझ', 'गंगा का प्रभात', 'हरीतिमा', 'मधु के स्वप्न', 'प्लाश', 'प्लाश के प्रति', बदली का प्रभात', 'दो मित्र', 'झंझा में नीम', 'ओस के प्रति', 'ओस बिंदु', 'जल्द' कविताओं में कालाकांकर की पृष्ठभूमि का सजीव चित्र उपलब्ध होता है।

विशेषता यह है रोज आंखों देखे इस परिवेश को कवि ने रचना में ढालकर उसे कला की वस्तु बना दिया है और इस काल का उसका वैचारिक संघर्ष या उस युग की दृष्टि अवश्य इन कविताओं के पीछे विद्यमान मिलेगी। यह वैचारिक दृष्टि ही इन कविताओं के सौंदर्य का स्रोत है।

मेरे आंगन में (टीले पर है मेरा घर)[20]
दो छोटे-से लड़के आ जाते हैं अकसर।
नंगे तन गदवदे, सांवले, सहज छबीले,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिट्टी के मट मैले पुतले, पर फुर्तीले।

इनकी नग्न देह कवि को सुंदर लगती है। मनुष्य के नाते इनके प्रति अपनापन उत्पन्न होता है। फिर वह सोचता है यह जगत इन्हीं अस्थि-मांस के जीवों का घर है यहां सूक्ष्म आत्मा का निवास कहां है। क्या मानव मानव एक नहीं हो सकते लोकोत्तर निर्माण के लिए। युगवाणी की हर प्रकृति कविता का अंत इसी तरह किसी न किसी वैचारिक निष्कर्ष में होता है किंतु विचार को जीवंतता इनके पीछे निहित कालाकांकर का परिवेश प्रदान करता है। एक बात और है 'युगवाणी' के प्रकृति-दृश्यों के ऊपर कवि मन की हल्की विषाद रेखा भी छायी हुई है जो उसके इस समय के संघर्ष तथा विषाद की प्रतीक है।

अभी गिरा रवि, ताम्र कलश सा, गंगा के उस पार,
क्लांत, पान्थ, जिह्वा विलोल जल में रक्ताभ प्रसार।
दूर क्षितिज में चित्रित सी उस तरु माला के ऊपर
उड़ती काली विहग पांति रेखा-सी लहरा सुंदर।
उड़ी आ रही हल्की खेवा दो आरोही लेकर
नीचे ठीक, तिर रहा जल में छाया-चित्र मनोहर।[21]

पंत 'नक्षत्र' के बरामदे में बैठकर अथवा खिड़की से गंगा के दृश्य को देखा करते थे। 'गंगा की सांझ' कविता में उसी का तटस्थ चित्र आंका गया है। अंत में कवि कहता है : मधुर प्राकृतिक शोभा यह भरती विषाद है मन में। मानव की जीवित सुंदरता नहीं प्रकृति दर्शन में।

इसी तरह 'गंगा का प्रभात' कविता में—गलित ताम्र भवः भृकुटि मात्र रवि। रहा क्षितिज से देख/गंगा के नभनील निकष पर/पड़ी स्वर्ण की रेख। आर-पार फैले जल में/घुलकर कोमल आलोक/कोमलतम बन निखर रहा लगता जग अखिल अशोक। कवि इस दृश्य को निमेषभाव से देखने लगता है और सरिता जल स्थिर, निश्चल लगने लगता है और वह—बहता हूं मैं, बहते तट। बहते तरु, क्षितिज, अवनि तल। अंत में वही निष्कर्ष—क्षुद्र व्यक्ति को विकसित होकर। बनना अब जन मानव।[22] आम्र विहग आम्र मंजरियों में छिपकर मधुर गीत गाता है उसी तरह कवि भी अपने विचार भावना-कल्पना छंद अपार रचकर नवीन मधु के गीत गाता है।[23]

कवि अपने स्वप्नों को प्रकृति के माध्यम से साकार करना चाहता है—रक्त पलाश। रक्त पलाश।

सखे मुझे दोगे सिंदूर के पुष्पों की ज्वाला का हास?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज उल्लसित धरा, पल्लवित विटपों में बहुवर्ण विकास,
पीपल, नीम, अशोक, आम्र से फूट रहा हरिताभ हुलास,
गीत निरत हैं युवक, नृत्य रत युवती-जन स्मित मुख सविलास।
किंतु, कवि प्रकृति में नहीं जीवन में मधुमास चाहता है।

इस कविता में कवि कचनार रसाल को चित्रित करता है। कचनार से वह बिना पत्रों की पुष्पमरित डाली मांगता है और रसाल से मधुपों से गुंजरित मंजरियों लदी डाल चाहता है।

और 'पलाश' कविता तो प्रकृति सौंदर्य, उल्लास, रूप और वर्ण की चित्रपटी है–

मरकत वन में आज तुम्हारी नव प्रवाल की डाल
जगा रही उर में आकुल आकांक्षाओं की ज्वाला।
पीपल, चिलविल, आम्र नीम की पल्लव श्री सुकुमार–
तुम्हीं उठाये हो, पर वसुधा का मधु-यौवन-पार।
शत-शत पुष्पों की रंगों की रत्नच्छटा पलाश।
प्रकट नहीं कर सकती यह वैभव पुष्कल उल्लास।
स्वर्ण मंजरित आम्र आज औं रजन ताम्र कचनार।
नील कोकिल की पुकार नव, पीत भृंग गुंजार।[24]

झंझा में नील का दृश्य भी सजीव और यथार्थ है। बिना देखे दस तरह का चित्र। संभव नहीं है–

झूम-झूम, झुक-झुककर,
भीम, नीम तरु निर्भर
किहर-सिहर थर् थर् थर्
करता सर् सर्
चरमरा।[25]

'युगवाणी' की कविताओं के संबंध में पंत ने कहा है–ग्राम्या के लिए 'युगवाणी' पृष्ठभूमि का काम करती है।[26] कुंवर सुरेश सिंह ने लिखा है–'ग्राम्या' पंत जी के कालाकांकर प्रवास-काल की अंतिम कृति है। यह अपने युग के जन-साहित्य की अनोखी और बेजोड़ पुस्तक है जिसमें कवि ने ग्राम्य-जीवन का चित्रण बड़ी सजीवता, सरलता तथा स्वाभाविकता से किया है।[27]

'ग्राम्या' कैसे लिखी गयी इसके संस्मरण लिखते हुए कुंवर सुरेश सिंह ने कहा है–मुझे अच्छी तरह याद है कि किस प्रकार 'ग्राम्या' की शुरूआत हुई और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
किस प्रकार वह पूरी हुई। किस प्रकार ऊंचे टीले पर निर्मित अपने नक्षत्र की खिड़की के सामने बैठकर ग्राम्या का कवि नहान के दिन गंगातट की ओर जाते हुए मेले का दृश्य देखकर उसे अपनी अमर वाणी में उतारता जाता था, किस प्रकार चमार, कहार, धोबी तथा अहीरों के लोक नृत्य उसे ग्राम्य जीवन का सजीव चित्र खींचने की प्रेरणा प्रदान करते थे। किस प्रकार 'नक्षत्र' के टीले पर के चिलबिल के पेड़ पर बैठने वाले बाग के खटिक के लड़के उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते थे और किस प्रकार शाम को मेरी कोठी की ओर आते समय रास्ते के पनघट पर एकत्र ग्राम-युवतियों, उनकी भोली दृष्टि को अपनी ओर खींच लेती थी। (पंत जी और कालाकांकर, पृ. 49-50)

उन्माद यौवन से उभर
घटा-सी नव असाढ़ की सुंदर
अति श्याम वरण,
श्लथ, मंद चरण,
इठलाती आती ग्राम युवति,
वह गजगाति
सर्प डगर पर।
सरकाती पट,
खिसकती लट,
शरमाती झट
नव नमित दृष्टि से देख उरोजों के युग घट।
हँसती खलखल
अबला चंचल
ज्यों फूट पड़ा हो स्रोत सरल
भर फेनोज्ज्वल दर्शनों से अधरों के तट।
वह मग में रुक
मानो कुछ झुक
आंचल सम्हालती, फेर नयन मुख
या प्रिय पद की आहट।
आ ग्राम युवक
प्रेमी याचक
जब उसे नकारा है इकटक,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उल्लसित
चकित,
वह लेती मूंद पलक पट।

उस युवती का श्रृंगार का चित्र पंत ने जो खींचा है वह बिना देखे नहीं किया जा सकता। आधुनिक प्रसाधन उसे तब कहां उपलब्ध होते। वह कानों में गुड़हल खोंसकर धवल या रुई, कनेर, लोध पाटल, हरसिंगार से अपने कच संवारती है। मौलसिरी के द्वार गूंथ गायों के साथ वन-विहार करती है। पिक चातक के बोलों का प्रत्युत्तर दे वह कांस, अमलतास, आम्रमौर, सहजल, पलाश से निर्जन में ऋतु श्रृंगार करती है।[28]

ग्राम्या में ग्रामीण परिवेश की प्रधानता उसके शीर्षकों में भी निहित है। पंत ने 'ग्राम्य कवि', 'ग्राम्य', ग्राम दृष्टि, 'ग्रामचित्र', 'ग्राम युवती', 'ग्राम नारी', 'ग्रामवधू', 'ग्राम श्री', 'ग्रामदेवता' कविताओं के शीर्षकों में ग्राम शब्द चुनकर संकलन के 'ग्राम्या' नाम को सार्थक किया है।

'ग्राम कवि' में वह गांव का यथार्थ चित्र खींचता है। यहां न पल्लव वन में मर्मर, यहां न मधुविहंगों में गुंजन/जीवन का संगीत बन रहा यहां अतृप्त हृदय का रोदन। यहां तो धरा का मुख कुरूप है, जन का जीवन गर्हित कुत्सित है। यहाँ दीनता से जर्जर असंख्य जन हैं। उसे तो गांव ग्रामीण जनों की करुण कथा का पृष्ठ दीखता है। 'ग्राम चित्र' में शहर और ग्रामीण जीवन की विसंगतियों का करुणापूर्ण चित्र है।

यहां वनस्पति रहते, रहती खेतों की हरियाली,
यहां फूल है, यहां ओस, कोकिला, आम की डाली।
ये रहते हैं यहां, —और नीला नभ, बोया धरती।
सूरज का चौड़ा प्रकाश, ज्योत्स्ना चुपचाप विचरती।[29]

'गांव के लड़के' में गंवई मटमैले तन, अधफटे, कुचैले लड़कों का चित्र है—

कोई खंडित, कोई कुंठित, कृशबाहु, पसलियों रेखांकित/
टहनी-सी टीनें, बड़ा पेट, टेड़े मेढ़े विकलांग घृणित।[30]

धोबियों का नृत्य', 'कहारों का नृत्य' भी ऐसी ही रचनाएं हैं। पति के घर जाती 'ग्राम बधू' में बड़ा ही करुण चित्रण है। इस कविता को किसी गांवों में ही बैठकर लिखा जा सकता था। पति के घर जाती लड़की से—मां कहती रखना सैसल घर। मौसी, धनि लाना गोदी भर / सखियों, —जाना हमें बिसर मत— जाती ग्राम बधू पति के घर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और 'ग्रामश्री' में तो गांव की हरीतिमा/धरा सब सब साकार हो गये हैं। खेतों में दूर तक हरियाली फैल गयी है—मखमल-सी कोमल रवि की किरणें चांदी-सी उजली जाली के समान जिससे लिपटी हुई हैं। तिनकों के हरे-हरे तन पर हिल हरित रुधिर है रहा झलक/श्यामल भूतल पर झुका हुआ नभ का चिर निर्मल नील फलक। झर रहे ढाक पीपल के दल/हो उठी कोकिला मतवाली/महके कटहल मुकुलित जामुन/जंगल में झरवेरी झूली। फूले आड़ू, नींबू दाड़िम/आलू गोभी, बैंगन मूली।

यही नहीं ऊंची अरहर में लुका-छिपी/खेलती युवतियां मदमाती। चुंबन या प्रेमी युवकों के/श्रम से श्लथ जीवन बहलातीं—चित्र बहुत लंबा है किंतु यथार्थ और सजीव है। जिस प्रकार 'गुंजन' की 'नौका विहार' कविता प्रसिद्ध है इसी तरह 'ग्राम्या' की 'ग्राम-श्री'।

'नहान' कविता में भी गंगा स्नान को आती ग्रामीण जनता की हल चल का चित्र है। 'नक्षत्र' के पास ही 'प्रतापहार' से निकलकर लोग गंगा स्नान को जाते थे—जनपर्व मकर संक्रांति आज/उमड़ा नहान को जन समाज।

गंगा पर सब छोड़ काज।

नारी-नर, बच्चे-जवान भोगी-रोगी, छोटे-बड़े सब गंगा दर्शन के लिए चले आ रहे हैं। इस कविता में स्त्रियों के गहनों का पंत ने बड़ा सजीव वर्णन किया है। गलचुमनी गहना गालों का स्पर्श करता रहता है। इसीलिए उसके ग्रामीण नाम का उपयोग पंत के ग्रामीण अनुभव का सूचक है। यह शब्द उन्हें कुंवर सुरेश सिंह ने बताया था।

'गंगा' कविता भी ग्रामीण परिवेश की दृष्टि से जीवंत है। अब आधा जल निश्चल पीला। आधा जल चंचल औ नीला—गीले तन पर मृदु संध्या तप/सिमटा रेशम पट-सा ढीला। ऐसे सोने के सांझ प्रात/ऐसे चांदी के दिवस रात/ले जाती कहां बहा गंगा। 'युगांत', 'युगवाणी' या 'ग्राम्या' में प्रकृति के चित्र खींचते समय कवि मनुष्य को नहीं भूलता है। गंगा का चित्रण करते हुए वह जन गंगा का संकेत करता है—

यह भौगोलिक गंगा परिचित/जिसके तट पर बहु नगर प्रथित/इस जड़ गंगा से मिली हुई/जन गंगा एक ओर जीवित।

'भारत माता' में कवि कोटि इसी जन गंगा का करुण चित्र सींचता है। भारत माता ग्रामवासिनी/खेतों में फैला है श्यामल। धूल भरा मैला-सा आंचल/गंगा यमुना में आंसू जल/मिट्टी की प्रतिमा उदासिनी।[1] ग्राम्यश्री से कवि इतना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
एकात्म्य हो जाता है कि उसे पूरा देश एक महाग्राम लगने लगता है।

'ग्राम्या' में गंगा की रेत का दृश्य कई कविताओं में खींचा गया है।

बालू के सांपों से अंकित/गंगा की सतरंगी रेती/सुंदर लगती सरपत छायी/तट पर तरबूजों की खेती/अंगुली की कंघी से बगुले/कलंगी संवारते हैं कोई/तिरते जल में सुरखाब, पुलिन पर/भय रोंछी रहती सोयी/डुबकियां लगाते सामुद्रिक/धोती पीली चोंचे धोबिन/उड़ अबाबील, टिटिहरी, बया, चाहर चुगते कदम कृमि तृन।

इसी तरह संध्या के बाद में रेती कैसी लगती है—

धूपछांह के रंग की रेती/अनिल ऊर्मियों से सर्पांकित/नील लहरियों में लोड़ित/पीला जल रजत जलद से बिंबित/

और तरुह का दृश्य—तट पर बगुलों सी - मुद्राएं/विधवाएं जप ध्यान में मगन/मंथर धारा में बहता जिनका अदृश्य गति अंतर-रोदन। यही नहीं गायों/चरवाहों/कृषकों के लौटने का दृश्य—

> लौटे खग/गायें घर लौटीं/लौटे कृषक श्रांत श्लथ डग घर।
> लौट पैंठ से व्यापारी भी/जाते घर उस पार नाव पर/ऊंटों,
> घोड़ों के संग बैठे/खाली बोरों पर, हुक्का भर। जाड़ों की
> सूनी द्वाभा में/झूल रही निशि छाया गहरी। डूब रहे निष्प्रभ
> विषाद में/खेत, बाग, गृह, तरु, तर लहरी।[31]

संध्या के बाद कविता में ग्रामीण परिवेश का बड़ा गहरा और विस्तृत चित्र है। 'खिड़की से' कविता में पंत जी ने 'नक्षत्र' से दिखाई देने वाले दृश्य का चित्रण किया है।

और 'नक्षत्र' में तो उसने अपनी 'कॉटेज' के प्रति एक कविता लिखी है। मेरे निकुंज, नक्षत्र बासा/इस छाया मर्मर के वन में/तू स्वप्न नींद-सा निर्जन में/ है बना प्राण पिक का विलास।[32]

'ग्राम्या' में 'रामराम' हे ग्राम्य देवता यथानाम। तथा 'रामराम' हे ग्राम देवता 'मूर्ति ग्राम' कहकर गांव को नमस्कार भी किया है। उसके बाद वे प्रयाग चले गये। इस संदर्भ में उन्होंने स्वयं लिखा है—सन् 40 के प्रारंभ में 'ग्राम्या' की रचनाओं के समाप्त हो जाने पर मेरे मन को लगा कि अब कालाकांकर में मेरा कार्य समाप्त हो गया है। जब मैंने कालाकांकर में रहने का विचार किया था तब भी मेरे मन ने कहा था कि वहां कुछ ही वर्षों तक रहना संभव हो सकता है।[33] आगे चलकर 'वाणी' (1958) की 'आत्मिका' शीर्षक कविता में कवि ने पुनः

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कालाकांकर के ग्रामीण परिवेश का स्मरण किया है। अपने पूरे जीवन के संस्मरणों को गूंथते हुए कालाकांकर को इन शब्दों में याद किया है—

इसी समय कालाकांकर के, स्नेह द्वार खुल गये अचानक,
शांति वास था मुझे अपेक्षित जीवन का था पंथ गया थक।
गंगातट था, श्यामल वन थे, तरु प्राणों में भरते मर्मर
जल कल-कल, खल कलरव करते, प्रकृति नीड़ था जनपद सुंदर।
टेसू के पावकवन में युग बीता, खग पशु तरु थे सहचर,
मनन-अध्ययन रत रहता मन भीटे पर नक्षत्र था सुघर।
'गुंजन' 'ग्राम्या' का था युग पट, प्रकृति मनोरम, भूजन निर्धन,
सरल हृदय, अति नम्र आचरण, जीवित तुलसीकृत रामायण।

पंत ने इस लंबी कविता में बड़े स्नेह से उन दिनों को याद किया है—

गृह सम्मुख हंसता सूर्योदय मंगल कनक कलश-सा उठकर।
ग्राम्या की 'खिड़की से' दिखते पार्श्व दृश्य सब परिचित सुंदर।

उसके बाद कवि सुरेश दंपति को याद करता है—

मन के राजा थे सुरेश-से सुहृद, शील के स्वच्छ सरोवर,
श्री प्रकाश गृह दीप शिखा थी, दोनों के प्रति उपकृत अंतर।
भाई बहिन सखा मंत्री हम प्रेम डोर में गुंथे परस्पर—
कुंवर स्नेह से देते आदर, उनका घर मेरा ही था घर।

कालाकांकर के नरेश देश भक्त थे, स्वाभिमानी, नम्र, गांधी भक्त और राजमहल—'जल वेणी के बाहुपाश में राजभवन था गंगा तट पर।' पंत लिखते हैं—

मैं कृतज्ञ उस ग्राम राज का जहां कटे सुख के संकट क्षण,
वे मानस मंथन के दिन थे—भरा सुनहली स्मृतियों से मन।

इसमें कोई संदेह नहीं कालाकांकर तथा कुंवर सुरेश सिंह के प्रति वे आजीवन कृतज्ञ बने रहे। यही नहीं अपने महाकाव्य 'लोकायतन' में उन्होंने पुनः कालाकांकर को याद किया है—उन्होंने 8/4/64 के पत्र में लिखा है : कालाकांकर का उसके (लोकायतन) निर्माण में बहुत हाथ रहा है, यह आप लोकायतन में ग्रामश्री का वर्णन ग्राम्या की उन पंक्तियों की याद दिलाता है जो उन्होंने ग्राम के चारों ओर फैले हुए प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर लिखी थीं। पंत जी और कालाकांकर (पृ. 73)।

लोकायतन की 'ग्राम शिविर' तथा अन्य अनेक स्थानों पर कालाकांकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के ग्रामीण परिवेश का कवि ने रचनात्मक उपयोग किया है।

ग्राम शिविर (लोकायतन, पृ. 46 – पंत ग्रंथ.-5) में 'नवलबधू' बैठी खेतों में या हिम ऋतु अब छायी घर-घर। लहराती पीली सरसों/हरी मखमली हरियाली का झूल रहा लहंगा भू छूकर/अधगदराये वन तरुओं पर गंध मत्त मंडलाते अलिदल/क्षितिज नील नयना गांवों की हरी भरी भू हरती जन-मन तथा हरित साड़ी पहने वन-भूमि/ओड़ कोंसों का खेत दुकुल/कुई सरसी वेणी में खोंस/गूंथन वहर सिंगार केहार (वही, पृ. 180)।

अगर कवि ने 10 वर्ष रहकर कालाकांकर के ग्रामीणी परिवेश का अनुभव न किया होता तो उसका काव्य प्रकृति सौंदर्य की चित्रपटी तो बन जाता किंतु पहाड़ी गांवों से भिन्न मैदानी गांवों का सौंदर्य उसकी रचनाओं में न खिल पाता।

अंत में कालाकांकर को पंत की 'ग्राम्या', 'युगवाणी', युगान्त, ज्योत्स्ना और गुंजन की रचना भूमि मानकर यहां तक जो पर्यवेक्षण किया और कुंवर सुरेश सिंह को लिखे पत्रों में पंत के व्यक्तित्व के जिन अनछुये गवाक्षों को उरेहा उसके बाद यदि कुं. सुरेश सिंह की पत्नी प्रश्नावली के जन्मदिन पर उन्हीं पर लिखी कविता की कुछ पंक्तियां न उद्धृत की गयीं, तो पंत के स्नेह संकलित सौंदर्य के मन का परिचय पाया ही नहीं जा सकता।

पंत ने अपने जीवन की रूप रेखा अंकित करते हुए लिखा है–

"कालांकाकर में कुंवर सुरेश सिंह तथा उनकी पत्नी से मुझे परिवार के प्राणी की तरह जो स्नेह सद्भाव मिला उसके लिए कृतज्ञता प्रकट न करना अक्षम्य होगा। श्रीमती सुरेश सिंह के जन्म दिवस के अवसर पर लिखी हुई मेरी कविता उनके प्रति मेरे स्नेह की शुभ स्फटिक गवाक्ष है।"[31]

पंत द्वारा लिखित 'प्रकाश के प्रति' कविता सचमुच में काव्य कला की एक अनुपम कृति है। उसमें पंत के मन के सौंदर्य और उनके स्नेह का सचमुच में पवित्र और उज्ज्वल प्रकाश है–

तुम हो प्रकाश, स्वर्गीय विभा
मानवी मूर्ति घर कर आई
तुम स्नेहोज्ज्वल सौंदर्य-शिखा/चाँदनी तुम्हारी परछाईं।
गोरी सीधी लंबी, तन्वी/उद्ग्रीव हंसिनी सी सुंदर
शोभा ही मैं उठती बढ़ती/चलती तुम लहरी-सी भू पर।

पंत ने प्रकाश को अपनी आभा से धुली हुई स्नेह की उन्मुक्त निर्भर कहा है। इस कविता में पंत ने प्रकाशवती को शाश्वत, सत्य को अपनाने और नश्वर होते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हुए कुछ मधुर क्षण बिताने की सीख दी है।

कुंवर सुरेश सिंह ने लिखा है—उनकी उपस्थिति में मुझे और प्रकाश को बड़ा साहस और बल प्राप्त हुआ और हमारे मार्ग के शूल फूल बन गये।[35] प्रकाश को पंत कितना चाहते हैं यह बात उनके कुछ पत्रों से विदित हो जायेगी—बहुत वर्षों बाद मिसेज सुरेश सिंह के साथ नौकारोहण का प्रिय अवसर मिल सकेगा।[36]

बहुत दिनों के बाद इस बार कालाकांकर आकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। मिसेज सुरेश सिंह अस्वस्थ थीं, उस पर हमारी मेहमानदारी का भार उन पर आ पड़ा। बड़ी ही सहृदय तथा स्नेह-प्राण हैं। इतना सब कुछ झेलने पर भी अभी वैसा ही बनी हुई हैं। मैं उन्हीं के कारण इतने वर्ष कालाकांकर में घर की तरह बिता सका। उनका स्मरण कर मेरा हृदय कृतज्ञता से भर जाता है।[37]

स्नेह की ऐसी अनुभूति जब उनके हृदय में अंकित हो गयी तो पूरा कालाकांकर का परिवेश उनकी रचना भूमि बन गया। इन अनुभूतियों का पंत ने अपनी कविताओं से भरपूर उपयोग किया है।

यहां तक कुंवर सुरेश सिंह के लिखे पत्रों के प्रकाश में पंत के व्यक्तित्व उनकी रुचियों/उनके संघर्षों और विभिन्न समय में वे किस प्रकार कर्म प्रवण रहे इसकी छानबीन की गयी और अंतिम परिच्छेद में यह देखने का प्रयास किया गया कि अपने आवास स्थल कालाकांकर तथा परिवेश का पंत ने अपनी रचनाओं में किस प्रकार उपयोग किया है।

संदर्भ

1. पंत जी और कालाकांकर, पृ. 57/2
2. सुमित्रानंदन पंत, जीवन और साहित्य, पृ. 265
3. सुमित्रानंदन पंत, जीवन और साहित्य, पृ. 265-66 उद्धृत
4. पंत जी और कालाकांकर, पृ. 40
5. पंत ग्रंथावली, भाग 6, पृ. 160
6. वही, पृ. 66
7. वही,
8. वही, पृ. 43
9. वही, पृ. 43
10. वही, पृ. 44

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11. पंत ग्रंथावली, भाग-2, पृ. 18
12. वही, पृ. 3
13. पंत जी और कालाकांकर, पृ. 44
14. पंत ग्रंथावली, भाग 6, पृ. 161
15. पंत जी और कालाकांकर पृ. 44
16. पंत ग्रंथावली, भाग-6, पृ. 162-163
17. वही
18. पंत ग्रंथावली, भाग-2, पृ. 66
19. नक्षत्र
20. पंत ग्रंथावली, भाग-2, पृ. 88
21. वही, पृ. 90
22. वही, पृ. 103
23. वही, पृ. 111
24. वही, पृ. 113
25. पंत जी और कालाकांकर, पृ. 47
26. वही, पृ. 46
27. पंत ग्रंथावली, भाग-2 पृ. 134
28. वही, पृ. 133
29. वही, पृ. 138
30. वही, पृ. 140
31. वही, पृ. 148
32. वही, पृ. 156
33. वही, पृ. 174
34. पंत ग्रंथावली, भाग-6, पृ. 165
35. पंत ग्रंथावली, भाग-6, पृ. 164
36. श्री सुमित्रानंदन पंत : एक स्मृति चित्र, पृ. 29
37. पंत जी के पत्र, पृ. 311
38. वही, पृ. 291

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपसंहार

महाकवि पंत के व्यक्तित्व को उनकी जन्म भूमि कोसानी और अवध क्षेत्र की भूमि कालाकांकर ने गहराई से प्रभावित किया है।

पंत का व्यक्तित्व अन्तर्मुखी अधिक रहा है। वे भावनाओं/प्रवृत्तियों इच्छाओं और विचारों के कवि रहे हैं। कर्म प्रवणता भी उनकी इन्हीं प्रवृत्तियों को साकार करने की रही है। 'पल्लव' लिखने के बाद पंत आत्म संघर्ष के कारण अस्वस्थ हो गये।

उस समय संयोग से उनका पत्र व्यवहार तथा भेंट कुंवर सुरेश सिंह से हो गयी। उन्होंने पंत को अपने यहां रहने का प्रस्ताव किया जिसे पंत जी ने स्वीकार कर लिया।

साहित्यकारों का संरक्षण देने की परंपरा कालाकांकर राजवंश की राजा रामपाल सिंह के समय से ही रही है जो अभी भी अक्षुण्ण रूप से चली आ रही है। महाकवि पंत जी के जीवन में कालाकांकर विकास का रचनात्मक महत्त्व है। पंत पहाड़ी परिवेश के कवि हैं। मैदानी प्रकृति से उनका न के बराबर परिचय रहा है। अगर उन्हें कालाकांकर में रहने की सुविधा न मिलती तो वे ग्रामीण परिवेश का वैसा यथार्थ चित्रण नहीं कर सकते थे।

पंत जी का सुरेश सिंह तथा उनकी पत्नी प्रकाशवती से संबंध गहराता गया। पंत जी उनके परिवार के अंग बन गये। 10 वर्ष उनके पास बिताने के बाद वे प्रयाग चले गये। गर्मियों में वे अल्मोड़ा चले जाते थे। पास न रहने पर उनके बीच में पत्र व्यवहार होता रहता था।

कुंवर सुरेश सिंह के पास अनेक साहित्यकारों के पत्र सुरक्षित थे। उनमें पंत के पत्रों की संख्या सर्वाधिक थी। उन्होंने उन पत्रों का संपादन कर प्रकाशित करवा दिया। इन पत्रों के प्रकाश में पंत जी के व्यक्तित्व का जो अनुशीलन किया गया उससे मैं जिन निष्कर्षों पर पहुंची हूं वे निम्न प्रकार हैं–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंत जी सरल हृदय व्यक्ति थे। उन्हें आर्थिक संकट सदा रहा और कालाकांकर राज्य तथा कुंवर सुरेश सिंह दंपत्ति ने उन्हें सदा आर्थिक सहायता दी। सूक्ष्म और संवेदना के स्तर पर इसका विश्लेषण करने पर इसे सीधे-सीधे आर्थिक सहायता नहीं कहा जा सकता। सुरेश दंपत्ति ने उन्हें यह सहयोग अपने परिवार के एक सदस्य के रूप में दिया और पंत जी इसके प्रति आजीवन कृतज्ञ रहे। लेकिन इससे पंत के आर्थिक स्तर पर संघर्ष का पता चलता है।

पंत जी का जीवन एशो-आराम या विलासिता का जीवन नहीं था। कालाकांकर में वे बहुत सादगी से रहते थे। इनके कारण स्वयं सुरेश दंपत्ति ने सादगी का जीवन बिताना सीखा।

पंत जी ने ग्रामीण परिवेश में घुल-मिलकर भारत के गांवों को बिश्री सारी सुविधाओं से वंचित, मध्यकालीन रूढ़ियों के ध्वंसावशेषों को ढोते देखा। वहां के पलाश, आम्र, गंगा, बच्चों/झोपड़ियों ने उन्हें शब्द ही नहीं काव्य के लिए विषय वस्तु भी दी।

उनके पत्रों से जहां उनके आर्थिक संघर्ष का पता चलता है वहां यह भी प्रकट होता है कि वे किस प्रकार प्रसिद्ध नर्तक उदयशंकर के संस्कृति केंद्र से जुड़कर कलात्मक फिल्मों के द्वारा भारत में नवीन जागरण पैदा करना चाहते थे, यह कि लोकायतन सांस्कृतिक संस्था खोलकर सामाजिक चेतना जगाना चाहते थे यह कि 'रूपाभ' जैसे सांस्कृतिक/साहित्यिक मासिक द्वारा साहित्यिक पत्रकारिता की परंपरा कायम करना चाहते थे।

वे अध्ययन/मनन और ध्यान में निरत रहते हैं। उनमें छल-कपट नाम मात्र को नहीं था।

उनके पत्रों का गद्य भाषा और शैली के नवीन और भिन्न रूप को प्रकट करता है। उनकी समीक्षाओं और निबंधों के गद्य से यह बिल्कुल भिन्न है। इसमें अंग्रेजी शब्दों का मुक्त रूप में प्रयोग है। वाक्य छोटे-छोटे किंतु प्रवाह पूर्ण हैं। पत्रों का गद्य सहज बोलचाल के गद्य के निकट होते हुए एक पाश्चात्य शिक्षा संपन्न अभिजात्य व्यक्ति का गद्य है।

पत्रों से कालाकांकर और सुरेश दंपत्ति से उनके आत्मिक लगाव का पता चलता है। इसी आत्मीयता ने कालाकांकर और ग्रामीण परिवेश को उनकी रचना भूमि में परिवर्तित कर दिया है। मेरा मानना है कि पंत काव्य की पृष्ठभूमि का रचनात्मक दृष्टि से गहराई से अनुशीलन होना चाहिए। इस ओर अभी तक समीक्षकों या शोधार्थियों का ध्यान नहीं गया है। मेरा यह कार्य बौने व्यक्ति द्वारा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
चंद्रमा को पकड़ने जैसा प्रयास है। मेरा यह मानना अवश्य है कि बिना इस प्रयास के पंत काव्य और पंत के कवि को समझा नहीं जा सकता और न उनके साथ न्याय किया जा सकता है। पंत भविष्य के कवि हैं उतने ही जितने वे अपने युग के कवि हैं। वे संभावनाओं के कवि हैं। संघर्ष करता हुआ भारत उन्हीं परिणामों पर पहुंचेगा जो पंत काव्य से निकलते हैं।

पंत के पत्र और इनकी रचनाभूमि के काव्यात्मक उपयोग की दृष्टि से उनकी कालाकांकर निवास काल की अवधि में लिखी गयी रचनाओं का अनुशीलन करते समय मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची कि महाकवि पंत के संपूर्ण पत्र-साहित्य का प्रकाशन अपेक्षित है। बिना उन पत्रों के अनुशीलन से पंत काव्य का पुनर्मूल्यांकन संभव नहीं है।

कुंवर सुरेश सिंह ने उनको लिखे पत्रों का प्रकाशन कराकर हिंदी जगत का उपकार किया है किंतु पंत जी और कालाकांकर में संगृहीत पत्रों का अनुशीलन करते समय एक बात बराबर खटकती रही कि अगर पंत जी के पत्रों के साथ कुंवर सुरेश सिंह के उन पत्रों को भी दे दिया जाता जिनके उत्तर में उन्होंने ये पत्र लिखे तो अच्छा रहता इस अभाव के साथ दूसरी बात पंत जी के पत्रों में उल्लिखित व्यक्तियों/ग्रंथों/स्थानों/घटनाओं पर किसी तरह की टिप्पणियों का न होना है।

जब लेखक ने पंत जी के पत्रों को छपवाने के लिए पं. श्री नारायण चतुर्वेदी से पत्र व्यवहार किया तब उन्होंने सुझाव देते हुए लिखा था : पत्रों के संपादन के बारे में आपने मेरा आशय ठीक समझा है। एक बात और, यदि किसी पत्र में कोई ऐसा वाक्य हो जो व्यर्थ वाद-विवाद उत्पन्न कर सकता हो या जिसका इस समय प्रकाशन अवसरानुकूल न हो, तो उस वाक्य को न देकर उसके स्थान पर डॉटस लगा दिये जाएं। यह मेरा सुझाव मात्र है।[1]

उन्होंने दूसरे पत्र में लिखा—यह जानकर बड़ी प्रसन्नता और संतोष हुआ कि हि. सा. सम्मेलन आपको लिखे पंत जी के पत्रों को पुस्तकाकार प्रकाशित कर रहा है। सम्मेलन द्वारा इस पुस्तक का प्रकाशित होना बहुत उपयुक्त है।

मेरी समझ से आप के नोट्स इसी स्थल पर होने चाहिए जहां स्पष्टीकरण के लिए उनकी अपेक्षा है। सामान्य पाठक के लिए भूमिका में दिये हुए संदर्भों को विशेष स्थल पर कोई बात पढ़ते समय उनका तालमेल बैठाना कठिन हो जाता है। नोट्स का उद्देश्य ही विशेष स्थल का स्पष्टीकरण है। वह वहीं होना चाहिए। भूमिका में उनकी कालाकांकर निवास की पृष्ठभूमि और उसके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
परिणाम से संबंधित बातें होनी चाहिए तथा इन पत्रों के प्रकाशन का उद्देश्य तथा इतिहास।[2]

कुंवर सुरेश सिंह ने अपनी लंबी भूमिका में पत्रों के प्रकाशन का उद्देश्य तथा इतिहास तथ्यों सहित देकर शोधार्थियों का मार्ग सुलभ कर दिया है। किंतु पत्रों के साथ नोट्स न देकर सामान्य पाठक को अंधेरे में छोड़ दिया है। पत्रों में पंत जी ने ऐसे व्यक्तियों और घटनाओं की ओर संकेत किया है जिन पर टिप्पणी न होने से पूरा संदर्भ स्पष्ट नहीं होता है।

इस संदर्भ में डॉ. रामविलास शर्मा द्वारा संपादित निराला की साहित्य साधना खंड 3 का एक अच्छा उदाहरण है जिसमें निराला और जिन्हें पत्र लिखे गए हैं उनके पत्रों/टिप्पणियों को देकर पूरा संदर्भ स्पष्ट किया गया है। पंत के पत्रों के प्रकाशन में भी आगे इसी तरह के प्रयास की आवश्यकता है।

इस छोटे-से शोध कार्य के माध्यम से मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची हूं कि पंत काव्य का उनके पत्रों के संदर्भ में पुनर्मूल्यांकन तथा विवेचन होना चाहिए।

संदर्भ

1. यादों के झरोखे, कुंवर सुरेश सिंह, पृ. 113
2. वही, पृ. 114

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संदर्भ-ग्रंथ सूची

1. चिदंबरा - पंत, राजकमल प्रकाशन
2. रश्मि बैद्य - पंत, राजकमल प्रकाशन
3. सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली, खंड 1 से 7 तक - राजकमल प्रकाशन
4. यादों के झरोखे - कुंवर सुरेश सिंह, प्रभात प्रकाशन
5. पंत जी और कालाकांकर, सुरेश सिंह, हिंदी साहित्य सम्मेलन
6. साहित्य का परिवेश, सं. सच्चिदानंद वात्स्यायन - नेशनल पब्लिशिंग हाउस
7. श्री सुमित्रानंदन पंत - स्मृतिचित्र, राजकमल प्रकाशन
8. सुमित्रानंदन पंत - जीवन और साहित्य भाग-1/2, शांति जोशी - राजकमल प्रकाशन
9. गद्य की सत्ता - रामस्वरूप चतुर्वेदी, मैकमिलन
10. निराला की साहित्य साधना, भाग-3, डॉ. रामविलास शर्मा - राजकमल प्रकाशन
11. बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र - वृंदावनदास साहित्य प्रकाशन, दिल्ली
12. डॉ. वासदेवशरण अग्रवाल के पत्र - वृन्दावनदास, साहित्य प्रकाशन
13. द्विवेदी युग के साहित्यकारों के कुछ पत्र-बैजनाथ सिंह विनोद - हिंदुस्तानी एकेडेमी
14. हिंदी का पत्र-साहित्य - कमल प्रजाणी, कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर
15. पद्म सिंह शर्मा के पत्र-आत्माराम एंड संस, दिल्ली
16. दिवंगत हिंदी सेवी, भाग-1-2, क्षेमचंद सुमन, शकुन प्रकाशन

    नवनीत - मार्च, 88

    सारिका - अप्रैल, 88

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नाम : डॉ. ऋचा द्विवेदी
पिता : डॉ. रामशंकर द्विवेदी
माता : राजेन्द्र कुमारी द्विवेदी
जन्मतिथि : 14.07.78

शिक्षा : बी. एड. पी-एच.डी. महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेल खण्ड विश्वविद्यालय, बरेली उ.प्र.), हिंदी तथा अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर, हिंदी अंग्रेजी तथा बंगला भाषा का ज्ञान।

अनुभव : गौरी शंकर महाविद्यालय, आंवला, बरेली (उ.प्र.) में 1.08.2005 से 28.10.2017 तक अध्यापन पश्चात् महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज में 30.10.17 से अद्यावधि कार्यरत।

प्रकाशन : 1. 'झांसी की रानी' का तुलनात्मक अनुशीलन (महाश्वेता देवी और वृंदावनलाल वर्मा के संदर्भ में), 2. हिंदी निबंध इतिहास और विकास, 3. पंत और कालाकांकर (शोध-प्रबंध), 4. काव्य और संगीत में अंतःसंबंध (शोध - प्रबंध), 5. मुक्तिबोध की कविताओं में संवेदना और शिल्प (शोध - प्रबंध), 6. हरसिंगार की टहनियाँ (कविता-संग्रह), 7. निवेदिता और नारी शिक्षा। सहकार संचय, नवनीत, अक्षरपर्व, सचेतक, समकालीन भारतीय साहित्य, मधुराक्षर, विश्व हिंदी साहित्य, पुस्तक वार्ता आदि पत्र-पत्रिकाओं में कविता, कहानी, साक्षात्कार, यात्रा-वृत्तांत, लेख, चित्र, समीक्षा आदि प्रकाशित। कहानी-संग्रह प्रकाशनाधीन।

रुचि : चित्रकला और यात्रा में विशेष रुचि।

संपर्क : richashastri60@gmail.com

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंत जी के संदर्भ में हिमालय की उपत्यकाओं का उल्लेख बहुत हुआ है, पर पंत जी मैदानी कवि हैं और कालाकांकर से उनके यथेष्ठ कृतित्व का गहरा संबंध है। ...कालाकांकर उत्तर प्रदेश का गंगा तट पर बसा हुआ एक छोटा-सा ग्राम है, जिसे प्रकृति ने सुन्दरता देने में कृपणता नहीं दिखाई। इसे जहाँ दक्षिण और पश्चिम की ओर से गंगा सस्नेह सीने से लगाए हुए है, वहीं हमारे पूर्वजों ने एक नहर उत्तर की ओर से निकाल कर पूर्व की ओर फिर उसी दिशा में गिरा दी है, जिसके कारण वर्षाकाल में यह चारों ओर से गंगाजल से घिर कर एक टापू सा हो जाता है। यह नहर जो शहर पनाह की आवश्यकता पूर्ति के लिए बनाई गई थी काफी गहरी है और उसके दोनों ओर के टीले पलाश वृक्षों से ढँके थे। और वसंत ऋतु के आगमन के समय जब यह पलाश वन अपना पत्रों का वस्त्राभरण गिराकर टेसू के केसरिया फूलों से लद जाता था तो ऐसा लगता था कि जैसे सारे पलाश वन में आग सी लग गई हो।

ISBN 978-81-950683-7-1

9 788195 068371

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant